संयुक्तांक - 111-112

अगस्त/2026

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंतरिक्ष

लोकाचार में नागपूजा पर शोधपरक लेख, यात्रा वृत्तांत में प्रेमशीला शुक्ल के 'गंगा तीर' कथा खंड में दस गो कहानी, कविता खंड में शशि प्रेमदेव, मनोज भावुक आ मिथिलेश गहमरी के गजल (विमर्श सहित) रचना–आलोचना में चन्द्रेश्वर के कव्य आ कृष्णानंद 'कृष्ण' के कहानी पर विशेष

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भडूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6), राकेश कुमार पाण्डेय (गाजीपुर), कनक किशोर (रांची, झारखंड), अरविन्द कुमार द्विवेदी (नई दिल्ली), रीतू सुरेन्दर सिंह (डुमराँव, बक्सर, बिहार), बिम्मी कुँवर सिंह (लखनऊ), उदय नारायण तिवारी (सुन्दरपुर, वाराणसी)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

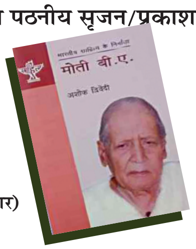

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

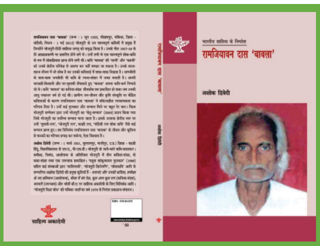

रामजियावन दास 'बावला'
अशोक द्विवेदी

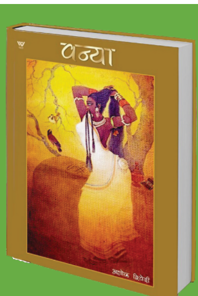

वन्या
अशोक द्विवेदी
(पृष्ठ संख्या-530)
मूल्य-1699/-
पेपरवैक-750
यश पब्लिकेशन
1/11845, पंचशील गार्डन,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032,
संपर्क : 9910391887

भोजपुरी रचना आ आलोचना
(पृष्ठ संख्या-404)
डॉ0 अशोक द्विवेदी
मूल्य-500/-
विजया बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

किताब मिलल....

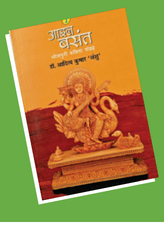

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

संयुक्तांकः 111-112 अगस्त 2026

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

कंपोजिंग
अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह
अँजोरिया डाट काम

आवरण चित्र
अंतरिक्ष

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

सहयोगः
एह अंक के–110/-
सालाना सहयोग-350/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1500/-
आजीवन सदस्य सहयोगः न्यूनतम-3000/-

संपादन-कार्यालयः-

- टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001
- बी–1/906, त्रिदेव अपार्टमेन्ट, वाराणसी–5,
- एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19

मो0– 08707407392, 08004375093

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517 में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- लोक–वार्त्ता–लोकाचार / नागपूजा के लोक परम्परा / 3–5

रम्य रचना –
- मार बढ़नी रे / कनक किशोर / 6–8

ललित–लेख –
- भोजपुरी भाषा में तकिया कलाम / विनय बिहारी सिंह / 9–10

यात्रा–वृत्तान्त –
- गंगा तीर / प्रेमशीला शुक्ल / 12–15

कविता खण्ड–
- अशोक कुमार तिवारी / 8
- सुभाष चन्द्र यादव / 11
- दिनेश पाण्डेय / 61
- अशोक द्विवेदी / 86–87
- गुरुविन्द्र सिंह / 10
- हीरालाल 'हीरा' / 15
- नीरज सिंह / 87

गजल–कड़ी –
- मनोज भावुक / 27–30 / पीठिका–अशोक द्विवेदी
- शशि प्रेमदेव / 31–37 / पीठिका–विष्णुदेव तिवारी
- मिथिलेश गहमरी / 38–41 / पीठिका–शशि प्रेमदेव

कबित–समय –
- शिलीमुख / 88 / कवर पृ0–3

कहानी खण्ड–
- आगा का बा / शारदा पाण्डेय / 16–19
- सुकवा / तुषारकान्त / 20–24
- तीस बरीस / ओम प्रकाश सिंह / 25–26
- सीख जिनिगी के / अरविन्द कुमार सिंह / 42–45
- नवका बगइचा / कमलेश / 46–51
- वापसी / मीनाधर पाठक / 52–56
- कान्ही ना लागब / बिम्मी कुँवर सिंह / 57–61
- चेहरा / आलोक पाण्डेय / 62–66
- ओरहन देत अछरंग / कृष्ण कुमार / 67–72
- किरिपा–निधान / राजगुप्त / 73–74

लघुकथा–
- पानी के सुख दुख / विनोद द्विवेदी / 66

रचनालोचन
- समकालीन भोजपुरी कविता में 'गोहार' / सुनील कुमार पाठक / 75–82
- कृष्णानन्द कृष्ण के कहानी / अशोक द्विवेदी / 83–85

नागपूजा के लोक परम्परा

सभ्यता के सुरुआते से, संसार का हर देस में 'सुरुज' आ 'सर्प' के पूजे आ अराधे के प्रचलन रहल बा। अपना भारत में त वैदिक काल के पहिलहीं से नागपूजा होत आइल बा। साहित्य, कला, संगीत, धर्म आ लोकसंस्कृति कूल्हि में 'नाग' आ उनका 'पूजा' के कवनो ना कवनो रूप (स्पष्ट भा प्रतीकात्मक) मिलिए जाई। भारतीय धर्म-विधान में चाहे आर्य होखे भा अनार्य 'भय' अ 'कल्यान' से मिलल भाव से अनेक नाग-प्रतीकन आ मिथकन के सृष्टि भइल बा। वैदिक काल में 'नाग' के दिव्य शक्ति संपन्न आ कल्यानकारी रूप के चर्चा वा। ऋग्वेद में उल्लेख बा। ओह नाग के नमन; जे पृथ्वी के परिकरमा करेलन, जे आकाश के जोति बाड़न, जल तरंगन में बाड़न, सोना के ढँकले बाड़न'। महाभारत से लगायत पुराणन आ अनेक धार्मिक ग्रन्थन में नागन के दिव्यरूप आ अलौकिक करतूत के जिकिर भइल बा।

सर्वजीववाद के आदिम धर्म-स्तर पर, अनेक कारनन से मनुष्य एह जीव के 'देव. त्व' के भाव दिहलस। एके रहस्यमय प्रतीकन आ मिथकन से जोरलस, आ ए देवरूप के पूजा आचार; ब्रत, उत्सव, कथा-वार्ता आ गीत-गायन में मुखर कइलस। आगे चलि के एकर प्रतीक लोक परंपरा के मान्यता पाके कई कई कथा कहानियन से जुड़ि गइल। नाग आ ओकरा रहस्यमय दिव्य रूप के महातम, लोकजीवन में अइसन समाइल कि ओकर पूजा अरचा होखे लागल। नागपंचमी एगो त्यौहारे हो गइल। नाग शक्ति आ ओकरा महात्म्य के बरनन पुराकथा आ लोककथा में अइसहीं नइखे होत आइल। भारत के विभिन्न अंचलन के पुराकालीन जीवित आ मृत दूनों संस्कृतियन से एकर पुष्टि होले। नाग के अलौकिक आ देवयोनि में मान के ओकर महातम के बखान आर्य संस्कृति में सुभाविक वा। विषुवत रेखा का आसपास घन बरखा आ दुर्गम बन जंगल वाला सघन इलाकन भा मैदानी क्षेत्रन में 'सर्प' जाति के मान्यता मिले का कारन बन क्षेत्र, भा खेतिहर जातियन में 'नाग पुजइया' के प्रचलन भइल होई।

आर्य होखे भा अनार्य, मनुष्य के हर जातियन में साँपन से बाँचे खातिर कुछ ना कुछ उपचार भा उपक्रम; जतन भा बिधि-बिधान बनल होई। बिवश आ लचार भयग्रस्त मानव, संकट से त्राण पावे खातिर एह विशिष्ट जोनि का जीव के पूजा अरचा सुरु कइले होई। बाद में 'अक्षय'-प्राप्ति आ 'कल्याण' का इच्छा से पूजा-परब के रेवाज चलि गइल होई। नागन का प्रति खाली 'याचना' आ भये के बात होखे अइसन नइखे, पाताल लोक के निवासी भइला का नाते उन्हनीं के धरती का उपजाऊ शक्ति (उर्वरा शक्ति) के प्रतीकात्मता प्राप्त भइल होई।

वैदिक-पौराणिक आख्यान आ मंत्रन में नाग आ ओकरा दिव्य शक्ति के बखान भइल बा। अंग्रेज विद्वान मैक्समूलर क कहनाम त ई बा कि बेदन में अनिष्टकारी पशु भा जीव-जन्तुअन क जतना उल्लेख मिलेला ओमें सबसे बेसी ब्यवहार सरपे के बा। संस्कृत का संहितन में गन्धर्व, यक्ष, किन्नरन का साथे सर्पो अर्द्ध-दिब्य वर्ग में आइल बाड़न। ऋग्वेद आ अथर्ववेद में एकर स्तुति चरचा बा बहुत वैदिक 'वृत्र।' (वृत्रासुर) सर्पे क शक्तिशाली रूप रहे। आदिवासी आ पुराकालीन मानब जातियन में फइलल आस्था के कारन रहे कि आर्यो एकरा से प्रभावित भइलन सऽ। सिन्धु घाटी के सभ्यता में 'प्रान्त-अवशेष' ओह काल के नाग पूजा का परंपरा के पुष्टि करेलन स। बौद्ध आ जैन धर्मो

में नाग के पवित्र स्थान मिलल बा। जइसे भगवान श्रीकृष्ण के मथुरा से ले जात खा घनघोर बरखा से बचावे खातिर कवनो नाग अपना फन के छतरी (छत्र) उनका पर तान देले रहे, ओइसहीं भगवान बुद्ध के तपस्या करत खा मुलिचंद नामक नाग, बरखा, घाम, सीत से बचावे खातिर उनका पर फन के छतरी तनले रहे आ ओइसहीं जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के बारे में कहल जाला। पार्श्वनाथ का प्रतिमा पर आजो सर्प के छत्र प्रतिमा अंकित मिलेले।

देश में जवन स्थापत्य कला के प्रमाण मिलेलन सऽ ओमे अर्द्धमानव आ आ अर्द्धनाग के आकृति मिलेले। ईसापूर्व के बनावल नाग के एगो विशाल पत्थर- प्रतिमा आजो दक्षिण भारत के कनाड जिला में मिलि जाई। अजन्ता के गुफा में नागपूजा से संबंधित आकृति मिलेली सन। भारत में अनेक स्थानन पर, नाग देवता के मन्दिर बा जहाँ नियमित पूजा होले। एही तरे अगर संसार के अउर देसन में अउर सभ्यतन में 'नाग' आ ओकरा महातम के उल्लेख मिलेला। मिश्र के ईस्वी सन 2000 पहिले के इतिहास सर्प के देवत्व का परिकल्पना क प्रमान बा। ओह जुग में लोग अपना घर में साँप पाले आ ओकर पूजा करे। मिश्र में 'इजो' नामक नगर के बुद्धि के देवता मानल जात रहे। मेसोपोटामिया आ यूनानों में नाग के शक्ति आ कल्यान के प्रतीक मानल जात रहे। जापान में त ओके बरखा क देवता मान के पूजा करे क रेवाज रहे।

चीन का लोक-संस्कृति में साँप कृषि के देवता मानल जात रहे। चीन का राजधानी बीजिंग में आजो एगो प्रसिद्ध नाग मन्दिर बा। रोमन संस्कृति में नाग के पूजनीय माने क पुष्टि एसे होला कि उहाँ के लोग 'ज्यूस' के पूजा सर्पदेवता के रूप में करत रहल। रोम के हिरा मन्दिर में नागपूजा उत्सव का रूप में कइल जाला। एशिया का लगभग हर देश में चाहें सीरिया होखे या बेबीलोनिया भा तिब्बत, सर्प भा नाग के अलौकिक दैवी रूप प्राप्त बा। अफ्रिका, आस्ट्रेलिया स्वीडन, लिथुवानिया आदि देशन में नागपूजन के परब के रूप में मिलल बा। पड़ोसे के देस नेपाल में आजो नाग देव के बरखा आ कृषि-उपज के देवता मानल जाला। एसे ई बात सिद्ध हो जाता कि 'नाग पूजा' खाली हिन्दुवे धरम मे नइखे बलुक सभत्तर बा। हमन किहाँ पावस में नागपंचमी मनावे के परम्परा बा।

महाराष्ट्र के एगो लोककथा बा, जेमे एगो किसान अपना खेत में हर जोतत खा नागिन के छोट बच्चन के मुवा देलस। नागिन खीसि में ओकरा सगरी परिवार के डँसि लिहलस। ओ किसान के दोसरा गाँव बियहल बेटी के काटे खातिर जब ऊ पहुँचल त ओकरा के नाग का पूजा में लीन देखि के ओकर खीसि बुता गइल। जब लइकी ओकरा आगा दूध का कटोरा धइके हाथ जोरलस त ऊ खुश होके ऊ ओकरा परिवार के लोगन के बीख घींचि के फेरू जिया दिहलस। एह लोककथा क पुष्टि एसे हो जात बा कि नाग-पंचमी का दिने हिन्दू आ अउरी खेतिहर बनवासी जाति आरन हर-फार, कुदार ना निकाले। मिर्जापुर के 'कोल' आ 'बिआर' जाति में इहे मान्यता बा।

प्राचीन लोक आ जन कथन में नाग का जरिये मनुष्य के सहायता के अनेक प्रसंग मिलेला। एमे नायक-नायिका के बिपत्ति में मदद दिहला के बरनन बा। नागराज के निवास सरोवर में बा आ ऊ अकूत धन-संपदा आ वैभव के मालिक बाड़न। उनका लगे कतने रहस्यमय दैवी शक्ति बा। इच्छाधारी, द्रुतगामी, पंखधारी, सर्वशक्ति मान नाग शक्ति का एह रूप के लोग काहें ना पूजी ? उनके खुश करे खातिर काहें ना व्रत, अनुष्ठान करी ? बौद्ध कथा में मन्दिर कई जगहा बिखधर नागन के मानव मन्दिर आ धन के रक्षा करत देखावल बा। लोककथा आ जनुश्रुति का अनुसार नाग कन्या अति रूपवान आ सरबगुन संपन्न होली अचके में भुलात भटकत पहुँचल नायक पर आसक्त होके रीझि जाली। नाग नायक के कठिन परीक्षा लेके फेरू इन्हन के बियाह देला आ हर सुख-दुख में हर तरह के सहायता देला। महाभारत में नागकन्या उलूपी और अर्जुन के प्रणय-विवाह पश्चात् उनके उत्पन्न पुत्र के पाण्डव पक्ष से पराक्रमपूर्ण युद्ध का उल्लेख मिलता है। अंडा नियर आकार के चमकदार आ दिव्य जोति से भरल मणि होला नाग का पास। अगर केहू अइसन मणिधारी का फन पर बइठल खंजन चिरई के देखि लेब, त राजा हो जाई। जन प्रचलित खिस्सा आ कहानियन के रहस भरल रोमानी दुनिया जिज्ञासा आ रहस्य से भरल बा। दूध लावा त ए लोग के अति प्रिय अहार हइये हऽ, बाकि कहीं-कहीं मछरी माँस आ शराबो के चढ़ावा देबे के प्रचलन बा।

लोककथन में खून पिये वाला, हिंसक, मुँह से आगि फेंके वाला, मानव सीर धारी नागनों के बरतन मिलेला। चीन के 'अजदहा' आ ड्रैगन अइसने जीव रहल होई। ई दुर्दान्त नाग फेंड़ से लटकेलन; हवा में उड़ेलन आ अग्नि बीख उगिल के केहू के झउँसि देलन। भोजन खातिर एगो न एगो अदिमी के रोज माँग करे वाला नाग दइतन के चरचा कुछ कहानियन में बा। इन्द्र,

कृष्ण, भीम अर्जुन भा कई गो बीर राजकुमारन का जरिये मराये वाला नाग दइतन के कहानी हम सुनले बानी । महाभारत का 'बन पर्व-अजगर पर्व' में युधिष्ठिर के नाग प्रार्थना बा। 'जातक कथा' आ 'कथा-सरित्सागर' में ई नाग 'आदि मानव' आ दैवी रूप में प्रगट होलन, भगवान बुद्ध का प्रति आदर राखेलन । कहानियन में नाग जातियन के राज आ राजधानियन के बरनन गहिर समुद्र भा गहिर सरोवरन का नीचे बतावल गइलबा । बचपन में गुरुकुल में शिक्षा लेत खा, जब दुर्योधन भीम के विष भरल खीर खियवला के बाद पत्थर में बांध के नदी में फेंक दिहलस, त तलहटी में कुन्तिदेव के राज के नाग उनकर जहर खीच के फेर से जिया दिहलन स आ राजा कुन्तिदेव उनका के दस सहस्र हाथियन के बल प्रदान कइलना। एसे शिद्ध होता कि नाग वंश प्रायः भूमि का नीचे नदी भा तालाब में आपन राज बनावेला । अइसना जगह अचके कवनो बीर नायक के पहुँचल होला आ कल्पना भरल रोमानी कथा रचा जाले । महाभारत में अर्जुन आ नागकन्या उलूपी के प्रणय-विवाह से उत्पन्न पुत्र इरावान के युद्ध कौशल आ वीरता के बखान बा।

कई जाति अइसन बाड़ी सन जेवन अपना के नाग बंश के मानेली सन। छत्रियन का 'बेस' नामक कुल में आदि पूर्वज नाग मानल जालन । उनके पुरूखा राजा साहिवाहन नागपुत्र मानल जालन । एहजाति में साँप भा नाग के ना मारल जाला चाहे ऊ काटिये काहें ना देव ? पोराणिक परपरा में कुछ सवर्ण हिन्दू 'आस्तीक मुनि' का रूप में नागपूजा करेलन । आस्तिक, जरत्कारु के पुत्र आ 'बासुकी' नाग के भैने रहलन । इहे जनमेजय का सर्पजज्ञ से तक्षक' नाग के रक्षा कइले रहलन। कहीं-कहीं नाग परब का अवसर पर सावन शुक्ल चतुर्थी के गंगा स्नान कइ के घर का देवालन पर सेनुर से एकइस रेखा बनावल जाली सन आ पंचोपचार से नाग पूजा कइल जाले ।

कल्यानकारी नागन का बारे में जवन उल्लेख लोककथन में मिलेला ओमे कहीं ऊ हितकारी, आश्रयदाताय; कृपालु आ सहायक चित्रित भइल बाड़न उत्तरी पहाड़ियन में नाग के पूजा त होले बाकि सर्प के रूप में ना । कांगड़ा (पंजाब) में 'नागकोरो' को 'कैलांग नाग' का नाँव से हँसुबा का रूप में पूजेला नाग पूजा के गुजरात में नाग मारल ना जाला ओकरा मारि गइला पर देहि में घीउ लगा के दफना दिहल जाला । जनश्रुति बा कि अगर सर्प, ऋतुमती स्त्री के देख भा छू लेव त आन्हर हो जाला आ उ स्त्रियो बाँझ हो जाली सन भा उन्हनीं के पैदा भइल संतानो ना जियेलिसन। एही से संतानहीन मेहरारू पुत्र पावे खातिर हरेक महीना के शुक्ल पंचमी के दिने नागमूर्ति बना के दूध, जल आ फूल चढ़ा के पूजा ब्रत आ उपवास करेली सन । बँसफोर आ वहेंलिया जाति के लोग धान क लावा आ दूध सर्प का बिल पर चढ़ावेला। हमनी किहाँ इहे परंपरा बा।

क्रूर आ रक्त पियेवाला नाग भा सर्पन के पूजा त लोग डर भा भय से करेला । 'खासी' जाति के लोग अइ. सने भयंकर सर्पदेवता के पूजेला । कहल जाला कि उन्हन्हीं क कवनो बीर पूर्वज कबो कवनो नाग के गर्म लोहा से मुवा दिहलस चार दिसा में फेंकल एगो टुकड़ा जिया जन्तु का खइला से बांचि गइल । एही से 'टलेन्स' नाग के उत्पति भइल । धन संपत्ति आ निधियन के स्वामी, ई सर्प लोककथन में बरनन कइल कथानायकन के कई बेर मदद कइले बा।

नागपंचमी का दिने अधिकांश पूरबी भारत में मेहरारु देवाल पर गोवर से नाग के आकृति बनाके, दूध लावा चढाके भक्तिभाव से पूजा करेलीसन। गाँव के नवहा में अखाड़ा में पंचइयाँ के दिन कुश्ती लड़लस । घर में कचौड़ी आ दलपूरी, खीर-बखीर बनेला । सँपेरा गाँव-गाँव घूमि के नाग देवता के दरसन करावे- लन स । अइसनों जाति बाड़ी सन, जवन धूम-धड़ाका से खाली त्यौहार मनावे ली सन । 'खरवार' लोग अपना पशुअन का सींग पर बेल पोतेला आ नून चटावेला।'बियार' मा 'कोल' लोग ओ दिन हर ना निकाले आ घर का चारुओर चूना से रक्षा चिन्हा लगावेला भा टोटका के रूप में चगोइठेला । एकरा अलावा मिर्जापुर के 'धनगर'भादो में; भांट, कातिक में भा नागपंचमी के पुजइया करेला लोग ।

नाग भा सर्प पूजा के एह भावना का प्रसंग में कवनो ना कवनो अइसन बिशेषता बा, जवन समान रूप में हर जगह पावल जाला । नाग के कबो नेउर (नेवला) आ कबो 'गरूड़ से संबंध जोरल जाला । आदिम धर्म भावना आ प्रतीकन में एके देखल जा सकेला। एह प्रतीकन के दार्शनिक आ लाक्षणिक ब्याख्या विद्वान लोग कइले बा । भा भारत में नाग के ऐतिहासिक, पौराणिक आ दार्शनिक अभिप्राय में अन्तर जरुर मिली, बाकि ओकरा महातम आ पूजा के परंपरा निर्विवाद बा। विष्णु भगवान, त क्षीरसागर में नाग-सेज पर सूतल पावल त देवाधिदेव एही नाग आभूषनन से अलंकृत होलन । गुजरात में ऊ दाऊक बन का नागेष्वर रूप में पूजल जालन।

डॉ0 अशोक द्विवेदी

मार बढ़नी रे

कनक किशोर

बढ़नी हर समाज के बहुउपयोगी आ पारंपरिक जरूरत के समान ह जेकरा बिनु कवनो घर के कल्पनो ना कइल जा सके। सूप आ चलनी भले आपस में लड़े बाकिर का हिम्मत कि बढ़नी से लाग जाए। चलनी से चालल आ सूप से फटकारल चुनींदा दूल्हा खातिर हमनी के संस्कृति में घर के पुरनिया बढ़नी धरेले, गली बहारले।घर, दलान, बथान, खरिहान से लेके मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, विद्यालय, कार्यालय सगरी बढ़नी उपस्थित मिलले। मिले काहे ना कहाँ कचड़ा नइखे?

लोहा सिंह के खदेरन के मदर बढ़नी के नाम के स्टार प्रचारक मिडिया में भले होखस 'मार बढ़नी रे' के डायलाग से बाकिर सुगिया काकी त बाते बात पर कहस कि 'भगले की ना रे नतिया, देखतारे की ना खरहरवा बढ़निया, अबहिये बढ़निवस देब'। ई अलग बात ओह घरी सोशल मिडिया के ना रहे ना त खदेरन के मदर से बेसी भायरल हो गइल रहती आ उनुका देखा देखी हर जनिया बेलन के जगह बढ़निये के हथियार बना के रील बनइती सं। बेलन से टूट - फूट के डर रहेला बाकिर बढ़निया आपन कामो कर जाले तनिका भर दागे नू लागेला पीठ पर जे तोपाइल रहेला कपड़ा से। असहूँ आपन हारल आ मेहरी के मारल केहू से ना कहल जाय आ अब त समइयो ठाढ़ हो गइल बा माथ नीच करि के आ कहत बा ढेर दिन ले पानी भरनी तोहरा इशारा पर अब हम आधी आबादी के पक्ष में बार्नीं। समय उन्हिन के पक्ष में बा आ खेती बधारी रहल ना, दुआरो सून हो चलल बा, जनानी किता में आश्रय मिलल बा त चूल्हा, चउका, झाड़ू, पोंछा ले कबले दूर रहब?

हम त बढ़नी के डरे नारी सत्ता के आदेश स्वीकार करि बढ़नी थाम्हि लेले बानी आ कहब कि बदलल समय के पुकार सुनि रउवो थाम्हि लीं। आपन घर में कवनो काम करे में लाज कइसन? लाठी, डंटा, तरुआर, भाला रहल ना हाथ में, ना रहल जमींदारी, वेतनवा एक तारीख के आवत बा ओकरो पर अधिकार लइकवा के माइये के त कवनो हरज नइखे बढ़नी पकड़े में। चल्हांक मनई समय के रूख पहचानेला, बुरबक में नाम लिखावे आ मेहरी से मार खाए से का फायदा। कहीं बढ़निआवत घरी के रील बना के सोशल मीडिया पर डाल देलस त लोग का कही नइखी जानत बाकिर जानत बानीं कि मुँह देखावे लायक ना रहब। 'समय से पहिले चेते बबुआन, बढ़नी पकड़ि गावे मेहरी के गान' गली से आवत आवाज सुनीं सभे आ निर्णय रउवा हाथ में।

बढ़नी पुराण, बढ़नी गाथा, बढ़नी गीत लिखित से बेसी अलिखित बा। हम ऊ सुनावे नइखीं बइठल आ सुनावे से कुछ ना रउवा फायदा बा ना हमरा। ओह सब में भूत के बाति बा। "बीती ताहीं बिसारिये, आगे के सुधि लीं" ठीके नूं कहल गइल बा। एही से आजु के समइया में झांकल ठीक रही। आज के मरदई देखीं बढ़निये के डरे मरद डरल बिलाई बनी घरे में बकरी जस मेमिआत बाड़े आ बकरी बिलार बनि आँख तड़ेरत घुइरत रहत बाड़ी सं। एगो संघतिया बाड़े, अब नाम जनि पूछब, एक दिन मलकिनी के पीछे से बढ़नी दिखावत रहलें कि मलकिनी कवनो काम से पीछे एकाएक घूम गइली, इयार राम मुँह घुमा बढ़नी से जमीन बहारे लगले। इयार राम

नामी साहित्यकार हवें। एहघरी बढ़नी के गुनगान में कविता संग्रह ले आवे के तइयारी में बाड़े जेकर लोकार्पण दिल्ली में खेजरीवाल के पार्टी के कार्यालय में रखल गइल बा। ओह बइठक में ई बाति उठावे के तइयारी बा कि आजु बहुसंख्यक मरद बढ़नी कला में माहिर बा बाकिर श्रीराम भक्त लोग राम के नाम पर हस्तिनापुर के गद्दी छीन लेलस, ई सरासर बढ़नी विशेषज्ञ के साथ बड़हन साजिश कइल गइल बा। ई आ बढ़नीबाजन बढ़नी के तौहीनी बा।

बढ़नी के राजनीतिकरण आ बढ़नी के बदौलत दिल्ली में बहुमत से सरकार बनइला के बाद बढ़नी अपना के सत्ता के सीढ़ी समझ खूब इतरात बाड़ी। स्वच्छता अभियान आइल त बढ़नी के माँग अउरी बढ़ी गइल। गाँव प्रधान से लेके देश प्रधान बढ़नी चलावल स्टेटस सिंबल के रूप में देखे लागल। मेहरारूयन के त चानी - चानी हो गइल। अब घर में बढ़नी चलावे के प्रशिक्षण के जरूरते ना रहल। एक जने के मुँह से निकल गइल कि ई बढ़नी चलावल तोहार काम ह। अतना सुनते मिश्राइन कहली कि आफिस में त रउवा एह काम में लाज ना लागत रहे, राउर प्रधान मंत्री बड़ा गर्व से फोटो डालत बाड़ें बढ़नी लेके तब घरे रउवा काहे लजात बानीं, गृह मंत्रालय के आदेश के नकारत बानीं। बोलीं रउवा बढ़नी उठाइब कि हम उठाईं? मिश्राइन के आँखि के रंग आ तींत जुबान देखि मिश्र जी के बढ़नी उठावत देरी ना लागल। रउवा ठीक समझनीं हम उहे मिश्र जी के बाति करत बानीं जे प्रधान मंत्री के नामे सुनत निनानबे गो गारी देले आ कहले ससुरा दीया जरववलस, घंटा बजववलस सब कइनीं बाकिर बढ़नी लगवा के त कहीं के ना छोड़लस, गरदन में स्थाई रूप से बढ़नी डाल देलस। बरमाला मिश्र जी के समय कहाँ होत रहे? बाकिर ऊ का जानत रहन बढ़नी माला पहिरे के मिली उहो अधेड़ उमरिया में। मिश्र जी राम के भक्त हवन। बढ़नी पकड़लन, एह खातिर रिसिआस जरूर बाकिर वोटवा देस आपन राम के गुनगान करे वाला पार्टी के आ कहले 'भले बढ़नी लगाइब बाकिर राम लला के पार्टी के जिताइब।''

वोट के राजनीति में एह घरी एगो शब्द अधिका प्रचलन में बा 'स्वीप'। स्वीप बनल बा स्वीपर शब्द से। प्रचंड बहुमत खातिर 'स्वीप' कइल जरूरी होला। सब पार्टी एह खातिर अपना कोर ग्रुप में मंथन करेला। केहू विकास, केहू रोजगार, केहू जातिवाद, केहू क्षेत्रवाद, केहू मजहब - धरम के नाम, केहू बढ़िया दिन, केहू जुमला - वादा, केहू खेला होबो के बल त केहू मलाई बाँटि 'स्वीप' कइल चाहेला । चुनाव एगो जंगे नूं ह। प्यार आ जंग में सबकुछ जायज होला। एह 'स्वीप' के खेला में सब पार्टी शामिल बाड़ी सं त केहू एक दोसरा के विरोध ना करेलन सं। हमाम में सब के सब नंगा। 'स्वीप' के डरे संसद आ विधानसभा में 'व्हीप' के प्रावधान कइल गइल। दल बदलू विधेयक आइल। बाकिर आजुवो भजनलाल जिंदा बाड़े आ कुर्सी खातिर राते रात स्वीप कर जा ताड़े आ विधेयक कागज में पड़ल रह जात बा। रउवा सभे जानत बानीं बढ़नी कई तरह के होले जइसे-ताड़ के, नारियल के, फूल के, प्लास्टिक के, घास के, हराठी के आ ना जाने कई तरह के। एह घरी त बड़-बड़ मशीनो आ गइल बा बहारे खातिर। ई सब उपकरण घर, बधार, रोड साफ करे में त सक्षम बा बाकिर वोट स्वीप करे में ना। कुर्सी बहुत कुछ सीखा देला। आपन बुद्धि ना रहे त बुद्धिवाला किना जाला। मातहत खरीदा जाला। ना माने त डेरावलो जाला। ढेर कानून पढ़ेला त फेंका जाला। इहे सब ताकत मिलीके 'डिजिटल स्वीपर' के निर्माण कइले बा। कादो नामो दिआइल बा, इयाद नइखे आवत। बाकिर सचमुच गजबे नूं वोट स्वीप करत बा। मार बढ़नी रे एह स्वीपरवा के बढ़नी के जाति बिगाड़ देलस, नाम बदनाम कर देलस। लोक में केहू, मशीनवा मे केहू। बाप रे बाप अबहीं ई हाल बा ना जाने ए आई, रोबटवा आई त का गूल खिलाई। ई देख हम सचेत करब कि सावधान रहब कहीं डिजिटल गणना में राउर आ परिवार के नामे जनि बढ़निया द सं। अपने देश में आपन नाम खोजत रहब, परिचय बतावत रहब बाकिर केहू ना सुनी। डिजिटल स्वीपर केकरो ना सुने काहे कि अपना आका जस आन्हर आ बहीर ह।

सफाई सगरी जरूरी बा काहे कि कचड़ा के अंबार लागल बा। एकरा खातिर प्रमाण के जरूरत नइखे। जहाँ झाँकब ओहिजे कचड़ा। हाल फिलहाल कहकरोच के बढ़ल संख्या कचड़ा के उग आइल पहाड़े के नूं प्रतिफल ह। सत्ता में, प्रशासन में, कार्यालय में, पंचायत में कचड़ा के भरमार बा। खेजरीवाल के बढ़नी कामे ना आइल सफाई में, मन्ना गन्ना चूसे चल गइले, मन सुराज चारों खाने चित, लोकपाल खुद आरोपित ई देखि साहित्य के दुआरे गइनी कि साफ सुथरा माहौल मिली, धन ना त जस मिली। सुनींला कि मरलो के बात जीए के गुंजाइश भेंटाला ओहिजा। मन में रहे कि बढ़नी से पीछा छुटी। बाकिर मार बढ़नी रे एहिजा त सभके हाथे बढ़नी बा कचड़ा साफ करे खातिर ना साथी साहित्यकार के बढ़निआवे खातिर। अकेले ना सपरे त चेला - चाटी कहिया कामे अइहें। बढ़नी कहिया कामे

आई, जूता कहिया कामे आई, टमाटर सस्ताइल बा कहिया कामे आई। इशारा काफी रहे बढ़नी आ जूता के माला पहिरा, टमाटर से अइसन हाल भइल कि केहू त छोड़ीं मेहरारूओ ना चिन्हत रही। लोग बाग कहल कि उहें के हईं त कहली- मार बढ़नी रे साहित्यकार बने चलल रहन, अपना मुँहे त कारिख लगइबे कइलन, हमरो के मोहल्ला में जियल मुश्किल कर देलन। कहत रहीं कि सेवानिवृत हो गइनी, घरे रहिके दाल-रोटी खाईं आ प्रभु के गुन गाईं। समय बांचे त बढ़नी लेके घर-दुआर बहारीं। बाकी मार बढ़नी रे इहाँ के त साहित्यकार बने के भूत चढ़ल रहे जे अतनो दुरगति पर अबहीं ले ना उतरल।सपनो साहित्यांगन में बढ़नी लगावे आ सफाई मंत्री बने के देखले।

सफाई में आजु सभे लागल बा बाकिर आपन सफाई केहू नइखे कइल चाहत। आपन-आपन सफाई सभे क लिहित त का जरूरत रहे दोसरा के सफाई खातिर बढ़नी पकड़े के। आजु समय एतना एडवांस आ गइल कि बिना बढ़नी हाथ में लिहले केहू कोषागार, केहू जंगल - जमीन, केहू नदी - पहाड़ त केहू सरकारी अभिलेख साफ कर देत बा। एकाउंट केकरो साफ कर देत बा केहू बिना बढ़नी के।केहू हाथ में बढ़नी ले मेहनत से बहारतो बा त स्वीपर कहि दुतकारल जात बा। देश में बढ़नी के खेल देखत अंत में इहे कहब कि-

गोजी छोड़ि के धइनीं बढ़नी, खुश ना तबहूँ भइली घरनी
बढ़नी बल पर सत्ता पवलें,ले डूबल उनकर सब करनी
लोकपाल बढ़नी के रूप ह,बाकी कुछ न करनी धरनी
मार बढ़नी रे नेतवन के जे,सूप, चलनी राखेला बढ़नी।

❑ राँची (झारखंड) चलभाष - **927920040**

गज़ल

✍ **अशोक कुमार तिवारी**

जहाँ बा पाप के पहरा।
उहाँ उठबे करी लहरा।

जहाँ अपनन में चुप्पी बा।
उहाँ कुछ राज बा गहरा।

गड़ेले बात जब कबहूँ।
जरे दिन में अगिन अहरा।

रहल बा बात अब बसके।
गइल औकात से बहरा।

नफा-नुकसान हऽ उनकर।
पड़ल बा फेर बा तहरा।

हम सिरजेनी, तू धोवेलऽ।
हम मुसकानी, तू रोवेलऽ।।

चोरी में जदि हइये नइखऽ।
तब दाढ़ी कांहे टोवेलऽ।।

अनका कऽ फेरा में पड़के।
बेमतलब इज्जत खोवेलऽ।।

हम जाँगर तूरीं रातो-दिन।
तूँ गाफिल होके सोवेलऽ।।

खाइल-पहिनल केहू क देख।
कांहे अधीर तू होवेलऽ।।

❑ सूर्यभानपुर, बलिया

भोजपुरी भाषा में तकिया कलाम

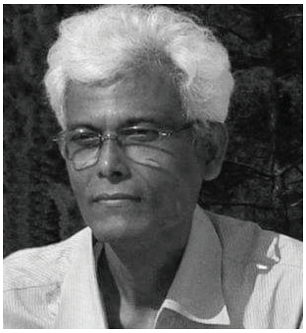

✍ विनय बिहारी सिंह

अउरी कौनो भासा के बोली में बिराम (पाज) खातिर कौनो शब्द बा कि ना, ई खोजे के परी बाकिर भोजपुरी में बा- “अथी” भा “एथुआ” भा “एथू”. उदाहरन वाक्य- “खाना में दाल, भात तरकारी चटनी आ सलाद रहुए आ अथी रहुए...एं.. रायता रहुए। “ई” अथी” कहि के आदमी सोचे के समय ले लेला. बात सुने वाला “अथी” सुनते बुझि जाला कि सामने वाला आदमी भुलाइल शब्द मन पारता। “अथी” भा “एथुआ” भा “एथू” धैर्य राखे के सीख देबे वाला शब्द हउवन स। एही से कहाला कि भोजपुरी के दर्जा बिसेस बा। अब आगा बढ़ीं जा। कुछ लोगन के तकिया कलाम बोले के आदत होला। तकिया कलाम माने सूत्र शब्द, जौना के अंग्रेजी में कैचफ्रेज (Catchphrase) कहल जाला, जइसे- “जे बा से कि”। कुछ लोग बतियवला के क्रम में हर दू- तीन वाक्य का बाद “जे बा से कि” तकिया कलाम बोलत रहेला।

त तकिया कलाम के परिभाषा भइल- अइसन वाक्य जौन कौनो व्यक्ति टेक लगावे खातिर बार- बार प्रयोग करता, आ जौना के कौनो माने मतलब नइखे। लोगो जानेला कि ई फलाना आदमी के बतियावे के तरीका ह। लोकप्रिय तकिया कलाम में “ठीक कहतानी कि ना?”, “गलती कहतानी?” आ “बा कि ना?” के शामिल कइल जा सकेला। कई लोगन खातिर तकिया कलाम पूरक वाक्य होला। बिना ओकरा के बोलले ओह आदमी के संतोसे ना मिलेला।

कुछ लोगन के तकिया कलाम ”हई देखीं“ होला. कौनो बात कहे के पहिले भा कौनो वाक्य बोले के पहिले “हई देखीं” बोल देला। अब जे ओह आदमी के बोले के स्टाइल नइखे जानत ऊ “हई देखीं” सुनते बिसेस रूप से उनकर बात पर ध्यान देबे लागी। बाकिर जे उनकर स्टाइल जानता ओकरा कौनो फरक ना परी। एहीतरे कुछ लोग तकिया कलाम के रूप में “माने” बोलेला। उदाहरण- “हम मंदिर में पूजा करे जात रहुईं, माने हमरा हाथ में फुलडाली रहुए” अब एइजा मंदिर गइला के अर्थ फुलडाली नइखे। “माने” शब्द अइसन आदमी कहीं बोल देला, काहें से कि ई शब्द ओकर तकिया कलाम ह। “ई बढ़िया समोसा बा, माने अइसन समोसा अउरू कौनो दोकान पर ना मिले।” एहीतरे कुछ लोग- “अब का कहीं” के तकिया कलाम बना लेला। मरद होखे भा मेहरारू कुछ लोगन में हर बतिए में- “आरे भगवान!” कहे के भी आदत होला। कई लोगन के कहनाम बा कि ई कुल तकिया कलाम भाषा आ बोली के अउरी चुंबकीय बना देला। एहीतरे “अरे मोरी दइया” भा “का कहीं” भी तकिया कलाम होला। कुछ लोगन के तकिया कलाम “हई ल।” कौनो घटना के सुनते ऊ आदमी “हई ल” बोल देला। ओकरा बाद आपन प्रतिक्रिया देला। त कुछ लोगन के “दुर” त केहू के “अब का करीं” तकिया कलाम होला। के कौन तकिया कलाम पकड़ ली, कहल ना जा सकेला। आपन-आपन रुचि बा।

केहू के जदि चौतन्य करे के बा त ओकरा प्रति “अरे मरदे” के संबोधन कइल जाला। जइसे- “अरे मरदे, गमछा पहिर के बाजारे जाइल जाला, तनी ढंग से कपड़ा पहिर... “भा” अरे मरदे, कइसे तीर्थ करे चल जाईं, पाकिट में पइसा चाहीं....“अब केहू कहि सकेला

कि ई कुल निरर्थक शब्द हउवन सन, बाकिर गौर से देखीं त इहे भाषा आ बोली के सौंदर्य भी बा। तकिया कलाम बोली के विविधता के द्योतक भी बा। अंग्रेजियो में तकिया कलाम होला, कैचफ्रेज होला। जइसे- "वीसियस सर्किल" (दुष्चक्र), चीप थ्रिल्स (सस्ता रोमांच)। त खाली भोजपुरिए में तकिया कलाम नइखे, अउरियो कुल भाषा में बा। बाकिर भोजपुरी के बातिए कुछ दोसर बा। अब बात करते हुए रउरा से केहू तकिया कलाम बोल देउ कि "बा कि ना?"

त जदि कौनो ढेर आपत्तिजनक बात नइखे त रउरा नाहिंयो चाहब त "हं" बोले के परी। एहीतरे केहू तकिया कलाम बोल देउ कि "गलती कहतानी?" त रउरा ना में मुड़ी हिलावहीं के परी। बाकिर एइजा एगो रोचक बात बा। जब केहू बार- बार "गलती कहतानी?" कहे लागेला त बात सुने वाला आदमी चुपचाप सुनत रहेला। हं भा ना कुछु ना बोले। सामने वाला आदमी बतियावत जाता आ बोलत जाता कि "गलती कहतानी?" आ रउरा बिना कौनो कमेंट के चुपचाप बानी। त सामने वाला आदमी आपन बात आगा बढ़ा दी। ऊ एकर परवाह ना करी कि रउरा हूं कहनी कि ना कहनी। ओकरा बात कहला से मतलब बा।

अच्छा एगो अउरी बात बा। दू गो हित-नात, दोस्त भा बहुते नजदीकी आदमी ढेर दिन पर भेंटाला त ओह लोगन के बीच एगो टेंपरोरी तकिया कलाम आ जाला- "अउरी कुल सुनाईं"। ई बात बार- बार एक आदमी दोसरका से कहेला। सब केहू ना, त कुछ लोग त जरूरे कहेला। अब बार- बार केहू कहे कि "अउरी कुल सुनाईं" त ओकरा से बतियावे वाला आदमी केतना अउरी कुल सुनाई? आ लेहाज में ईहो ना कहि सकेला कि आरे महाराज केतना सुनाईं। कुल बात त कहिए दिहनीं। ना, ऊ ई बात चाहि के भी ना कहि सकेला। ओइजा मर्यादा आके खड़ा हो जाई। अंत में एगो अउरी तकिया कलाम सुन लीं- "अउरी कुल ठीक बा नू?" ईहे बात जदि रउरा से केहू आत्मीय आदमी बार-बार पूछे लागी तबो रउरा ओकरा के ना टोक सकेनी। हर बार रउरा "हं" कहे के परी। त तकिया कलाम के महिमा अपरंपार बा। एकरा पर गौर कइला पर आनंद आवेला। काहें से कि ई भाषा आ बोली के जान ह। एकरा से सचहीं चुंबकत्व पैदा होला।

कविता

✍ **गुरुविन्द्र सिंह**

साँच बेदीन बेकदर बाटे!
झूठ चढ़बाँक आ मुखर बाटे।।

गाँव गइला प' गाँव ना लउके
ओके घोंटले सजी शहर बाटे।।

चूकि जा' मोका पर केहू कइसे
मुफ्त का माल के लहर बाटे।।

बाटे भउजी बनल मेहरि, सभकर
मर्द जेकर बहुत अबर बाटे।।

अपना आँखी क ढेंढ़ ना लउके
आन का फुल्ली प' नजर बाटे।।

❑ ई-67 ए, गली नं० 6, ब्लाक-ई,
कुतुब बिहार गोयल डेयरी, नई दिल्ली

सुभाष चन्द्र यादव

(एक) हमार भोजपुरी

हमार भोजपुरी ह माथे के रोरी।
सुन्दर सरस मधुर अति कोमल,
सीतल जइसे कुइयाँ के जल,
बोली लागे मन में केहू,
देला मिसरी घोरी।।

भाषा भाव छन्द मन मोहे,
सुर लय ताल अंग में सोहे,
करि सिंगार खाड़ चउकठ पर,
जइसे गाँव के गोरी।।

घर-घर होखे संझा पराती,
तुलसी चउरा दियना बाती,
बिरहा ठनके सीवाने में,
अवर पलानी में होरी।।

चम-चम चमके रात अँजोरिया,
रसे-रसे पलना खींचे गोरिया,
हमरी लाल के आऊ निनरिया,
मधुरे गावें लोरी।।

माथे पगरी कान्हें चदरिया,
दाबत राह मरद भोजपुरिया,
बात-बात में मोछिया अईंठे,
बहियाँ देत मरोरी।।
हमार भोजपुरी ...

आईं भाई बहिना आईं,
भोजपुरी के पढीं पढ़ाईं,
माई के बोली ना बिसरे,
बिनती बा कर जोरी।।
सुभाष कहें कर जोरी।।
हमार भोजपुरी ...

(दू) बदरा

कहिया से हो गइलऽ एतना गुमानी।
करेलऽ काहें ए बदरा तू मनमानी।।

तोहसे जिनिगिया के जनमें के नाता,
लागता ई बतिया ना तोहरा बुझाता,
कइसे भुला गइलऽ बतिया पुरानी।।

तोहरे भरोसे फसलिया लगाके,
केतने सपनवाँ नयन में सजा के,
तोहके निहारे लें सगरो परानी।।

जरेले धरतिया आ तपेला गगनवाँ,
बरसेले अँखिया ना बरिसे सवनवाँ,
निरमोही कइसे कहालऽ तू दानी।।

चिरई चुरुंग सब जल बिनु तरसे,
काहें नाहीं पनिया बदरवा से बरिसे,
भूखिया रोकाई पियसिया ना मानी।।

तनिको दरदिया जो जनितऽ हिया के,
रखितऽ जिनिगिया तू पनिया पिया के,
करितऽ ना कबहीं तू एतना नादानी।।

कतहीं सुखार बाटे कतहीं दहाता,
दूनू ओर दुखवा ना सहले सहाता,
का तोहरी मनवाँ में बाटे ना जानी।।

देसा देसी घूमि के जरावऽ जनि जियरा,
देखऽ तनि हलिया सुभाष आके नियरा,
सरमें से हो जइब तू पानी पानी।।

मकान सं०-1743 ए अशोक नगर, संस्कृति पब्लिक स्कूल
के सामने, रानीडीहा, गोरखपुर-273010

यात्रा वृत्तांत
गंगा तीर

✍ प्रेमशीला शुक्ल

तीर के दू माने ह बाण आ नदी के किनारा-कवनो नदी के- गंगा के, जमुना के, सरजू के। बाकी हमरा गाँवे जमुनातीर, सरजूतीर अइसन शब्द नइखे, गंगातीर बा। गंगातीर माने बलिया शहर से गुजरे वाली गंगा नदी के किनारा, जहाँ ददरी के मेला लागेला, कातिक की पूरनवासी के नहान लागेला। हमरा गाँव से **4** कि०मी० पर दरौली में सरजू जी बाड़ी। हर अतवार के सब इहाँ नहाए जाला बाकी कातिक के पूरनवासी के सरजू जी के पार क के गंगाजी नहाए जाइल जाला। लरिकाईं एही गंगातीर के यात्रा हमार पहिल यात्रा ह।

इ यात्रा आज तक हमरा मन में बसल बा। देस घूमनी, परदेस घूमनी बाकी ए यात्रा के रंग आज ले ना उतरल। गंगाजी में हमार अगाध श्रद्धा ह। बुझाला इ साक्षात देवी हई। माई अइसन ममता से भरल हई, सबकर सुनेली। देहिये के नाहीं मनवो के मइल धोवेली। इनकी बहाव अइसन कवनो नदी के बहाव नइखे- संतुलित, सुन्दर। चान-सुरुज जब गंगा जी में नहाए आवेलें त ओइ लोगन के शोभा बढ़ि जाला। गंगातीर के यात्रा हमरे खातिर बहुत महत्व के ह। इहे यात्रा हमके अंखि बनवलस। हम दुनिया के समाज के देखे के सीखलस। एकरे माध्यम से हम जान पवनी कि हमरे समाज के रीति-रिवाज कइसन बा। बेटी के कइसे बाप के जांध पवित्तर करेले आ कइसे पूजा के पीढा के लिहला के रिवाज बदल जाला।

साल में दू नहान बड़हन ह- कातिक के पूरनवासी के आ माघ के अमावसा के। दूनू नहान में गंगाजी के विशेष महतव ह। गंगाजी ना मिले त कवनो नदी में नहाए के चाहीं। माघ की अमावसा के प्रयागराज में बहेवाली त्रिवेणी जी- गंगा, जमुना, सरस्वती के संगम स्थल- के महत्व ह आ जो कुंभ लागता तब। त नहान में दुनिया जहान जुटि जाइ। कातिक की पूरनवासी के नहान के तइयारी कातिक चढ़ते शुरू हो जाला। चाउर, आटा, दाल, चिउरा, पूजा, सतुवा- अपना अपना रुचि आ बेंवत का हसाब से झोरा-झोरी में धराए लागेला। हरदी-मसाला के धइली सिआए लागेला, अपना के नया-नया कपड़ा बने लागेला। जवना समय के बात हम बतावतानी हम 7-8 साल के रहनीं। नहान के तइयारी देखि के आ कि घूमले का शौक से हमरो मन में आइल कि हमहूँ नहाए जाइबि। हम माई लगे पहुँचनी। माई फगुवा दिया-दियारी में आदमी जन के हर साल दिआए वाला कपड़ा सइहारत रहली। नहाए जाए वाला आदमी-जन के एक-एक जोड़ा अधिका दिआए के रहे। एही देखभाल में माई बाझल रहली। अपनी लगे हमके खड़ा देखि के कहली, “इहाँ मति आव, बहुत काम में बानीं, बाद में अइह।” हमरा एतना अगोरले के धीरज ना रहे। हम इया लगे गइनीं, “इया हमहूँ नहाए चलब।” इया का मन में बात उतरल ना। हम दोहरा के कहनीं। “ना, ना, ना, छोट बाड़ू। बड़ी दूर बा। थकि जइबू, बेमार पड़ जइबू। तू मत चल। नाम मत ल।” इया तुरते कहली। केतनो चिरउरी करीं। इया मानें नाहीं।
इया घर भर के बता अइली। साथे-साथे इहो समुझा अइली कि छोट बा,। बेमार पड़ि जाइ। हमरा केहू से कहे के ना पड़ल। उल्टे सब हमरे से कहे, “चलबू?” माई काम से खाली भइली त पूछली, “इहे कहत रहलू? चलबू?” हम कहनी, “हँ।”

“अबहिन बहुत समय आगे बा। चलिह, तनी रूक जा।” माई समझवली। हम शान्त, बाकी उदास हो गइनीं।

धीरे-धीरे घर में सब जान गइल कि हम ‘गंगा तीर’ नहाए जाइल चाहतानी। बाकी केहू ए बात से राजी ना रहे। राजी रहलें अकेल हमरे घर के एगो हरवाह बसावन बाबा। बसावन बाबा कहलें, “काहें ना जाइ? हम ले चलब, कन्हइयाँ-पीठइयाँ ल चलब।”

टोला-मोहल्ला के लोग कहे, ‘बेटी के जब बिआह तय होला तब गंगा तीर नहाए जाले।”

हम माई से इ बात पूछनी। माई कहली, “ना बेटी, नहान से आ बिआह में कवन रिश्ता! हम ए से मना करत रहनीं ह कि पैदल चले के पड़ी, तूं थकि जइबू, बीमार पड़ि जइबू। चलल चाहताडू त चल।”

अब हमार तइयारी शुरू भइल। का-का ले जाइब, का-का करब आदि, आदि। अबहिन दिया-दियारियो ना बीतल रहे, पूरनवांसी कब आई! अगोरत- अगोरत जीव अफनाए लागल। कइसो-कइसो दिया-दियारी आइल। हर साल अइसन मजा ना आइल। हमार खुशी त पूरनवांसी के नहान में लुकाइल रहे। एक दिन उहो दिन आइल। कातिक के अंजोरी द्वादसी काल्हि निकलेके बा। सब तइयारी पक्का। हम इहाँ-उहाँ, कूदत-फानत सबके बता अइनीं- ‘हमहूं जातानी, हमहूं ना जाइ। गोल में जाइ। गोल में हर तरह के लोग बा- मरद-मेहरारू, धनी, गरीब, बूढ-जवान, नान्ह-बड़। छांट-बीन कहीं नइखे। बिहान भइले, अंजारी तेरस के, भिनुसारे सब निकलल। नहा-धो के, नया कपड़ा पहिन के। मेहरारू लोगे गोड़ रंगि के, भरि-भरि बांहि नया चूड़ी पहिरिके- माने पूरा टीका-फना कें मरदाना लोग माथे पगरी बान्हि के, हाथे लाठी ले के निकलल। सबका कपारे आपन-आपन मोटरी-गठरी। सब देवता-पितर मनावल, तुलसी जी के गोड़ लागला तब गंगातीर निकलन पूरनवांसी नहार- गाँवे से 40 कि०मी० दूर। पहिल पड़ाव दरौली- गाँवे से सरजू जी का लगे। अबहिन ठीक से अंजोरो ना भइल रहे। ओतने अंजोरे जवन लउकत रहे, ऊ हमरे खातिर नया, एकदम नया, अजूबा रहे। हम भकुवा के देखत रहनीं। सरजू जी हरदम वाली सरजू जी ना रहली। उनुका ऊपर कोहरा धुंध बन के छितराइल रहे। किनारे लाइन से रंग-बिरंगा झंडा पताका से सजावल दस-पन्द्रह गो नाव खड़ा रहे। गंगा तीर जाए वाला नहनिया लोगन के भीड़ लागल रहे। धुंध में सब अइसन लागल रहे, जइसे हम कवनो दूसरे जगह आ गइल होईं।

गंगातीर जाए खातिर सरजू जी के पार करे के पड़ी। सरजू जी के पिछउड़ क के नहाए गइले, नहान के फल कइसे मिली? एसे पहिले सरजू जी से आज्ञा लिहल जाइ। उनुकर विधिवत पूजा कइल जाइ, पीठा चढ़ावल जाइ, बिनती कइल जाइ कि सबके लांघे (पार करे) के आज्ञा दीं। मेहरारू लोग एही तइयारी में लागल बा। अब बुझाला-एतना आदर, एतना भक्ति जीवन में भाव से आवेला। आजु के बौद्धिक आदमी खातिर इ बेवकूफी ह। पीठा लेबे वाली मेहरारू लोग अगले खड़ा बा सब पीठा चढ़ावता आ ले जाके दे देता। पाके ऊ लोग खुश हो जाता। इ ओलागन के दूजून के खरची हो जाइ। पीठा चढ़वले के रिवाज आजुवो बा- काली, सत्ती के, गंगा सरजू के बाकी पीठा दिहले के रिवाज अब बदल गइल बा- ‘जेकर पूजा ओकर पीठा।’ पीठा चाहे त जे पूजा चढ़ावता ऊ ली चाहे जेकरे खातिर चढ़ावल बा ऊ ली। ए हिसाब से काली-सत्ती की पूजा के पीठा जे चढ़ावता ऊ ली आ गंगा-सरजू के पीठा नदी में डाल दिहल जाइ, मछरी खा लिहें। केतना बुद्धिमानी से खराब रिवाज के हटा के ओके बढ़िया बना लिहल गइल आ मूल प्रयोजन सिद्ध होत गइल। लोक जवन बदलाव ले आवेला ऊ बिना हल्ला हंगामा के हो जाला। पहिले वाला रिवाज में एक वर्ग के गरीबी रहे, अब ऊ वर्ग अतना गरीब नइखे। पहिले वाला में ओके हेय मानल जाता रहे, अब बराबरी के भाव बा।

पूजा-पाठ क के, सरजू मइया से आज्ञा लेके सब नाव पर सवार भइल ‘सरजू माई के जै’ से पूरा घाट गूंज गइल। आसमान में सूरूज भगवान आ गइल रहलें। उनुकर बिना घाम वाली किरिन हल्का नारंगी रंग के अबीर छरिकि देले रहे। थोड़े देर में किरिन पियर गइल आ सरजू जी की धारा में झिलमिल-झिलमिल सुन्नर के सोनहुला साड़ी लहरे लागल। दरौली के घाट दूर हो गइल रहे तबो मंदिर, नाव पर बइठत लोग लउकत रहे। नाव अब किनारे पहुँचत रहे। सामने के घाट साफ होत जात रहे। इ घाट दरौली का घाट अइसन चुहुलगर ना लागत रहे। खाली नदी में रूकत-खुलत नाव, उतरत लोग, माथे पर मोटरी धइले आगे बढ़त लोग आ बालू के रेत। सब कहत रहे इ ‘उप्पी’ (यू०पी०) ह, जिला बलिया। सब लोग नाव से उतरल। साथ के सब लोग अबे ना आइल रहें ओ लोगन के अगोरत गइल। नदी पर क के हमनीका बिहार का छपरा जिला (तब दरौली-छपरा जिलार में रहल) से यू०पी० का बलिया जिला में आ गइल रहनीं जा। का जनि इ कवन घाट रहे। इहाँ से पैदल डेढ़ कोस दूर खरीद जाए के रहे। रेत खाली रेत। कहीं पेड़-रूख ना। थोड़े दूर तक हम धउरत चलनीं। दउरि के आगे पहुँच जाइल गोज पर बालू थाप के घर बनालीं, खेलि लीं। बाकी जल्दिए हमरा रेत के मरम बुझाए लागल। हम चलीं आगे, रेतवा खींचे पीछे। गोड़ धंसि-

धंसि जाए। सुरूजो भगवान ऊपर आवत रहलें। चलत-चलत थकि के हम एक जगह बइठि गइनीं आ रोवे लगनीं कि हमके गाँवें पहुँचा द लोग, हम ना जाइब। सब डांटे लागल, “इहे कहात रहे त ना सुनाइल।” बस माई आ बसावन बाबा कहे, “अब का? अब त आ गइल बा, रेतवा बस दस डेग बा।” सचहूं रेतवा थोड़े दूर रहे, एकरे बाद बढ़िया रास्ता। थोड़े अउरी चलले पर खरीद आ गइल। खरीद में सब सुस्ताइल सतुआ-भूजा खाइल। खरीद से हमनी के गोल दू हिस्सा में बंटी गइल- बस वाली आ पैदल वाली। बस वाली गोल में हम, माई, तीन गो ईया, एगो फुवा आ एगो चाचा रहलें। बाकी सब पैदल वाली गोल में। चाचा की देख-रेख में बस वाली गोल रहे आ बाबू बाबा की देख-रेख में पैदल वाली। इ जेतना लोग रहे, अलगे-अलगे घर के रहे बाकी एक तरह से एक घर के रहे, कवनो-ना-कवनो तरह से एके घर से जुड़ल रहे। सबके नहववले के जिम्मेदारी बाबू बाबा पर रहे। हमार बाबा घर के देख-भाल खातिर गाँवे रहलें। पहिले पैदल गोल निकलल गठरी-मोटरी सम्हरले, भजन गावत इ महनिहाँ गोल अपने अइसन चलत छोट-छोट गोल में शामिल होके बड़हन गोल बना दिहलस।

थोड़े देर बाद बस आइल। बस में एतना भीड़ कि देंहि पर देंहि छिलाए। चाचा कहलें, “एसे ना, दूसरा बस से चलल जाइ।” हमरा बुझाए, “एही से चलल जाए, ना बइठि के खड़ा होके। बाकी हमार के सुने?” दूसरो ना तीसरा बस में जगह मिलल त हमनीका बइठनी जा। अब हमके यात्रा के मजा आवे लागल। जइसे-जइसे बस आगे बढ़े, ओइसे-ओइसे भीड़ बढ़े आ जइसे-जइसे भीड़ बढ़े, ओइसे-ओइसे हमार खुशी बढ़े। तीजहरिया होत हमनीका बलिया शहर पहुँच गइनीं जा। चाचा के मन रहे मून छापर के पंडित जी के घर नगीचहीं बा। देखते ऊ खुश हो जइहें, ऊहे चलल जाए। माई कहली, ‘ना इ उचित नइखे। नहान तपस्या ह, एमें सुख सुविधा ना खोजे के चाहीं। बाबुओ जी के इ बात ना नीक लागी। तब चाचा पानी ले अइलन। बस अड्डे पर पानी छिरिके के, साफ-सुथरा के चिउरा दही खाइल गइल आ आराम कइल गइल। अब घाटे पहुँचे के हमनीका अपना साथ के पैदलही गोल के आइल अगोरे के रहे। कातिक के मेला में हरिहर क्षेत्र के मेला, ददरी के मेला आ दरौली के मेला प्रसिद्ध ह। गंगा आ गंडकी के संगम पर सोनपुर में, दूसराका गंगा के किनारे बलिया में आ तीसरका सरजू के किनारे दरौली में लागेला। ए घरी हमनीका ददरी के मेला में रहनी जा। घाट से पहिलही मेला सजल रहे। चाचा के कहनाम रहे कि मेला नइखे घूमे के, नहाए सब आइल बा, बस इहे काम होइ आ मंदिर में दरसन कइल जाइ। हमन का पास समय रहबे कइल, भिरगु मुनि के दरसन करे सब मंदिर पहुँच गइल। भिरगु मुनि सप्तऋषि में एक हवें। ज्योतिष के महान ग्रंथ ‘भृगु संहिता’ भिरगु मुनि के लिखल ह। प्रचीन काल में गंगा नदी के ए घाट पर भिरगु मुनि के आश्रम रहे। एक बेर इहाँ गंगा नदी के धारा सूख गइल। मुनि अपने शिष्य ‘दर्दर’ के अयोध्या से सरजू जी के पानी मंगवलें। पानी गंगा जी में डालते गंगा जी के धारा बहे लागल। मुनि के शिष्य के नाम पर इ क्षेत्र ‘दर्दरी’ कहाइल।

सांझ तक सब घाट पर जुटि गइल। पहिल सब गंगा जी में नहाइल। फिर खइले-पीयले के इंतजाम में लागल। हमार काम खाली इहाँ-उहाँ देखल रहे। ददरी दरौलियो से ढेर अजूबा लागल। एक त अनचीन्ह, दूसरे दरौली में सरजू जी की घाट का तनिए दूर पर घर लउके, इहाँ शहरियो दूर रहे। ए पार से ओ पार सब खाली जगह, बिच्चे में बहत गंगा जी। नहान रहे त जगह लोग से भरल रहे। नहान ना रही तब त डर लागी। सबेरे हम सरजू जी में सुरूज भगवान के लीला देखले रहनीं, अब ऊ अपन। माई की गोद में जात रहलें। मेला में छोट लइके बहुत कम लउकत रहलें, एकरे बाद सेयान लइकी। हम एक-दू जनी से पूछनीं, “ए, ए साल तुहार बिआह होई?” ऊ लोग हंसि दे आ हमसे पूछे, “कइसे जनलू?” हमार जवाब बस एतने रहे, “जानतानीं एतना कहि के हम हटि जाईं।

सूरूज भगवान माई लगे चलि गइलें। चान मामा अबे आइल ना रहलें धरती पर तनी-तनी अन्हार उतरि गइल तबले पुरूब ओर घाहि देबे लागल। आसमान अगले किसिम के लालिमा से भरि गइल। ओही में से धीरे-धीरे नवचा चान निकललें। चान ऊपर चढ़त गइलें, उनुकर जोत पोढ़ होत गइल। हम माई से पूछनीं, “आजुए पूरनवांसी ह?” माई कहली, “ना काल्हि हऽ तबे न चान मामा तनी रूक के निकललें ह, तनी कमो बाड़ें। एही से एतना सुन्नर बाड़े। काल्हि देखी ह, अइसन ना लगिहें।” हमरा बाति ना बुझाइल थाकल-हारल लोग सामी के सूति गइल, बालू पर एक चदरा बिछा के दूसरका ओढ़ि के। कवनो-कवनो गोल में भजन-कीर्तन चलत रहे। हम माई का बगल में सूतल ऊपर आसमान देखत रहनीं। चान मामा ऊपर चमकत रहलन। उनुकर चमक! एतना तेज, एतना तेज कि सतहवा, खटमचिया, तीन डंड़िया समेत दूसर-दूसर जोन्ही चाहे लउकते ना रहे चाहे बहुत मद्धिम रहे। हम उठि के बइठि गइनी कि देखीं कवने ओर जोन्ही बा। बाकी धरती से लिहले आसमान तक फइलल चान मामा के जादू देखि के हमरा इ

बात भुला गइल। हे भगवान! ऊपर से नीचे ले एक्के रंग, का धरती का आसमान! हमरा मन में आइल-हमहूँ एही में मिल जाइ। तब हमरी मुँह से निकलल-

हम धरती हो जाईं कि आसमान हो जाईं।
हम सुरूज हो जाईं कि चान हो जाईं।

हमार मन अजीब तरह के हो गइल रहे। हम बिछौना पर लेट गइनीं। का जाने कब हमरा नीन लाग गइल। माई जगवली त नीन खुलल। भिनुसार होत रहे। पूरनवांसी मे नहान शुरू हो गइल रहे। सब नहा-नहा दान अदान क क घरे गइला का तइयारी में रहे। हमहूँ ए सब में शामिल भइनीं। चान मामा पच्छिम हो गइल रहले। गंगा मइया में छोट-छोट कई दीया झिलमिझ करत आगे बढ़त रहे। गंगा मइया लहर-लहर लहरात रहली। हम गंगा मइया के गोड़ लाग के जयकारा लगावत गाँवे का ओर सबका साथे चलनीं।

C/o डा० दिवा शुक्ला, 302, ईशान होम्स, घूमा, घूमा बस स्टॉप के पास,
घूमा, अहमदाबाद-380058, 9450925784/ 8160370017

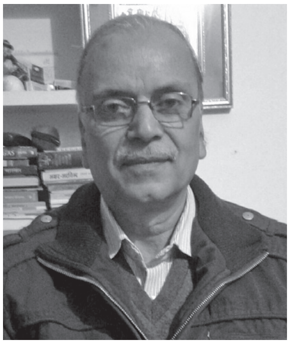

हीरालाल 'हीरा'

बनजारा मन

बनजारा मन जइसे कतहूँ,
अचके ठहर गइल
उनका ओह चितवन के,
दिल पर कइसन असर भइल।

परिभाषा ना प्रेम के जनलीं,
हम रहनी नादान
रसे-रसे ऊ पीर उठल कि,
निकले जइसे प्रान
दवा बिरो कुछ काम न आइल
सब बे असर भइल।

मन तड़पे मिलितीं बाकिर फिर
उभरे तर्क हजार
दरस-परस का बेचैनी में,
दाबे लोक-बिचार
साँप छुछुन्नर के गति,
जिनिगी लागे जहर भइल।

पैकड़ बन्हले नाचि रहल बा,
मन मयूर आँगन में
भूख-पियास न लागे जइसे,
डाढ़ा लेसले तन में
एह पिरीत का चलते,
तन से मन दर-बदर भइल।

- बुलापुर, बलिया

आगा का बा

शारदा पाण्डेय

राजराजेश्वरी खिरकी के बहरा देखली। अँजोरिया टहकार पसरल रहल। गजानन पांड़े के चउहद्‌दी लउकल। ओकरा से सटल पीपर के फेड़, गाढ़ हरिअर पतिई करिआ रंग के आभा देत रहे। आधा राति होत होई। सभे सूत गइल होई। कवनो आवाज ना सुनाय। कबो कवनो कूकुर अनासे भूँक देत रहें सोचे लगली समय कइसे बहत जाला। केहू बूझि ना पावें लोग अपने राग-रंग में रहेला। काल बाकिर केहू के छोड़ेला? ऊ त गऽते से आपन हाथ फेरेला आ देहि पर, आपन रेख छोड़ देला। बार करिआ से उज्जर होखे लागेला आँखि के जोत मद्धिम परे लागेला। मुँह पर, लिलार पर लकीर खिंचाये लागेला। अपने तन से उपरजल लइका-लइकी खेलत-कूदत, पढ़त सेयान होला, फेरु ओकर आपन घर परिवार होत जाला। ई जाल बिनात जाला। महतारी-बाप अकेल होत जाला। बेमार, शक्तिहीन साँस लेत देहि काँपत जाला। सहारा जोहेला, बाकिर भोग-भोगे के होला अपने देहि के। अपना लगे सूतल पति सुदर्शन पर हाथ फेरली, जे अपना समय में साचो सुदर्शन रहले। देखे वाला देखि के निहाल हो जाय। आजु ऊ खाँसत खाँसत निढाल हो गइल बाड़न। राजेश्वरी अपना आँखि के लोर पोंछि लिहली। फेरु खिरकी से बहरा देखे लगली।

अबहीं उनुकर उमिरिये का रहल। दस बरिस के रहल होइहें। एगो भाई भइल, आ कुछ महीना में ओकर दप् दप् देहि का जाने कइसे लाल होत झँवराये लागल फेरु एकदमें से शांत हो गइल। हरदी से महाबीर सिंह बैद अइलन बाकिर ऊ कुछ ना समुझ पवलन। माई मइया रोवे लागल लोग। आपन बस का रहे। राज राजेश्वरी एक दिन दुपहरिया में जब सभ केहू घर में सूतल रहे, बाबू-काका बहरा पलानी में रहल लोग; चुपचाप उठली आ छोटका दरवाजा से निकलि के सीधे 'घरनाथ बाबा' के स्थान रहे। रोइ रोइ के कहे लगली, "बाबा हमरा के भाई द। हमरा भाई ले लिहल। हमार सजे घर रोवता। हमार भाई लवटा दऽ नाहीं तऽ हम एहिजे आपन परान दे देब।" घरनाथ बाबा के पिंडी के अँकवारी बन्हले ऊ रोवते जासु। अनासे खूब तेज हवा बहत फेड़ हिले लागल, ऊ डेराइ गइली। तबे उनुका सुनाइल कि केहू कहता कि "जा! तहरा भाई होई, ओकर नाँव राज जी धरिहऽ।" ऊ अकबका के चारो ओर देखली केहू ना लउकल। दोपहरी चन चनात रहल। ऊ गोड़ लागि के कुछु सोचत घरे अइली। अबहीं सभ आरामे करत रहल। माई के लगे छोटकी शैला आँचर धइले सूतल रहे। राजेश्वरी सोचे लगली कि माई के जगाके आपन बात कहीं। फेरु सोचली, ना, बड़ा दिन के बाद तनिकी भर दुपहरिया में सूतल बिया। जागी तऽ पाछे आपन बात कहि देब। बाकिर कहला पर कहीं डाँट मत परो कि दुपहरिया में अकेले ओतना दूर काहें गइले?'

ऊ चुपचाप कुछ सोचत सूति गइली। उनुका काम में उहे आवाज सुनाए लागल। नीनिए ना लागल उठि के बइठि गइली। माई के आँखि खुलल तऽ उनुका के बइठल देखि के देहि टोवलस। कहलस कि "सूतत काहें नइखू? जर तऽ नइखे। का बात बा?" राजेश्वरी माई के ओर देखली आ कहली कि, 'माई खिसिअइहे जनि; एगो बात कहे के बा?" माई उठि के बइठि गइल।

कहलसि कि, ‘ना खिसिआइब। का कहे के बा?”

राजेश्वरी कुल्ही बात कहि दिहली। माई उनुका के खींचि के करेजा से लगा लिहलसं ओकरा आँखि से लोर ढरकि गइल। कहलस कि, “ए बबुनी! मुअल-जीअल अपना हाथ में ना होला। ई भगवान के हाथ में होखेला। उनुकर चीज ऊ ले लिहलन।”

राजेश्वरी अनखा गइली। कहली, “दीहल चीज ऊ कइसे ले लिहलन? लेबे के रहल तऽ ना दिहितन।” माई कुछ बोललि ना। उनुकर बार सहरावे लागल। राजेश्वरी मन में प्रश्न लेले कब सूति गइली उनुका ना बुझाइल। उठली तऽ साँझ हो गइल रहे।

दोसरा दिन ऊ आपन तख्ती आ माटि लेले काशी मइया किहाँ चहुँप गइली। मइया आप छीलत रहली। गाइत्री, सहोदरी, परमेसरी आ गइल रहली सन। राजेश्वरी के रस्ता देखात रहे। आवते मइया पहिलका कऽथा राम जी के बनवास के सुनवली आ सभके लिखे के कहली। सभ ले पहिले राजेश्वरी देखवली तऽ महया खुश हो गइली। राजेश्वरी के अवा अनासे अँजोर हो गइल। काल्हु से उनुका मन में जवन प्रश्न बनि के असंतोष उफनात रहे ऊ जइसे शांत हो गइल। जब राम जी के राज मिलत-मिलत अपने पिता राजा दशरा से बनवास मिल गइल त अइसहीं भगवानो तऽ आपन दीहल चीज लेइये सकेलन! काशी मइया देखे में त तनिको सुन्नर ना रहली। गाढ़ साँवर रंग छरहर लमहर देह नाक चोख, आँखि बडड़ आ आदिमी के भीतर तक जोखि लेबे वाली। ऊ राजेश्वरी के मुँह के भाव के उतार चढ़ाव भाँपि गइली। कहली- “बुच्ची! क्ष भइल? का सोचऽतारु?” राजेश्वरी के आँखि लोरिआ गइल। ऊ आपन कुल्ही भााव मइया के आगा खोलि दिहलीं मइया उनुका के अपना केरेजा से गला (छाती) लिहली। कहली, “राजश्वरी! तूँ जिनिगी भर एह भाव के सँजो लेबू तऽ तहरा कबो दुःख ना होई। एक से एक समझदार अदिमी जे एह बात के ना समझ पवला से दुखी होखेला तूँ बूझि लिहलू।”

मइया के आँखि से लोर झरि गइल। ओह घरी राजेश्वरी के ढेर बात ना बुझाइल, बाकिर आजु जब जिनिगी के कतना उतार-चढ़ाव देखली, पति सुदर्शन के रोग ग्रसित दुर्बल देहि के देखतारी तऽ अपना भविष्य के अन्हार देखत उनुकर रोआँ-रोआँ गनगना जाता। कहाँ तटस्थ हो पावतारी? मन में संतोष देबे में असमर्थ बाड़ी। ऊ ना तऽ अपना के समुझा पावऽतारी, ना सुदर्शन के। जब-जब सुदर्शन बेराम होखेलन, ऊ भावुक हो जालन। मन में का जाने का का सोचेलन? कतना बवंडर तूफान झेलेलन, बाकिर केहू अवरु से कुछु ना कहेलन। बस राजेश्वरी के हाथ सहरावत आँखि में लोर भरल ईहे कहेलन, कि “हमरा अवरु कवनो चिंता नइखें। खाली तहरे बारे में सोचि के थहरा जानी कि तहार का होई? कइसे रहबू?”

राजेश्वरी हर बेर ईहे सान्त्वना देली कि, “रउआ हमार चिंता छोड़ि दीं। केहू के भागि में का बा? के जानता? जऽले राउर छाँह बा तऽले तऽ हम रानी बानी, हमरा ले सौभाग्यशाली के बा? भरल-पुरल परिवार बा। बेटा-बेटी पतोह, नाती-पोता सभ बा। कवनो कमी भगवान नइखन कइले। भगवान के कृपा से अर्थ सम्पन्नता बा, सभे साधन बा। रउआ नकारात्मक मत सोचीं।” कहि के उनुकर हाथ-गोड़ सहरावे लागेली।

उनुका काशी बो मइया मन परि जाली। अदिमी आपन आदि-अंत कहाँ जानेला? जिनिगी के मध्यांतरे नू देखे आ जीएला? भविष्य के बारे में कछु ना जाने। बस अपना सीमित अनुभवे के अनुसार कल्पना करेला। बाकिर ऊ ईहो बूझेला कि ओकरा अपना हाथ में कुछऊ नइखे। कुल्ही नियति के हाथ में बा। तब कहाँ तक आ का सोचो? कबो-कबो मन सँकाइयो जाला बाकिर अपना के सम्हरालें रहलीं उनुका कुछ ना बुझाला कि सुदर्शन के अवरु कइसे बोध देसु? जब सुदर्शन कहे लागेलन कि, “हमरा ईहे तऽ चिंता बा कि तहरा दर्शन के अलावा कबो जीवन के सच्चाई ना बुझाइल। देखेलू नाकि जेकरा के पललू-पोसलू सभ अपना-अपना जिनिगी में रस-बस गइल बा। हमनी के लगे के बा? धन-सम्पत्ति सभे चाहेला, सेवा करे के कवनो हाथ आगा ना आवे। अइबो करी तऽ कब तक! अनुरंजन अकेले बाड़न, बाकिर अपने परिवार मेहरारु-लइकन में डूबल। कब अइहें, कब जइहें कबो ईहो ना बतावसु। अपना परिवार के बारे में कुछु ना बतावसु। खाली ईहे कहेलन कि “दाल-रोटी चलता।” ई जानियो के कि हमरा उनुका से कुछु ना चाही, हमही उनुका के देत रहब। चल, ईहो मत सोचऽ। बाकिर ई तऽ बुझात बा नू कि हमरे से लेके कुल्ह काम करिहें। तहरा हर बात के जबाब कहसे मत सोचऽ। बाकिर ई तऽ बुझात बा नू कि हमरे से लेके कुल्ह काम करिहें। तहरा हर बात के जबाब कइसे झँझुआइ के वेलन? तूँ चुपाइ जालू। खाली अपना मेहरारुये के महत्व देलन। अपना पत्नी आ सासु-ससुर के लेके तीर्थाटन करा देलन हमनी के कबो पुछलन? तहार पतोह कबो तहरा लगे बइठि के बतिआवेले?”

राजेश्वरी कहली कि, “रउआ ई कुल्ह मेहरकई बात मत सोचीं। समय पर भगवान कूल्ही सम्हरिहन। समय पर बबुआ आ के सम्हारिये लेलन। रूप्या पइसा खरचहीं के खातिर होखेला। भगवान अतना देले बाड़न कि केहू के आगा हाथ नइखे पसारे के। हमहीं उनुका के दे देब। रउआ रहत हमरा ई कुद नइखे सोचेके। रहल महरारु के बस में रहला के बात तऽ एमे का बाउर माने के बा? सभे रहेला। कम से कम आपन परिवार लइका सम्हारत बाड़न ई कवनो कम बात नइखे। ससुरारी में शोभा के भाई नइखे तऽ इनका देखे के परबे करी।”

सुदर्शन कइले, “ठीक बा। अइसहीं मन के समुझावऽ आ सच्चाई में मुँह छिपा लऽ। पइसा दीहल हमरा बाउर ना लागे; झूठ बोलल अखरि जाला। महतारी-बाप के संभे कइसन व्यवहार करे के चाहीं? पत्नी आ महतारी में कइसे सामंजस्य बना के रहे के चाहीं? ई उनुका ना बुझाए के चाहीं? पतोह तहरा से कबो कहलस कि अम्मा जी अब अकेले मत रहीं सभे। हमरे किहें आईं। पूरा परिवार संगे रही? ऊ त सिखवले बिआ कि हमार घर कवनो होटल हड? कि जे चाही आइ के रहि लेउ।’ त ई बात अपना महतारी-बाप खातिर नइखे कहले। ऊ लोग ओजू आवेला। महीनन रहेला। उनुकर हार्ट के ऑपरेशन, दवा-बीरो ईहे लोग नू करावल? हमरा के कबो अनुरंजन आ अवरु केठू ई कहली? बात देखे में छोट बुझाता बाकिर एकर माने आ प्रतिक्रिया बड़ा गम्भीर संदेश लेके आवेला। आजु हमरा चिंते के कारण पेसमेकर लगवावे के पऽरल। एकरा चलते कुछु बात जवन हम अपना आप से छुपावत रहनी, समुझावत रहनी, तहरा से कबो चर्चा न। कइनी ऊ कुल्ही भ्रम काटि के सूरज के किरिन नीयर स्पष्ट लउकता। ई हार्ट के मामला रहल देखावे के निर्णय लिहल गइल कि दिल्ली गइल ठीक होई। अनुरंजनो के राय ईहे रहल। एह बेर त हमरा चक्कर खाके गिरे के दुर्घटना इनका सोझे भइल। दू गो एफ.डी. तुखवनी। एगो अनुरंजन के दिहनी आ दोसरका भास्कर के। काहें कि ऊहे हमनी के आरक्षण करवावेलन। घरे ल जालन। इनका के तनी मधिका राशि दिहनी कि का जानी कब कइसन आवश्यकता पड़े। अनुरंजन ई जानतो कि अधिको राशि के लागे क स्थिति आ सकेला। एको बेर ना कइलन कि “पापा! रउआ चिंता मत करीं। रूपया के प्रबंध हो जाई।” बलुक बैंक से बिलम्ब होखे के लागल तऽ अंशिका पर जोर डलवा के क्लियर करववल। हम बोलनी ना। हमरा से दू बेर कहलन कि “रउआ धिका राशि वाला चेक तऽ भास्कर के दे देले बानी।” हम कुछउ ना कहनी, बाकिर ई बुझा गइल कि लोग गँवे-गँवे आपन गोड़ पसारत जाता।”

ई सुनते राजेश्वरी के मन में कवनो काँट कसक गइल। तीन-चार बेर भइल कि जब अनुरंजन किहाँ जाये के बिचार भइल तब-तब सूचना मिलल कि शोभा अना नइहर चलि गइली, भा अइसन बेराम भइली कि अनुरंजन कहलन कि, “अबहीं मत आईं सभे। शोभा अइसन बेराम बाड़ी कि उठि बइसि नइखी पावत। जाड़ा भी बड़ा कस के परऽता अम्मा के ठंढ लागि जाई। जहाँ बानी सभे ओहिजे रहीं।” ई सुनते सुदर्शन के मुँह झँवा गइल। एक बेर तऽ अइसन भइल कि ईहाँ के आरक्षण करवा के बबुआ के सूचित कइनी कि “फलाना दिन हम पहुँचतानी। भास्कर किहाँ से तहरा किहाँ आ जाइब।” जवना दिन हमनी के भास्कर किहाँ चहुँपनी, सोनी कि इनकर माई बाबू जी आइल बा लोग तऽ सवधी-समधिन से भेंटो हो जाई। फेरु अनुरंजन के सूचना दे दिआई ऊ अपना किहें ले ले जइहें। हमनी के समधी-समधिन से अबहीं बतिआवते रहनी कि अनुरंजन के फोन आ गइल। प्रकर्ष फोन उठवली तऽ बबुआ बोलले कि, “अम्मा के फोन दे दऽ।” हम फोन लिहनी तऽ ओने से बोललन, कि, “शोभा आजुवे फ्लाइट से बम्बई अपना बहिन किहाँ गृह-प्रवेश में चलि गइल बाड़ी। हमरो स्वास्थ्य नीक नइखे एसे रउआ सभ अबहीं ओहिजे रहि जाईं। एजू अइला पर कष्ट होई।” हम पुछनी कि, “शोभा कबले लवटिहें? इहाँ तऽ हमनी के सभसे भेंट-मुलाकात हो गइल बा।”

बबुआ कहलन कि, “इ हम ना बता सकीले। लइकन के लेके गइल बाड़ी तऽ कुछु दिन रहबे करिहें।” हमरा मन गिरल, लाजो लागल कि इहनी लोग का सोची? प्रकर्ष के मुँह मुरझा गइल। सास-ससुर ओहिजे रहल लोग। सभे सुनि लिहल। हमरा एह स्थिति के तनिको आभास ना रहल। प्रकर्ष रसोई में चालि गइली चाह बनावे खातिर, बुला एह स्थिति में उबरहूँ खातिर। सुदर्शन एकदम शीत रहलन। तबे समधिन कहली कि, “रउआ सभे काहें चिंतित बानी? एहि जे रहीं सभे। हमनिके नोएडा अपना छोटका बेटा किहें आजुए चलि जा तानी। बेटा-बेटी दू ना होखेला। भास्कर रउआ के डाक्टर के देखा दीहें। निश्चिंत रहीं सभे।” हमरा बुझाइल जइसे केहू झन्न से चटकन मरले होखो। ई बचन अवलेप तन-मन दूनू के झनझना देले रहल। सभे चाह चुपचाप पी लिहल जइसे वाणी एकदमे भुला गइल। घंटा भर में समधी-समधिन तेयार होके चलि गइल लोग। अबहीं चार दिन पहिलहीं छोटका बेटा किहाँ से एहजू आइल रहल लोग।

ओह घटना के जीअत कब राजेश्वरी के आँखि लोरिआ गइल, उनुका ना बुझाइल लोर पोंछि लिहली। देखली सुदर्शन उनुका के एकटक देखत रहलन।
पुछलन, "का भइल?"

राजेश्वरी कहली, "कुछु ना। रउआ बेरामी का कष्ट के देखि के तनी अनमना गइनी।"

सुदर्शन मन के पारखी रइलन, कहलन, "छिपावत काहें बाडू? हमार बेरामी त महीनन खे चलतिआ। तूँ अनुरंजन शोभा के दुनिया में चलि गइल रहलू। हमरो ईहे स्थिति बा। कुछ भुलात नइखे। हमनिके संस्कार दिहला में कवन कमी रहि गइल कि इनका संवेदनशीलता संबंध-बोध में अभाव आ गइल।" राजेश्वरी के मन भरि गइल रहे। अपना के समुझावत-समुझावत अपने में उजबुजा गइल रहली। अतीत में चहुँप गइली। भुलवला के कतना अभिनय कइली बाकिर आजु अइसन विवश स्थिति में घाव फेरू हरिअराइ गइल। कइली कि, "ओह घरी त अनुश्रंजन के बात से अइसन बुझाइल जइसे घर के छत भहरा गइल होखे आ नीचे दूनू पल्ला दू ओर हो गइल। हम निरावरण हो गइनी। भीतर-बाहर कूल्ही उघार हो गइल। कतना उतजोग कइ के कूल्ही कमी पर परदा डलले रहनी आजु समधी-समधिन के आगा बेपर्द हो गइल। प्रकर्षा के का-का ना सूने के परी। अबहीं का कुछ कम रहल हा?" बुझात रहल कि जवन गिरह में सभ से ओट राखि के बन्हले रहली, गिरह ढील परते कूल्ही सुदर्शन के आगा एह राति छितरा जाई। उनुका ना लागे। बाप के पइसा पर मस्ती करो आ महतारी-बाप सुरअन्न के भारी? अबले कतना उदाहरसा से, बाकू चातुर्य से समुझावत रहबी आजु अपने का सम्हार पवली?

कहली कि, "जब अनुरंजन अकेले आवेलन तऽ गँवे गँवे तनी सहज होत जालन, बाकिर शोभा के संगे रहला पर दोसरे हो जालन। बोलले में बेलस, ऊरठ आ आपन काम छोड़ि के हमनिके ओर से उदासीन। खाली शोभा के प्रसन्नता पर उनुकर ध्यान रहेला। घुमावल-फिरावल बहरा खिआवल ऊहे उनुकर कर्त्तव्य रहि जाला। फेरु ना सोचिहें कि उहनी लोग के लवटला के समय देखत आधा राति बीति जाला। फोन पर कहिहें, "हमनी के बहरे खा लिहनी। अम्मा कहऽत तहनी लोग खातिर कुछु ले आईं।" जानेलन कि माई-बाबू बहरा के कुछु ना खाला लोग। ओह घरी उठि के रसोई बनावल दण्ड बुझाला। चलीं छोड़ी इ कूल्ह बात। कतना कहब? कवनो लाभ नइखे। बलुक मन परला पर कूल्ही भावे करुआ जाला। रउआ स्वस्थ हो जाईं। फेरु त हमनी के कूल्ही हवा-बतास झेलि लेब।"

राजेश्वरी फेरु सुदर्शन के गोड़ सहरावे लगली। 'मन में एगो डर तऽ बड़ले बा कि आगा जिनिगी कवन रूप ले ली। ई घर-दुआर, धन-सम्पत्ति रहलो पर संबंध ठीक ना रहला पर अदिमी कतना अकेल अथक्का परि जाता। एगो पतोह चाहे तऽ घर स्वर्ग बनि जाला ना तऽ जिनिगी सास-ससुर के नरक हो जाला। एसे ईहे बुझाला कि इनका संभे रहला से अधिका अच्छा बा अकेले जीअल। अपने घर में अदिमी बनवासी हो जाला। एगो परिवार एकही घर में रंग-बिरंग के खाना मिठाई खासु, हँसत-बोलत रहसु आ ओहिजे बूढ़ बेराम बाप-महतारी घरे में बनवास झेलत रोटी-गूर संगे खासु। ई कइसे सहन होई? सुदर्शन के खाँसी फेरु उपहि आइल। खाँसत-खाँसत छाती पर तेल गरम कऽइ के लगावसु। तनी आराम मिलल तऽ सुदर्शन के आँखि लागि गइल। बाकिर राजेश्वरी के बेचैनी कम ना भइल। धीरे-धीरे पिअराति अँजोरिया के देखत रहली। मन में जिनिगी के जाने कतना पन्ना उलटात गइल। सुख के बीतत दिन ना लागे बाकिर दुःख मन में अँवटात रहेला। ई कब ले चली? के जानी? अन्हारे-अन्हारे बा। भगवाने जनिहें।

142, बाधम्बरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम्, प्रयागराज

सुकवा (भोर के तारा)

✍ तुषारकान्त

अनन्त। आराम कुर्सी पर पसरल देहि। आगे छोटकी मेज पर फइलल गोड़। का जाने कब राति बीत गइल। राति के खायेक खा के बस परसि गइल रहले।

आ बीतल जिनगी आँखी के सोझा आवे जाई। सभे केहू जिनगी में कबो-न-कबो एह तूफान से जरूर गुजरेला। का मिलल। का छूटि गइल। पूरा दम लगावला के बादो, का भुला गइल।

जिनगी भर के मेहनति, लगन, इमानदारी का दिहलस। घर-परिवार के जिमदारी छोड़ि के पार्टी कार्यक्रम, समाज, नेता के पीछे भागत-भागत जइसे हम त भुलाइये गइलीं। ऊ त चुगू रहली। भाई-बाबूजी, परिवार हितई, सम्हारि लिहलीं। सोरह बरिस हो गइल बियाह के। का दिहनी हम उनका के। बिना रार कइले, बिना कवनो उमीद के बस साथे खाड़ हो गइली।

मन्दोदरी अइसन। दुनियादारी समुझावे के कोशिश कइली। बाकिर झगरा ना, निहोरा से। चुगू के खिसियाइल उनकर चुप्पी हऽ। राति एको बजे पांचि आदमी के संगे अचके आ गइला पर खाना गरम मिले। कई बेर ओरहन जरूर देस, "पहिले बोलि दिहितीं त बढ़िया से बना दिहितीं।" इस्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय के पढ़ाई में ई काहें ना सिखावल जाला कि बड़ लोग जवन कहेले ओकर मतलब उहे ना होखे।

एम.ए, एम०फिल०, पी०एच०डी० के कवनो पढ़ाई में कतही व्यावहारिकता सिखावल गइल होखे त बताईं। आदमी के भीतर के झंझावात सभे डिग्री जुटा के बाहर निकली त जइसे सादा कागद पर चिचिरी खीचल होखे। ओह पढ़इया के कवनो मतलबे ना बुझाई। जवना घरी बियाह भइल तबले चुगू डाक्टरी के पढ़ाई पूरा क लेले रहली। उनका बाबूजी के हमरा खानदान से नजदीकी बियाह के कारन बनि गइल, ना त डाक्टरे से बियाह करे क फेरा में रहे। राजनीति में उभरत लइका। का ठेकान बा का होई। बाकि सूजनी। हो गइल। चुगू खुश रहली। चुगू माने डा० मेधा प्रताप। घर में चुगू। ससुरारियों में चुगू। बाबूजी खुश। हाता के फाटक प सबके से अलग तख्ती लटका दिहले। घर में घुसत भरि आँखि तख्ती देखस। जोर के साँस आ छाती फूल जाइ। डाक्टरनी पतोहि। सबसे कहसु कवनो दिकत होखे त बेधड़के आ जइहऽ लोग। चुगू के का मिलल। राजनीति के नशा में डूबल मरद। न दिन के ठेकान न राति के। पाँच बरिस होत-होत दू गो बच्चा हो गइल। सब जिमेवारी चुगू उठवली। ई, बाबूजी रहले। इयाद नइखे, मरद, मेहरारु कबो छुट्टी मनावे आ घूमे कहीं दूर गइल होखस। अनंत रोवे-रोवे हो गइले। जे "अपना खातिर न्याय नइखे पर सकत। एगो इज्जत से बइठे के जगह नइखे जुटा सकत, ऊ दोसरा खातिर न्याय के गोहार लगावे जाता।"

बाकि एह दुनिया में, दुनियादरी ना होखला पर अइसही धरती प नरक भोगे के परी। ओकिल साहेब लोग के एह जिनगी पर गरब करि कि अफसोस। सब काम निपटा के अब ऊ वापस आ गइले। पार्टी में उनका सूझ-बूझ के बड़ाई होखे। अनंत के मन में वकील साहब के

पहिला पीढ़ी वाला होखे के बात निरास करे। राजनीति में ऊहो त.... उनका अपना प विश्वास रहे। कतनो लोग जमीन से उठि के कहाँ से कहाँ चलि गइले अपना दम प। दुनिया के राहि देखाई। अपना ज्ञान आ साधना जोर पर ऊ दुनिया के गुरु बनि जाई। ऊ राम के पूजा करे, उनका राहि प चले वाला आपन आदर्श मानसू। राम के नाँव प समाज में भेद करे के उनकर नेति ना रहे। एहि से छात्र जीवन से राम में आदर्श, आ अपना के अलग तरह के घोषित करे वाली पार्टी जुड़त गइले। नाँव-बस अनंत प्रताप। बाकि आगे-पीछे खाली साटिफेटे में रहे। आ, काम दिन-रात पार्टी खातिर लागल रहल। परिवार से प्रेम त अतेने रहे, लेकिन समय न। मेहरारु पर गरब रहे, भरोसा रहे। हर ओर से उनके सम्बल रहे। मेधा मेडिकल कालेज में सहायक प्रध्यापक। असय पार्टी के भीतर गवें-गवें आपन पहचान बनावते। कबो-कबो उनकर लेख अंगरेजी-हिन्दी अखवार में छपे। मेधा सबके देखावत फिरस। अब पार्टी अनंत के जिमेवारी के काम देबे लागल रहे।

अभी त मेधा अस्तपाल में बाड़ीं राति में बाचा भइल। भगवान का किरपा से सब ठीक बा, अनंत बाकि तहार रहल त जरूरी रहल हऽ।' पार्टी के काम से अचके भागलपुर जाये के संदेश पर बाबूजी से खाली बोलि के निकलत बेर बस अतने सुनले। चुगू सुनली, मुस्किइिली आ बिटिया के माथा प हाथ फेरत, अनंत खातिर आँखि मूँदि के प्रार्थना कइली।

संघ आ पार्टी के लोग पहिले पहुँचल रहे। अचके में आइल बाढ़ि से लोगन के जिनगी, घर-दूआर आ पशु सभे ब आफति आ गइल रहे। हफ्तन बीति गइल एहि तरे टेंट में सूतत आ लोगन खातिर काम करत।

अब जान-माल के क्षति के पूरा करे खातिर शासन प दबाब बनावे के रहे। कई गो अउरी रास्ता के साथे जिला में केस दरज कइल आ कानूनी कागज बनवावल जरूरी रहे। पार्टी के ओर से एकर जिम्मेदारी-मिलल अनंत के। पार्टी से जुड़ल आ समाज खातिर मुफ्त सेवा देबे वाला काबिल ओकिल के नाम तय भइल के सब कागज तयार करइहें। वकील शिवचन्दर खूब बहस करसु। अबही पाँचे बरिस भइल रहे। तबो खूब नाव कमइले रहले। अनंत अपना साथे कुछ लोगन के लेके भोरही पहुँच गइले जिला अदालत।

अबही जन-ओकिल-फरिच्दर, गँवे-गँवे आवते रहे लोग। एगो उमिरगन, झक-झक कपड़ा पहिनले, चार पाँचि लोगन के आगे-आगे चलत ओकिल साहेब से- पुछले 'शिवचन्दर झा वकील साहब कहाँ मिलेगे।'

'बाहर जाइये'। पीछे चलत एगो तरइस लेखा आदमी कहलस। अनंत आ संघ के लोग अचकचाताइल। बुझाता ढेर बड ओकिल रहल हऽ। पाँच-साल से ओकालत करत बाड़े। बइठे के बड़ जगहा त होइबे करी। ओपर से अतना नाव बा। अबकी एगो कागज पतर बेचे वाला गुमटी में जाके पूछल लोग। पहिले तारिख उ ध्यान न दिहलस। थोरे देर के बाद गूं गूं कइले आ हाथ से अदालत के हाता के बाहर के ओर जाये के इशारा कइलस। हाथ से। मुँह में पान के सवादु पीक भला कइसे फेको। बगल में खाड़ एगो अदमी बतवले- झा जी गेट के बाहर बइठेले। 'अच्छा' -अचरज लेखा लागता। बहुते ओकिल बाहर बइठेले। कवनो मँजल केस लटकइया बुझात रहे। कई गो झोपड़ी रहली स। सब पर अलग-अलग ओकिल के नाव। सबसे किनारहीं झा जी मढ़ई मिल गइल। साथ-सुक्षरा। कुर्सी पर बइठल ओकिल साहेब आ सामने चार-पाँच गो कुर्सी बीच में टेबल। अनंत ध्यान से देखले। सबके चेन में मिला के ताला मारल रहे। झा जी मुस्कुरइलें बुझि गइले कि ताला देखि के पाँच लोग अचरज करत बा। बाकि त ओहिजा के दुर्गंध से बइठल मुस्किल हो गइल रहे। झोपड़ी के ठीक बाहर के पानी बहत रहे। पानी आ पेसाब। अनंत बड़ अदालत में पेसाब करे के कवनो जोगाड़ त बा ना। त देवाल के आड लेके लोग 'मूत्र विसर्जन' करे। अतना की धार बहि के सड़क तक चलि जाए। आ झा जी मड़ई। जइसे सरजू के तट पर कवनो तपस्वी के कुटी। कइसे बइठ जानी एहिजा। बर्दास हो जाला। नाकि पर रूमाल राखत अनंत आ संग के लोगन के बेचैनी से झा जी एकदम से उदास हो गइले। शुरू में हमरो अइसहीं बेचैनी होत रहे। अब आदत हो गइल बा। पहिला पीढ़ी के ओकिल हईं अपना खानदान में बहुते रगरे के बा अभी एइजा।' अनंत रोवे रोवे हो गइले। "अपना खातिर न्याय नइखे पर सकत। एगो इज्जत से बइठे के जगह नइखे जुटा सकत, ऊ दोसरा खातिर न्याय के गोहार लगावे जाता।"

बाकि एह दुनिया में, दुनियादार ना होखला प अइसहीं धरती प नरक भोगे के परी। ओकिल साहेब लोग के एह जिनगी पर गरब करीं कि अफसोस। सभ काम निपटा के अब ऊ घरे लवटले। पार्टी में उनका बुधी औरू लगन के बड़ाई होखे। अनंत के मन के वकील साहब के पहिला पीढ़ी वाला होखे के बात निरास करे। राजनीति में ऊहो त.... उनका अपना प विश्वास रहे। कतना लोग जमीन से उठि के कहाँ से कहाँ चलि गइले अपना दम पर।

दस दिन हो गइल रहे बाहर रहत। कतना कठकरेज हऽ केहू। मेहरारू घरे त आ गइल रहली बाकि जनमति के अबहियों अस्पताल में राखे के परल रहे। कि संवसे घर अस्पताल में रहे। मन में अजीबे बुझाइ। अपना घर में लागल आगि के छोड़ि के, गाँव भरि के आगि बुतावल। का करस। पार्टी के हूकूम रहे। एह बाति खाती पार्टी में लोग बड़ाई करस। 'त कइसन रहे राउर भागलपुर के जतरा'। चुगू मुस्कियात पुछली त अतेत के बुझलस कि ऊ कवनो अन्हियार खोह में गिर गइले।

एह मुस्की के पाछे छिपल कई गो भेद, तकलीफ, उनकर अकेलापन- सब लउकत रहे अनंत के। गाड़ी प पार्टी के झंडा आ बइठ के पार्टी के आफिस में नमन आ सजल कमरा। का दिन का राति। कवनो ठिकान ना रहे, कब कहाँ जाये के परी, घर से कब निकल जइहें आ कब, कतना दिन प लवटिहें। बस बाबूजी आ चुगू से सुते के बेर बात जरूर करिहें। राह वाट जोहे के आदत हो गइल रहे एहू लोगन के। उनको चुगू के आँखि में अनंत खातिर प्रेम डमकत रहो। कतना दिन के लाढ आज तू जिंस आ जाकेट पहिनले बाड़ऽ। तनी लगाते-लजात अनत मुस्कियइले। आ तू! तू त कसहूँ रहऽ, ओतने सुनर लागेलू। इन्द्र देखि लेसु त अहिल्या लेखा तहरा खातिर राति के हमार भेष ध के चलि आवासु।' भरल देहि गेहुआ रंग आ चमकत आँखि। चुगू के देखि के अनंत के हिया जुड़ा जाई चल अब देरि हो जाई। लइकी भइला के छव महीना बाद आज दूनों बेकति सिनेमा देखे जात रहे। माई के लइकी राखे लेबे के जिद पर दूनो परानी अकेले के मोका मिलल रहे। अनंत के फोन बाजल। देखि करेजा धडकल आ मुँह पर खुशी के उदबेग। 'का भइल' चुगू इशारा से पूछली। चुप रहे के खातिर मुँह पर अंगुरी राखि के 'जी सर जी सर' खूब आदर से बतियावत अनंत के मुँह चमके लागल।' फोन कटते कहले।' भूपेन्दर चौधरी जी आसाम जाये के राहि में ए बेरा एइजे रूकि गइल बाड़े। 'मिले के बोलवले हऽ। भूपेन्दर चौधरी माने बिहार के प्रभारी आ पार्टी के सबसे बड़ नेता लोगन के। एह। 'त'

'त का..... सिनेमा छोडे के परी। चुगू चुप। घर चुप। अबहीं गधवेरिये भइल रहे, आ कूहा अइसन कि पोल प के बड़का लाइट, टिमटिमति ढ़िबरी लेखा लागे। ओही कपड़ा में ऊ गाड़ी में बइठ गइले। रास्ते में हरियर चना ले ले आवे के कहले रहले भूपेन्दर बाबू। 'सांझि होखते शराब के चुसुकी सुरू हो जाए। महंगा से महंगा शराब। लोग जानेला कि चौधरी साहेब के बाबूजी घरे घरे जा के दूध बेचस। लइकाई में त भूपेन्दर बाबू घरे घरे जासू। बाकी कालेज आवत-आवत ऊ छात्र नेता हो गइले। सुनर, सजीला, लाम लहकर। बड़ ओह समय के पार्टी के बड़ महिला नेता क नजर परल भूपेन्दर चौधरी छात्र नेता प। बस फेर का रहे। आजु त भूपेन्दर बाबू के कोठी दिल्ली के सबसे नीमन आ ऊँचा लोगन के कालोनी में रहे। 'असल समाज सेवा त राजनीतिये से हो सकेला। त भूपेन्दर बाबू खातिर हरियर निकियावल बूंट खरीदे खातिर चउराहा पर गाड़ी रोकले। बाहर निकलते बुझाइ कि देहिया जमि जाई। एगो मेहरारू एगो दस बारह बरिस के लइका हरियर चना निकियावत आ सामने बराबरवे रखले बइठल रहे लोग। माई-बेटा। अनंत के देखि के उ लोग उमेद जागल। एह कूहा में गाहक कहाँ। दूनो निकियाँवसऽ आ सामने छोटी-मुटी दउरी में रखात जास। बाकि लइका कबो-कबो गंवे से एक आध मुठी अपना बोरा के नीचे राखि ले। कबो कबो बडा उमेद से देखे कि कतना रखाइल बा। घरे जाके माई से घुघनी बनवाइब। अबहिये घुघनी के सवाद ओकरा मुँह में घुलत रहे। थोरे देर चुपचाप खाड़ रहले। दूनो के निकियावत आ लइका के हरकत देखत अनंत मुँह प हँसी आ गइल।

'कतना होई' बूंटवा'?
'तउल देतानी'
'तउलऽऽ'
'डेढ किलो में थोरे कम'
'आह अतना में कइसे होई
'ठीक बा राखऽ हम देखतानी दोसर जागे'
'ले लीं ना बाबू' कतना चाही रउरा के'
'कम से कम डेढ़ किलो चहबे करीं?

लइका के माई, बोरा के नीचे लुकावल बूंट के ओर देखली। लइका लउकल जइसे बाझ, गौरइया पर झपट्टा मारे के तइयारी में होखे।

'दे द काल तहरा के बना देबि घुघनी। बस खाली रोवले ना बोरा के नीचे से चना निकाल के आइसे दिहले जइसे टटके बियाहि के आइल लइकी कवनो डकइत के आपन कुल्हि गइना उतार के देत होखे। बाकि रास्ता का रहे। 'अनंत पइसा दिहले, चना के प्लास्टिक लिहले। आ आधा चना ओह लइका के बोरा पर गिरा दिहले। 'जइसे यमराज सावित्री के तपस्या से खुश होके सत्यवान के प्राण लवटा देले होखस।' 'तहार करेजा ना फाटि गइल हा तनकी से पइसा खातिर एह बाया के चनवा लेत' 'बाबू...माई हईं। हमरा से अधिका केकरा बुझाई। 'बाकी जब भूख लागेला

नू त सबसे पहिले नेम-धरम आ मोह-माया खा जाला। अनंत कठुआ गइले। 'हूं' मुड़ी हिलावत जल्दी से गाड़ी में बइठ के चलि दिहले। पाँच सितारा होटल के 'सुईट'। माने पूरे एगो घर। आधे घंटा बाहर, बइठला के बाद भीतर से संदेश आइल। ओह! गमक अइसन कि सांस लेके छाति फुला लीं। सामने सोफा पर भूपेन्दर बाबू। अझुराइल माथा के बार, खादी के कुर्ता-पायजामा बिना प्रेस कइल आ मुँह प मुस्की। बगल के सोफा पर हलुक गुलाबी रंग के सिलिक के साड़ी का करिया रंग के कुर्ती पहिनले पूनम जी बइठल। दूनो लोग पारा-पारी डाँर तक झुक के प्रणाम कइले। भूपेन्दर बाबू के हाथ के इशारा पर के सामने के सोफा प बइठत पूनम जी प ध्यान गइल। थाकल लागत रहली। बड़ नेता हई। बहुत काम होई।' अनंत के ले आइल हरियर चना, बरफ आ बाकी सब सजि गइल। दू गो बेइरा ऐ लोग के सेवा में रहले। तीन गो गिलास बनल। अतना लोगन के संगे बइठे आ सीधे पीये के पहिलका मोका रहे। सकुचात आ अपना प गरब करत।

'हमार त जिनगी देश आ समाज के सेवा खातिर त्याग दिहल बा। तू त जानते होइबऽ। सब दुःख तकलीफ एही देश के गरीब जनता के भलाई खातिर उठावल हमरा जिनगी के मकसद हऽ। अनंत के नजर ओह सुईट में घुमल। सामने राखल व्हीस्की। बगल में बइठल पूनम जी। 'इनर के इनरासन असहीं नू होई।' आधा राति बीते लागल रहे। अब अनंत के जाये इशारा भइल। पूनम जी बगल के कमरा में रहि जइहें। समाज-सेवा में ई कुल त सहज बाति ह। रास्ता भरि उनका भूपेन्दर बाबू के कहल घूमत रहे। 'अब आपन क्षेत्र तइयार राखऽ' चुगू से कहले। 'चलीं। रउरा तपस्या के राउर पाटी चिन्हें लागल बिया।' मुँह-हाथ धोके बिछावना ओठघंल अनंत के लागल चुगू के पांखि लागल बा। उ सामने धीरे से नाचत इनकर तपस्या भंग करें के जतन करत बाड़ी। हाथ आँचर पर गइल। धीरे से छाती प हाथ फेरत आगे के बटम खोले लगले। चुगू के आँखि मुंदाये लागल रहे। सामने सपना साँच होखत लउके लागे आ संगे चुगू अइसन साथी ह त। बस, गंगा सोनभद्र समा गइले एक-दूसरा में। साल भरि रहि गइल रहे चुनाव के। सब पार्टी एक दूसरा से जुड़े आ आपन दांव खेले के फेरा में रही स। कवनो राजनीतिक बिचार आ नीति ना रहे। जेकरा जहाँ गंव लागे। हरेक जागो सकुनी आपन चउसर आ गोटी लेके बइठले रहले। जेकरा उमेद रहे, उ अपना क्षेत्र पार्टी के नेता लोग, अखबार, पत्रकार आ धन बल जुटावे के फेरा में रहे। पार्टी क लोगन के लागे कि उ त एकर रीढ़ हवे। दोसरा पार्टी के बरियर, पइसा आ सम्पर्क बालो लोग अपना-अपना दांव से पाटी में घुस जाए। अनंत के दिन-रात के पते ना चले। पाटी में सबके लागे कि इनका क्षेत्र में इनसे जादा लायक आ लोगन के सुख-दुख में रहे वाला दोसर के बा। इनका के त भूपेन्दर बाबू पसुगैबत में, बोला के कहले रहले। जब बात होखे आ इ कहीं सामने परस त आखि के इशारा से बतावस। तू ना त दोसरा के। उहे परभारी बाड़े। पाटी के भीतरो एह लोग मानी लेले रहे। अध्यक्ष जी त हँसत कहिये दिहले एगो बइठक में। अनंत त जीतिहे त पहिलेके बेर में मंत्री बनी जइहें। कुछ लोग मुस्कियाइल, कुछ लोग के गात जरल। अनंत हाथ जोड़ी के आँख मूंदि लिहले।

एह एक बरिस में अपना क्षेत्र के गाँव-गाँव सबका बीच में घूमले। मिलले। उनकरा बेरा प अटले। हर नेता, हरेक समाज के बीचे उनकर पइठ रहे। प्रदेश का हो दिल्ली तक पता न कतने बेर मिलले। हाथ जोड़ले। दलन के आपस के मोलभाव हो गइल रहे। बटखरा प जे भारी, ओकर जादा हिस्सादारी। अइसे त काल रातिये से टिकट फाइनल होखे आ नाँव के चरचा जगहे-जगहे रहे। आज तक भूपेन्दर चौधरी आ प्रदेश के पाटी अध्यक्ष नाम सुनावे आ चिठी निकाले वाला बा लोग। भूपेन्दर जी रहले, अध्यक्ष जी आ सउँसे पार्टी रहे बाकि राहि देखात रहे कि दिल्ली से का आई। ठीक मध दूपहरिया। झीम-झीम पानी बरिसत। आ पार्टी के आफिस छपछप भरल। भोज करेवाली पाटी के टिकट माने जीते के गारंटी। कुछ ना त आधा त रहबे करी। आ फेर शासन त बा। पार्टी के मिटिंग हॉल में अध्यक्षजी भूपेन्दर चौधरी आ बाकी नेता लोग बइठल। दिल्ली के हुकुमनामा आ गइल रहे। अनंत के क्षेत्र के नम्बर आवत-आवत इनका देहिं के खून माथा आ आँखि प चढ़ि गइल रहे। परीक्षा दिहल आ ओकरा परिणाम के राहि ताकल एगो बाति ह। आ छपि गइल रिजल्ट देखल दोसर। नाँव सुनावल गइल। चन्दन महतो। नरेश महतो के बड़ बेटा। सातवाँ पास। नरेश महतो केन्द्र में मंत्री। अरबो रुपया के हेरा-फेरी के लांछन। बाकि बडका नेता लोग के नजदीकी। भूपेन्दर त नरेश महतो के गोड़ घुमावस। चन्दन महतो। उम्मीदवार हो गइले। थोरे देर त अनंत के कुछु सुनाइये ना देइ। भूपेन्दर अनंत के ओरि देखि भरल सभा में त कहले। चन्दन के जितावे के जिमेदारी अनंत के रही। बहुत मेहनत कइले बाड़े। चन्दन के इशारा कइले, कहीं पहिले से पढ़ावल रहे। चन्दन आके भरल सभा में भरि पांजा अंकवारी में बन्हि

लिहले अनन्त। भइया, अब हमार नाइ त तहरे खेवे के बा। हम त कबो गइलो नइखीं। बरियार। चन्दन मुस्कियाये के कोशिश कइले। भूपेन्दर के सामने अइले। बुझाइ कि जइसे कुछ भइले ना होखे। 'एक दम जिता देबे के बा चन्दन के। घर के लइका ह।' दुपहरिया ढलत रहे। बरखा रूकल रहे। आ चटक धाम बुझाई चमड़ी जरा दी। बदरकट घाम आ दू-मूँहा आदमी। भूपेन्दर चौधरी। केहू कइसे अतना बेकरेज आ बेसरम हो सकेला। घरे खबरि चलि गइल रहे। अनंत निकलले घर खातिर। घरी भरि में सब कुछ बदलि गइल रहे। गाड़ी हाई कोर्ट के सामने से गजरे लागलि त उनका नजर एगो तोता लेके करम बाचें वाला प परल। गाड़ी रोकले। एह बदरकट घाम में एगो छाता लेके जो रोड के किनारे बइठल होखे। उ दूसरा के नीमन दिन के आस बन्हावता। कबो यह सब तंत्र-मंत्र, ज्योतिष में भरोसा न करे वाला जिनगी के रंग देखते रहे। 'कतना कमा लेनी महराज' पंडित जी- पहिले त अचकचइले, बाकी अनंत पर नजर परते दया आ गइल। सडके प बइठल, जे आवेला तोता से भाग बँचवावे, अइसन रोजे देखेले। रोज त हमरो आ परिवारो के खाये भरि हो जाला। एह बरखा आ दोगला घाम में त तोताराम के खाये भरि हो जाई। अनंत पाकिट में हाथ डलले। पाँच सई दू गो नोट।

लीहीं महराज।अचरज में भरल अनंत के गाड़ी जात देखत रहे। कवनो बाति नइखे। इ त होते रहेला। 'राजनीति ह।' बाबूजी के हाथ कान्हि प परल। सांझि के मन भरि के नहइले। कपड़ा पहिनले आ बाहर बालकनी में आ बइठ गइले। खायेक बनल। ठंढा हो गइल। घर में सब लोग सुते के नाटक करे लागल। चुगू कबो अनंत संगे बालकनी में त कबो बुचिया कबो माई बाबूजी किहाँ। अनंत के दुःख में सभे जुड़ल/ बोले केहू ना।

X X X

कब राति बितल के जाने। कई बेर पानी के जग खाली हो गइल रहे। आराम कुर्सी प करवट बदलत।

X X X

गरम कॉफी के दूगो मग बगल के टेबुल प राखत दोसरा कुरसी प गंवे से बइठली। अनंत! तू राम के कथा में रमि जालाऽ। कतने बेर 'मानस' पढ़ले होइब।' कॉफी के मग मुँह से लगावत बहुत ध्यान से चुगू के ओर देखले। जइसे नापत होखस। कोसिला माई त एगो अदना राजकुमार जन्मवले रहली। अइसन लाखो राजा भइले आ मरि गइले। ऊ त माता कैकई रहलि कि एगो सामान्य से राजकुमार के भगवान बना दिहली। भगवान शिवजी लेखा सबे बिष ही अपने पी के धरती के राक्षस के अत्याचार से मुकुत करे के राहि बनवली। 'एगो सधारण राजा से भगवान बना देबे के ताकत माता कैकई आ उनकर विरोधे में त रहे।' 'अब तहरा सामने संसार खुलल बा।'

अनंत चुगू के ओर अइसे देखले जइसे सामने जिनगी के अन्हियारा काटे वाली रोशनी होखे। सामने सुकवा उगि गइल। ओह राति के अन्त आ नया दिन के सुरुआत के निसानी। अनंत के सुकवा सामने बइठ के इनके जिनगी के नया दिन शुरू करे के विस्वास भरि देले रहें।

❑ मेन रोड, बुद्धा कालोनी, पटना 800001

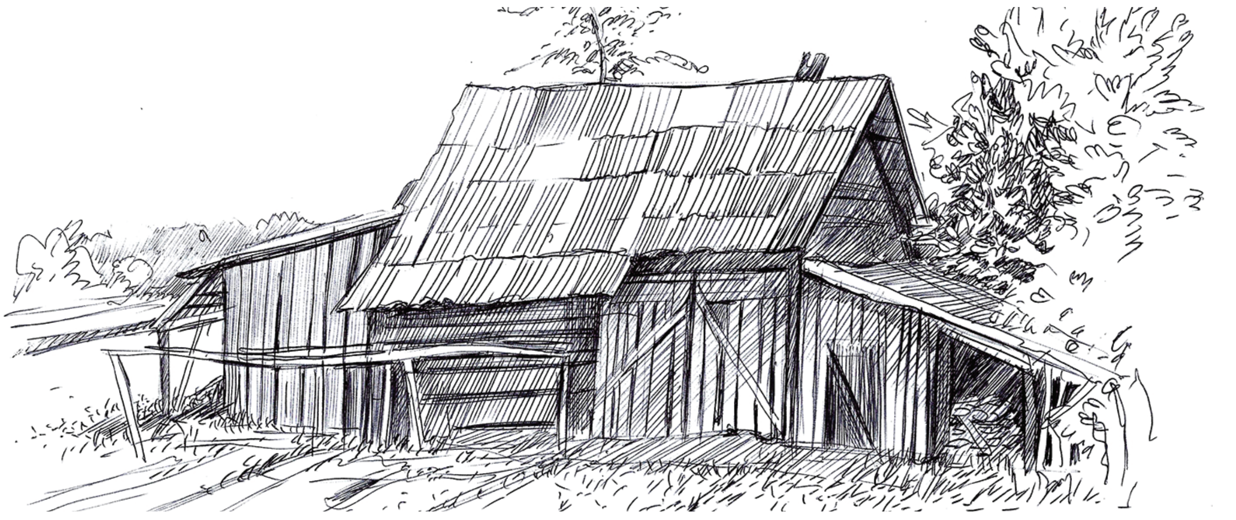

दिल के एगो टुकड़ा
तीस बरीस

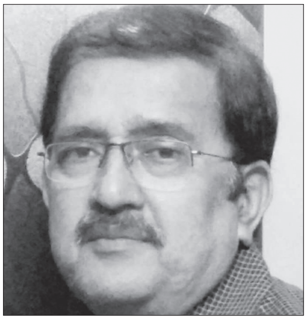

✍ डॉ0 ओम प्रकाश सिंह

एह दू गो शब्दन के भीतर पूरा जिनिगी समाइल हो सकेला। तोहरा हँसी के आवाज त अब लगभग बिसरिए गइल रहे, बाकिर नेह के ई अजीब रीत बा कि ऊ कबहूँ ना बिसरला। जइसे ही तोहके देखनी, हमनी के बीच के बरीस चुपचाप सिमट गइल। जइसे कवनो दराज में मिलल पुरनका चिट्ठियन के कवनो फेरु से पढ़े के मौका निकल आइल।

ओह घरी हम बरिस ना गिनत रहीं, बस दिल के धड़कन गिनत रहीं। कतना बात पूछे के मन होत रहे। का जिनिगी तोहरा संगे नरमी से पेश आइल? जब तू डगमगइलऽ, त तोहरा संगे के खड़ा रहल? का केहू जानत रहे कि जब तू साँचो मुसुकियालऽ, त तोहार आँख कइसे सिकुड़ जाले?

तब बुझाइल... हम ओह बरिसन खातिर ना रोवत रहीं जे बीत गइल। हम त ओह बतियवला खातिर दुखी रहीं जे हमनी के बीच कबहूँ होखबे ना कइल। ओह परब-तिवहार खातिर, जहाँ तोहार जगहा खाली रहल। ओह साधारण साँझ खातिर, जे चाय के एगो कप, बेकार के बहस, अधूरा कहानी आ चैन भरल चुप्पी संगे बीते के चाहत रहे।

'तोहके याद बा?' कहे लायक पूरा जिनिगी भूला गइल, याद बने से पहिलहीं। मन करत रहे कि सब कुछ तोहसे कह दीं। बताईं कि तू कतना बेर हमरा सपना में अइलऽ आ हर बेर धुँआ नियर उधियात निकल गइलऽ। सोचले रहीं कि अब भेंटइबऽ त बान्ह लेब, जाए ना देब। बाकिर रोक कहाँ पावत बानी ?

ओह परिवार के कहानी सुनाईं, जे तोहरा गइला से खाली जगहा के अपना भीतर समेटलो बढ़ते रहल। ओह जीतन के बात बताईं, जवन आधा मुस्कान से मनवनी, काहे कि ताली बजावे वाला सभे में एगो हाथ हमेशा गायब रहल। ओह हार-पीर के बताईं, जवन असहनीय रहे। ओह दिनन के बताईं, जब खाली एहसे मजबूत बने के नाटक कइनी कि बड़ भाई से ईहे आस कइल जाला कि ऊ हर हाल में मजबूत रही।

बाकिर जब अब मिलनी, त बस हलुक-फुलुक बतकही भइल। शायद एहसे कि जे दिल बहुत पीरा सह लेला, ऊ धीरे-धीरे फुसफुसा के बोले सीख लेला। शायद एहसे कि कुछ एहसास एतना डेराइल होले कि शब्दन में उतरिये ना पावे। फेरुओ, हर नजर, हर मुस्कान, हर ठहराव में, तीस बरिस चुपचाप आपन कहानी कहत रहल।

आज तू फेरु हमार सामने खड़ा बाड़ऽ, हाथ में सूटकेस लेले, जाए के तैयारी में। मन फेरु ओही पुरान पीरा से भर गइल बा। ई दुख हम जानत बानी। ई उहे दुख ह, जब केहू दूर जात होखे आ मन के हर कोना के चाहत रहे कि ऊ रुक जाव।

बाकिर नेह... अब बुझाइल कि नेह कवनो हक जतावे के नाव ना ह। नेह त ई बा कि काँपत हाथ आ चेहरा पर मुस्कान लेके दरवाजा पर खड़ा रहल जाव, ताकि आपन डर दोसरा पर बोझ ना बने। मन करत बा कि कह दीं रुक जा! मत जा। बाकिर कह नइखीं पावत !

किस्मत से बस एगो साधारण दिन माँग लीं, जवन हमनी संगे बिता सकींर्य बिना घड़ी के टिक-टिक गिनले, बिना उधार के समय पर जीयले। बाकिर जिनिगी फेरु उहे सीख देतिया- ओह बात के मान लिहल जाव, जेकरा के दिल माने से इनकार करेला।

आज हम अपना के बड़ा बेबस महसूस करत बानी। एहसे ना कि तोहरा से कम नेह बा, बलुक एहसे कि नेह कबहूँ समय, दूरी आ किस्मत से बरियार ना रहल। ऊ त बस इंतजार करेला। एक बेर तैंतीस बरीस से बेसी इंतजार कइले बा। जरूरत पड़ल त फेरु कर ली। बाकिर एह बेर भगवान से बस एतने अरदास बा कि फेरु एह इंतजार के नौबत मत आवे।

जब तूँ जात बाड़ऽ, त हम तोहरा से कवनो वादा नइखीं माँगत। शायद माँगे के हमार अधिकार नइखे रहि गइल। जिनिगी सिखवले बा कि वादा कतना नाजुक होला। हम त बस आवे वाला काल्हु माँगत बानी।
एगो फोन।
एगो आउर भेंट।

हमनी के चाल अउरी धीमा होखे से पहिले एक बेर फेरु संगे हँसे के मौका। एह बेर, एके खून के होके, अजनबी मत बनीं।

आज जब तोहके गले लगवनी आ तोहार अँगुरी अपना अँगुरी में कस के पकड़नी, त ऊ खाली एगो सनेह के आत्मीय छुअन ना रहे। ऊ त पूरा जिनिगी के अनकहल आँसू रहल, जे आखिर अपना घर के राह खोज लिहलस। हर अनुत्तरित सवाल। हर ऊ दुआ, जे मरे से इनकार करत रहल। आ जब तू दरवाजा पार ओझल हो जात बाड़ऽ, त हम अपना भीतर से उहे पुरान पराथना फुसफुसात बानी-

“ई राह हमेशा तोहके फेरु हमरा लगे ले आवे। हमार नेह आ दुआ हमेशा तोहरा के सुरक्षित, सलामत आ सुखी राखो।”

बी-1/1205, कावेरी अपार्टमेन्ट्स
जे० मिश्रा पार्क के निकट, गेट सं०-7
गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ-220010

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

मनोज भावुक के गजल

✍ **अशोक द्विवेदी**

भोजपुरी गजल के लमहर आ पोढ़ काव्य-परम्परा में मनोज 'भावुक' नाँव अइसहीं चर्चित आ लोकप्रिय नइखे बन गइल। कहे के लूर-सहूर आ काव्य-कौशल के सीखत-साधत, जब मनोज के पहिल गजल-संकलन "तस्वीर जिन्दगी के" आइल, तब्बे खूब चर्चित भइल। मन-मिजाज से भावुक एह कवि का काव्यात्मक उरेह के सबसे बड़ खासियत-लय-गति से भरल रागात्मकता बा। तेजी से बदलत समय का साथ, विसंगतियन से भरल बेवस्था आ समाजिक ताना-बाना में, मानुस-जिनिगी त्रासद परिस्थितियन से गुजरत खा अइसन-अइसन बिद्रूप आ विडम्बना के साक्षात्कार करत बिया कि का कहल जाव, नेह नाता आ गृहस्थी के निबाहल आ सँजोवल आसान नइखे। विपरीतता से संघर्ष में आक्रोश आ क्षोभ के समंजन कइल आ ताल बइठावल कठिन बा। मनोज का शेरो-सुखन में जिनिगी के बहुरंगी 'अनुभूत-सत्य', समय-बोध आ सोच-बिचार बा।

संकलन-शीर्षक क एगो लाइन बा- "जब-जब जे महसूस करेले/गजल कहेले भावुक जी"। एके सोझ अरथ में लिहला का बजाय ई कहीं कि जब जवन महसूस भइल- तनी ठहर के, तनी अउर गहिरे महसूस भइल, तवना के शायर/कवि परोक्ष ढंग भा प्रतीकात्मक ढंग से कहलस। एही कहला के शायर के 'अन्दाजे-बयाँ' कहल जाला। संवेदन, बोध आ गहिर अनुभूतियन का घनीभूत प्रक्रिया से गुजर के भाषा पर अधिकार आ सिद्धि राखे वाला कवि जौन कुछ अभिव्यक्त/बयान करी, ओकर बाते कुछू अउर होई। कवि का एही कौशल के "अन्दाज़े-बयाँ" मानल जाला। भावन का उरेह में समर्थ कवि, भाषा के अपना अनुकूल बना लेला। शब्दन के वाजिब आ अरथवान उपयोग का साथ, ओके गति-लय दिहले में कवि-कौशल होला। 'शेर' कहे में सादगी, सुघराई आ असर पैदा करे के छुपल शक्ति कवनो गजल-गो के खास बनावेले। विविध भाव-विचार आ दृष्टि से संपन्न गजल-गो मनोज जी रउरा सभ के अपना शायरी से जरूर तोख आ तृप्ति दीहें, एकर विश्वास बा। इहवाँ आप सभे का आस्वाद खातिर मनोज भावुक के कुछ गजल दिहल जा रहल बा।

संपादक 'पाती'

✍ **मनोज भावुक**

(एक)

दर्द उबल के जब छलकेला गजल कहेलें भावुक जी
जब-जब जे महसूस करेलें उहे लिखेलें भावुक जी

टुकड़ा-टुकड़ा, किस्त-किस्त में जिये-मुवेलें भावुक जी
जिनिगी फाटे रोज-रोज आ रोज सियेलें भावुक जी

अपना जाने बड़का-बड़का काम करेलें भावुक जी
चलनी में पानी बरिसन से रोज भरेलें भावुक जी

हिरनी ला बउराइल मन भटकावे जाने कहाँ-कहाँ
गिरत-उठत अनजान सफर में चलत रहेलें भावुक जी

कुछुओ कर लीं, होई ऊहे, जवन लिखल बा किस्मत में
इहे सोच के अक्सर कुछुओ ना सोचेलें भावुक जी

आँच लगे जब कस के तब जाके पाके कच्चा घइला
अइसन दुख के दुपहरिया में जरत रहेंलें भावुक जी

पटना, दिल्ली, बंबे, लंदन अउर अफ्रिका याद आवे
जिनगी के बीतल पन्ना जब भी पलटेलें भावुक जी

जिक्र चले जब भी वसंत के, हो जालें बेचैन बहुत
आँख मूँद के जाने का-का याद करेलें भावुक जी

(दू)

फूल के अस्मिता बचावेके
काँट चारो तरफ उगावेके

ए जी ! बाटे बहार गुलशन में
आईं सहरा में गुल खिलावेके

ऊ जे तूफान के बुझा देवे
एगो अइसन दिया जरावेके

एह दशहरा में कवनो पुतला ना
मन के रावण चलीं जरावेके

तय कइल ई बहुत जरूरी बा
माथ कहवाँ ले बा झुकावेके

आईं हियरा के झील में अपना
आशिकी के कमल खिलावेके

काम उम्दा करीं, जो ललसा बा
पीठ पीछे भी मान पावेके

जिस्म जर जाई एक दिन 'भावुक'
रूह के रूह से मिलावेके

(तीन)

हजारो सपना सजा के मन में चलत रहेलें मनोज भावुक
गिरत रहेलें, उठत रहेलें, बढ़त रहेलें मनोज भावुक

एह जिंदगी के सफर में उनका तरह-तरह के मिलल तजुर्बा
ओमे से कुछ के गजल बना के कहत रहेलें मनोज भावुक

ऊ जौन भोगलें, ऊ जौन देखलें, ना भोगे आगे के नस्ल ऊ सब
एही से आपन कथा-कहानी लिखत रहेलें मनोज भावुक

के भाई कहके बनल कसाई, के गोद लेके करेज कढ़लस
उठा के एल्बम चिन्हें के कोशिश करत रहेलें मनोज भावुक

बा दर्द एतना अधिक कि जाने कहाँ अँटावस ए छोट दिल में
एही से ओके गजल में अपना भरत रहेलें मनोज भावुक

ना जाने केकरा से गप करेलें ई बंद कमरा में बुदबुदा के
केहू ना बूझे, हिया के घड़कन सुनत रहेलें मनोज भावुक

दुआर- अँगना टहल-टहल के, गजल कहे के लकम बा लागल
कहेला घर भर कि कादो-कादो बकत रहेलें मनोज भावुक

एने जरत बाटे 'रोम', ओने महल में 'नीरो' सुनत बा बंसी
लगेला ओइसे गजल में अपना झुमत रहेलें मनोज भावुक

करेलें कोशिश गजल लिखे के मगर अभी ले लिखे ना आइल
बस आदतन ही कलम उठा के घिसत रहेलें मनोज भावुक

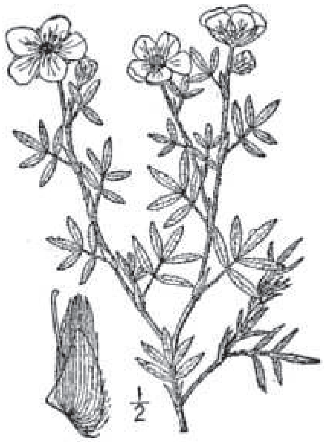

(चार)

बात पर बात त होते बा, ओराते नइखे
कवनो दिक्कत के समाधान भेंटाते नइखे

भोर के आस में जे बूढ़ भइल, सोचत बा
मर गइल बा का सुरुज रात ई जाते नइखे

सुनके जालिम के हुकुम बाज रहल बा ताली
सामने जुल्म के अब मुट्ठी बन्हाते नइखे

न्याय के कान में रिश्वत के बा लागल ठेपी
कवनो लाचार के आवाज सुनाते नइखे

ओद काठी बा, हवा तेज बा, किस्मत देखीं
तेल भरले बा, दिया-बाती बराते नइखे

मन के धृतराष्ट्र के आँखिन से सभे देखत बा
भीम असली ह कि लोहा के, चिन्हाते नइखे

बर्फ हऽ, भाप हऽ, पानी हऽ कि कुछुओ ना हऽ
जिन्दगी का हवे, ई राज बुझाते नइखे

दफ्न बा दिल में तजुर्बा त बहुत, ए 'भावुक'
छंद के बंध में सब काहें समाते नइखे

(पाँच)

जिगर बेताब, दिल बेचैन बा, अँखिया लोराइल बा
चिहुक जातानी रह-रह के, कि उनकर याद आइल बा

पढ़त बानी पुरनका खत, हँसत बानी समझ के ई
कि लिखते-लिखते कुछ खाली जगह काहे छोड़ाइल बा

सफर में साथ रहले ते हवा में भी रहे खुशबू
बिछड़ला पर लगल मधुमास में पतझड़ समाइल बा

सितारा, चाँद, सूरज, दीप कुछुओ काम ना आई
अगर जीवन में अँधियारा ही अँधियारा समाइल बा

अलग होखे के मन केहू के घर में ना रहे, बाकिर
तनी सा जिद्द, तनी सा बात पर अँगना बँटाइल बा

बताईं चिख के 'भावुक' जी कि एकर स्वाद बा कइसन
ई हमरा दिल के कोल्हू में गजल ताजा पेराइल बा

(छ)

तू हीं जिन्दगी, तू हीं हर खुशी, तू हीं रूह के हऊ शायरी
तू हमार पहिला पसन हऊ, ए इयार तू हीं त आखिरी

हईं चाँद हम त तू हईं राग हम त तू रागिनी, इहे प्रीत ह,
इहे दोस्ती चाँदनी, हईं सूर्य हम त तू रोशनी

मोरे रूह में, मोरे साँस में, तू त बस चुकल हऊ ए तरे
तोहे पावे के, तोहे खोवे के, भला डर कहाँ बा ए संगिनी

उहे आग सबका जिगर में बा, भले राह बाटे जुदा-जुदा
केहू कर रहल ह धुआँ-धुआँ, केहू दे रहल हवे रोशनी

ए सफर में हम जहाँ भी मिलीं, मिलीं एह तरे, अरे हमसफर
न ही 'तू' रहे, न ही 'हम' रहे, इहे भावना हवे आशिकी

(सात)

उम्र के धूप चढ़ल, धूप सहाते नइखे
हमरा हमराही के ई बात बुझाते नइखे

मंजिले इश्क में कइसन ई मुकाम आइल बा
आई लभ यू त सनम हमसे कहाते नइखे

देह अइसन बा कि ई आँख फिसल जाताटे
रूप अइसन बा कि दरपन में समाते नइखे

साथ में तोहरा जे देखलें रहीं सपना ओकर
याद आवत बा बहुत याद ऊ जाते नइखे

हमरा डर बा कहीं पागल ना हो जाए 'भावुक'
दर्द उमड़त बा मगर आँख लोराते नइखे

नाहीं चाहीं धन, नाहीं चाहीं पद, ना बा अउरो कुछुओ के लालसा
ई सकून मन के बनल रहे आ बजाईं चैन के बाँसुरी

ए सफर में जे भी खुशी दिहल, कहे दिल सदा ओके शुक्रिया
कहाँ दिन ढले, कहाँ रात हो, का पता कि कब ले बा जिंदगी

भला कब ले इश्क के आग में इहाँ रात-दिन जरे 'भावुक'
मजा नइखे तब ले कि जब ले हो, बिना हमरा तहरो लगे कमी

शशि प्रेमदेव के गजल

जिनगी के फेंड़ पर असरा के पात

✍ डॉ0 विष्णुदेव तिवारी

विजयदान देथा के एगो प्रसिद्ध कहानी ह 'आशा अमरधन'। एह में, दूगो छोटे-छोटे बच्चन आ उहनी के ऊपर उहनी के मयभा महतारी के द्वारा कइल गइल जुलुम के कहानी कहल गइल बा। जबले बच्चन के मन में आशा आ विश्वास बाँचल रहत बा, तबले उहनी के जानो बाँचल रहत बा। जइसहीं आशा खतम होत बा, निरछल हृदय बच्चन के जानो खतम हो जात बा। ई करुण कहानी बतावत बा कि असरे जिनगी के जान ह। भोजपुरी आ हिन्दी के, अपना नियर अपने कवि, शशि प्रेमदेव, अपना एगो शेर में ई बात एह तरी बतावत बाड़न-फेंड़ झुराई ना जिनगी के, जहिया ले/ बा हरियर असरा के एगो पात 'शशी'

सब के जिनगी में सुरुज के ललाई आ चनरमा के लुनाई ना रहे। कतने लोग तऽ अन्हरिए में जनमेला आ अन्हरिए में मर-खप जाला। कबो- कबो तऽ ई अन्हार पुरखन-पुरनियन से सँसरत बाद के पीढ़ियन तक चलत चलल आवेला आ कइसनो जोत के कवनो झाँक तक ना मिले। बाकिर, जे प्रकाश के चाह में, असरा के किरिन ना छोड़े, जीवन से जूझेला- उहे जीवन के मरम बूझेला आ अन्हारो के मस्ती में पीयत दोसरो खातिर एगो प्रेरन-जोत जला के विदा लेला। बकौल प्रेमदेव-बनि के दीया जरे के आन्हीं में/ भूत सिर पर सवार बा आजुओ
अन्हार, आन्हीं आ अनुभव के कोख एके ह/एकरा के आँचर में बान्ह के राखे के चाहीं।

साहित्य में अनुभव के महत्व तऽ बड़ले बा बाकिर अनुभवे मए चीजु ना होला। असली चीजु ह अस्तित्व-बोध। एह अपार संसार में दोसर लोग कहाँ बा आ का कर रहल बा से बेसी जरूरी ई जानल बा कि हम कहाँ बानीं आ का कर रहल बानीं? जबले रउआ अपना के नइखीं जानत तबले दोसरा के कइसे जान सकत बानीं? प्रेमदेव अपना एगो गजल में एह बात के बड़ा सहज ढँग से कहत बाड़े-

धीरे-धीरे आगे डेग बढ़ावे सीख रहल बानीं
अब हमहूँ जिनगी के थाह लगावे सीख रहल बानीं।

हाथ बढ़ाके तरई तूरे के सपना कइसे देखीं
अबहीं तऽ माटी में फूल उगावे सीख रहल बानीं।

केतनो तीत रहल होखे भा केतनो मीठ रहल होखे
हर बीतल घटना के हम बिसरावे सीख रहल बानीं

हम का बीनब रउआ के फाँसे खातिर जंजाल 'शशी'
हम तऽ अपने अझुराहट सझुरावे सीख रहल बानीं

सहजता शशि प्रेमदेव के काव्य के मुख्य गुण ह। हर आत्मबोधी कलमकार के ई मुख्य गुण होला। साहित्य के समझ से, सहजता आत्मबोध के कार्य ह। एकर कारण सजगता होले। अपना एगो आलेख 'बलिया जनपद के काव्य-परंपरारू भाषा के ठेठ-ठाट पर समय आ समाज' में डा० अशोक द्विवेदी शशि प्रेमदेव के सधल आ सचेत रचनाशीलता के कवि कहले बाड़न। गजल कहे में सचेत होखे के मतलब ई भइल कि एहिजा बह्र र, काफिया, रदीफ आदि के अनुशासन भंग मत होखे आ जवन कहाउ, ऊ माथे चढ़े, धूहा के टाटी बन के मत रह जाउ।

भोजपुरी में बढ़िया गजल लिखेवाला लोग ढेर नइखे। जे ढेर नइखे, ओमे एगो महत्वपूर्ण नाँव बा शशि प्रेमदेव के। प्रेमदेव महत्वपूर्ण एह से बाड़े कि उनका अपना स्थिति के बारे में कवनो अझुरहट नइखे। उनकर पढ़वइयो उनका के लेके कवनो भ्रम में ना रहसु, काहें से कि उनकर सृजन बेअरथ तुकबंदी ना, जिनगी आ ओकरा जद्दोजहद से निकलल जथारथ ह-

साँच के कइसे छिपावल जा रहल बा, देखि लऽ
लाश के पानी चढ़ावल जा रहल बा, देखि लऽ

नीम, पीपर, बऽर के जबरन बताके बुर्जुआ
रेंड के माला पेन्हावल जा रहल बा, देखि लऽ

शोषक-शोषित वाला गर्-हल विचारधारा मद्धिम धार से गँवे-गँवे साँच के गर रेतेले। एकरा सुंदरता, श्रेष्ठता आ सामरस्य से घिरिना के हद तक चिढ़ ह। ऊ जहाँ चाहेले, जइसे चाहेले, जेकरा के चाहेले ओकरा के शोषित साबित कऽके ओकरा के सिरमौर घोषित कर देले आ जेकरा के चाहेले, जइसे चाहेले शोषक सिद्ध करके लतमरुआ बना घालेले। सबसे पहिले, विचारधारा लोगन के निरछल मन पर आपन अधिकार जमावेले फेर विद्या, शिक्षा, संस्कार आ संस्कृति के सुतंत्र के अपना गिरफ्त में जकड़ेले। आगे, छोटहन समाज से सरकत सत्ता आ शासन तंत्र पर आपन पकड़ एह तरी मजबूत करेले कि एकरा खिलाफ खाड़ होखे के हियाव केहू ना कर पावे। अंत में ऊ अपना गिरोह के कपारे पगरी बान्ह के हर ओह भाव, विचार आ तथ्य के होलरी जरावे शुरू कऽ देले जे कबो कवनो सभ्य समाज के मूल उत्स रहल बाड़े।

विचारधारा दाम आ काम के खेत में पनकल ऊ जहरफेंड़ ह, जेकर फर खाते लोग पगला जाला आ संसार सुधारे के ठीका ले लेला। ई सुधार सेलेक्टिव होला।

विचारधारा के शत्रु हर ऊ आदमी, समाज आ ओकर दर्शन होला, जे अपना तपस्या आ अध्ययन, धीरज आ बल-बउसाव, लगन आ तेजस्विता आ परंपरा से प्राप्त मानवीयता के कारन दुर्दिनो में चमकत रहल बा -

खूब गतरे-गतर फरी केहू/ठूँठ-जस देखि के जरी केहू

तब, कबो कवनो बहाना लेके, कबो कवनो बहाना लेके, विचारधारा के झंडाबरदार हर सुन्नर चीज के एनकाउंटर करें निकल परेले-

रो रहल बा सिवान में कुक्कुर/फेरु टूटी कहर, मरी केहू
का बिरिध का सयान का लरिका/फारि दी लाद ए घरी केहू

अब ई पाठक के मनोभूमि आ चेतना के ऊपर बा कि ऊ, ऊपर के पंक्तियन के भाव-संदर्भ केकरा से जोड़त बा। विचारधारा से हटियो के यदि आज के माहौल के देखल जाउ तऽ कमोबेश इहे लउकी कि हर जगह बड़ मछरी छोट मछरी के चबा रहलि बा। सामान्य जन बेबस आ अलचार बा, जेकर लाठी गम्हिराह बा, ओकरे बहार बा। जब मडररे आ लफुआ द ग्रेट लोग शासन आ सरकार के सर्वेसर्वा होइहें तऽ केअर मजाल बा कि ऊ कवनो अनेति के खिलाफ खोंखबो करी?-

दिन-दहाड़े अनेति समरथ के
देखियो ली तऽ का करी केहू

करे के तऽ बहुत कुछ कइल जा सकत बा, बाकिर जब अवकाते गायब बा, तऽ सब गायब बा। जन के अवकात गायब करे के कुचक्कर सुराज मिलते शुरू हो गइल रहे, बाकिर बुझात ना रहे। ओघरी देशप्रेम के जुनून रहे।

सुराज मिलला के बाद जनता के, देश के कर्णधारन से ढेरे आशा हो गइल। आशा रहे कि सब के आँख-ठेहुन सलामत रही आ सब चौन से मन मिला के, मन से खाई-पीही-गाई। देश तरक्की करी, त सबके मान बढ़ी। बाकिर, सब फटनासी हो गइल। सब त्याग, सब सोहाग-भाग अरपन, सब प्रेम-वेम बिला गइल। अपने कहाये वाला लोग अइसन करे लगले कि आत्मीय सम्बन्धन के हवे निकल गइल। जेकरा पऽ दया कऽ के आपन शक्ति आ धन अर्पित कइल गइल रहे, उहे दया के पात्र बना दिहल।अइसना स्थिति में, दुश्मन के दुकान चल निकलल-

जुलुम जब यार लोऽ के ना सहाला
सरन में आदमी दुश्मन के जाला

शशि के ई शेर एगो महत्वपूर्ण सृजन बा। एह में, एके संगे इतिहास के दर्शन आ वर्तमान के जथारथ के साथ भविष्य के प्रवर्तन के सूत्र अनुस्यूत बा। आदिकाव्य रामायण के सर्व विदित कथा के अनुसार लंकाधिपति दशशीश के खोभसन आ ताड़ना से दुखी होके विभीषण भगवान राम के शरण गहले। श्रीराम बेशक भगवान रहले, बाकिर रहले तऽ लंकेश के शत्रुए नूँ? लंका के अनैतिक राजा अइसन करनी कइले कि अपने छोट भाई के दुश्मन बना के, दुश्मन के शरण में जाए के विवश कऽ दिहले। विभीषण राम के भिरी अपना भक्ति के वजह से ना(भक्ति तऽ ऊ करते रहले) बलुक, अपना ऊपर होत आइल अपना अग्रज के जुलुम के वजह से गइले। साहित्य के पिता वाल्मीकि, ओह घरी, रावण के मनोदशा के वर्णन करत, जवन ऊ कहत बा, ऊ कहत बाड़े तऽ ई कतहूँ से नइखे जनात कि ई आज के जथारथ ना ह। लंकेश रावण कहत बा कि अपने लोग मोका परला पर आग लगावे, जहर देबे, शस्त्र चलावे, धन आ नारी के अपहरण करे में ना चूके। ई लोग अपना जाति भाई पर संकट अइला से बड़ा खुश होला बाकिर अतना कूर आ भयानक होखलो पर मन के भाव प्रगट ना होखे देला। विभीषण, तोरा छोड़ि के जे केहू दोसर रहित तऽ ओके जीयते ना छोड़ले रहितीं-

नित्यमन्योन्यसंहृष्टा व्यसनेष्वाततायिनरू।
प्रच्छन्नहृदया घोरा ज्ञातयस्तु भयावहारू।।५।।
,
योऽन्यस्त्वेवंविधं ब्रूयाद् वाक्यमेतन्निशाचर।
अस्मिन मुहूर्ते न भवेत् त्वां तु कुलपांसन।।१६।।
(युद्धकाण्ड सोरहवाँ सर्ग)

रावण ह तऽ पतित-पुलईं, बाकिर का जवन ऊ कहत बा, ऊ, आज के (भा आवेवाला काल्ह के) साँच ना ह?

आदमी के स्तिथि आ नियति हरमेस प्रकृति के निश्चित-नियत नियमन से आपन रूप ना गहें। ई जरूरी नइखे कि त्रेतायुग में कवनो विभीषण श्रीराम अस मर्यादा रक्षक वीर के शरण में जाके आपन कुल आ देश सँवरले तऽ

आजुओ के विभीषण अपना कुल, जाति आ देश के सँवारे आ श्रेष्ठ बनावे खातिर दुश्मन देश के अधिपति भा ओकरा पायकन के अँकवारी भरिहें। आज तऽ अइसन विभीषण लोग के संख्या बढ़ गइल बा, जे देशे में रहत बा, देशे के खात बा आ देशे के गरिआवत डफली बजावत बा। सिस्टम के छेद, वोट के राजनीति आ विदेश से फन्डिंग- भारत के जवन दुर्दशा कर रहल बा, ऊ अब अबूझ नइखे रह गइल। जाति, धर्म आ संप्रदाय के तथाकथित झंडाबरदार लोग सरेआम अत्याचार कर रहल बा। श्रेष्ठ आ शरीफ आदमी डरने पटुआइल बाड़े। तंत्र खामोश बा आ आदमियत बेहोश। जे देश जरा रहल बा, ओकरे पर जल ढारल जा रहल बा।

बाकिर युगद्रष्टा कवि चुपचाप ना बइठी। ओकर वेदना भरल मन देश के जन आ तंत्र दूनों से पूछी कि अइसन काहें आ कबतलक?-

धरम का नाम पर जारी रही उत्पात कहिया ले
डेराई आदमी से आदमी के जात कहिया ले

कबो घाटी, कबो जंगल से आई गाँव में हमरा
तिरंगा में लपेटल लाश के सौगात कहिया ले

पुजाई पाँव कबले, ए 'शशी' अलगाववदियन के
दिआ के सामने सूरुज चियारी दाँत कहिया ले

शशि प्रेमदेव के शायरी में दिआ, सूरुज, जोत, फूल, अन्हार जइसन प्रतीक आ-आके ई बता रहल बाड़े कि घमासान जारी बा। अनेति बेर-बेर जीतत बा। तबो आखिर में नेतिए-धरम जीती। सदियन से उगत-खिलत आइल संस्कृति जब विदेशी आक्रांता लोग से ना कुम्हिलाइल तऽ हई लूट मचा के, देश के धन पर ऐश करे वाला बिरिन्ही लोग ओकरा सुवास के कब ले टुँड़ियावत रही?

बाकिर कवि के आक्रोश अइसना लोगन पर जरूर बा जे सब बूझतो रहला पर अनबुझ बनल अपना के आ अपना जइसन कुछ लोगन के भरमावत पथ-समन्वय के राग अलाप रहल बाड़े-

सदियन से नूँ दुनिया देख रहल बाटे
हिन्दू मुस्लिम कहिया एक रहल बाटे

देश सबसे ऊपर होला। देश रही तबे सब रही। 'बटोहिया' के अमर गायक रघुवीर नारायण अपना देश के श्जग के निचोड़श कहले रहले। शशि प्रेमदेव अपना देश से अतना प्रेम करत बाड़े कि ऊ हर जनम में, हर

योनि में एही देश में जनम लेबे के इच्छा प्रगट करत बाड़े। अपना संगी-सँघतियन से बतियावत ऊ कहत बाड़े-

सरग-नरक कतहूँ ना जाइब, ए गुइयाँ
इहँवे फेरु लवटि के आइब, ए गुइयाँ

उटकरते तोहरा हम फेरु सुनुगि जाइब
भलहीं केतनो बेर बुताइब, ए गुइयाँ

किरिन बनब तऽ जूझब रोज अन्हरिया से
फूल बनब तऽ गन्ध लुटाइब, ए गुइयाँ

देश प्रेम के ई भावधारा हर श्रेष्ठ कवि के हृदय से उमगेले। कृष्णभक्त रसखान के सवैया आजुओ सहृदय पाठकन के हृदय में विराजमान बटुए। बंगला कवि जीवानानंद दास (1899-1954) अपना प्रसिद्ध कविता 'लौट कर आऊँगा फिर' में कहले रहले-

खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी के किनारे
फिर आऊँगा लौट कर एक दिन बंगाल में, नहीं शायद
होऊँगा मनुष्य तब, होऊँगा अबाबील
या फिर कौआ उस भोर का
फूटेगा नयी धान की फसल पर जो
कुहरे के पालने से कटहल की छाया तक
भरता पेंग, आऊँगा एक दिन!
(अनुवाद- प्रयाग शुक्ल)

कबो-कबो देश-प्रेम, जइसन कि कवनो प्रेम, हठवादी नृशंसता के नगीच-पास पहुँच जाला जे प्रायरू विपरीत भाव के प्रतिक्रिया में होला। एहिजे सचेत रचनाकार अपना के सहज भाव से संभार लेला, प्रतिक्रिया में ना बहे। साहित्य प्रतिक्रिया ना स्वभाव ह, भलहीं ओकरा पीठी पचास ना, पचास हजार प्रतिक्रिया लागल होखे।

शशि प्रेमदेव में साँच के साँच अस कहे के लूर बा बाकिर एकरा के कहे में ऊ साक्षी भाव के साथ स्वस्थ रहत बाड़े, इचिको कूर नइखन होत एह से काव्य के सुनराई अक्षत रहत बिया, ओह पर कवनों चिहार नइखे लाग पावत।

प्रेमदेव कवनो हाल में सर्जक के स्वभाव नइखन छोड़त। लाख अन्हार रश्मिस्रोत के बिरावत होखे, लाख झंझा झकोरत होखे, कवि दीया बन के अनवरत जरत रही। आज ना त काल्ह सूरुज के अपना भुलाइल सामरथ के पता जरूर लागी! सुरुज से तात्पर्य देश के हर संभाग के सर्वोच्च प्रतिभा आ अन्हार के मतलब ओहिजा तंत्र आ विधान के चूक से पोसात अनीति-अनाचार। कवि के उदासलो शब्दन में ओह ओज के निरेखल जा सकत बा, जे कवनो देश के अस्मिता के प्रमुख तत्व होला-

हाल ओसहीं हमार बा आजुवो
खंडहर घर-दुआर बा आजुवो

बनि के दीया जरे के आन्हीं में
भूत सिर पर सवार बा आजुवो

पीठ सूरुज कऽ के तरे ठोकीं
मोंछि अइँठत अन्हार बा आजुवो

सर्जना प्रकृतिगत होइयो के अध्यवसाय पर निर्भर करेले। ई वेदना के एगो अइसन नदी ह, जेमें हरमेस आँख खोलले पँवरत रहे परेला। रुकला पर डुबला के अलावे अउरी कवनो विकल्प ना बाँचे। हर महान सर्जक के जिनगी के नगीचा से देखला पर ई एकदम साफ लउक जाई कि ओकर पीर अपार रहे, चाहे ऊ आपन रहे चाहे आन के रहे। शशि के सर्जक के सबसे बड़ दर्द ई बा कि लोग उनके समुझल ना- पद्य होइयो के गद्य रहि गइलीं/ केहू हमरा के गुनगुनाइल ना

इहे दर्द-पीर महाकवि भवभूतियो के रहे, बाकिर उनकरा अपना कृति के ऊपर अथाह आस्था आ अगाध विश्वास रहे। शशियो प्रेमदेव भवभूतिए के परंपरा के कवि हवे।

ऊपर के शेर गजलकार के ओहू पीड़ा के इजहार बा, जेकर अर्थ ई खुलत बा कि ओकरा क्षमता के उपयोग संसार सही जगह आ सही दिशा में ना कर पावल। चाहे चूक जेकर होखे अइसन मलाल त रहिए जाला। एह शेर के सामान्य प्रेमिका के ओर से दर्द देबे वाला कार्य-व्यापार से भी जोड़ल जा सकत बा।

प्रेम के अभिव्यंजना वाला शेर भी शशि के पासे

कुछ कम नइखन स। एह में कुछ बेहतर, कुछ सामान्य आ कुछ कमतर बाड़े स। नीचे लिखल गजल देखे जोग बा, जेमें क्रमशः तीनों तरह के शेर आइल बाड़े स-

चान फक्कड़ मुसाफिर सफर में रहल
चाँदनी रात भर खण्डहर में रहल

ऊ भले दू घरी हमरा घर में रहल
फुसफुसाहट महीनन शहर में रहल

छाँह के सुधि रहे ना खबर घाम के
हाथ जबले केहू के कमर में रहल

दू गो अन्य सुघर शेर इहो बाड़े स-

आँखि जब फागुन के छलकत जाम जइसन हो गइल
हर पियासल दिल बदे पैगाम जइसन हो गइल

ओठ धइलस जइसहीं सूरुज- क्षितिज का ओठ पर
साँझ के सँउसे बदन गुलफाम जइसन हो गइल

एह शेरन में उपमा अलंकार के सरस आ विभोर कर देबे वाला प्रयोग इहनी के सुघराई में जादुई रंग भर देत बा। वाजिब शब्दन के चुनाव आ इहनी के दुरुस्त जगहन पर स्थापना से, प्रयोग पारंपरिक होखलो पर कथन-भंगिमा अभिनव लागत बा। दूसरा शेर में मानवीकरण के अलावे एगो मुग्ध करेवाली क्लासिक कारीगरी भइल बा। गजलकार कहत बा कि जइसहीं सूरज क्षितिज के ओठ पर आपन ओठ रखलस ओइसहीं साँझ के गाल गुलाब अस उग आइल। (मतलब सूरज डूबे वाला रहे। साँझ गुलाबी (सिंदूरी) हो गइल। एहिजा सूरज आ क्षितिज- प्रकृति के दूनों उपादानन के बीच के प्रेम-व्यवहार, दूनों के पुलिंग होखला से, उचित नइखे जनात। तब? बारीकी से देखला पर ई पता चलत बा कि गजलकार के कहनाम एहिजा ऊ नइखे, जवन ऊ कहत जनात बा। दरअसल गजलकार के सूरज के ओठ धरे के कथन के मतलब सूरज के ओठ धरे से ना, सूरज के किरनन के ओठ धरे से बा। क्षितिज पर सूरज होला ना, आभाषित होला, बाकिर किरन नभ, जल, थल सगरो होले। ऊ सूरज के बिसवला के बादो कुछ देर ले क्षितिज के अधरन पर आपन अधर रखले रह जाले। सूरज के किरन जसहीं क्षितिज के ओठ पर आपन ओठ धइली स तसहीं, साँझ के मुँह लाज के मारे गुलाबी-गुलाबी हो गइल। एह तरह, क्षितिज पुलिंग (रंग साँवर) आ किरण स्त्रीलिंग (रंग गुलाबी भा सिंदूरी)-- के बीच अधरचुम्बन भइल उचित बा, मधुर बा। बाकिर इहवें एगो प्रश्न अउरी उठ आवत बा- सूर्य के किरिन आ क्षितिज में प्रेम-भाव के झाँकी से साँझरानी काहें लजा गइली? आर्ष ग्रंथन में संध्या के सूर्य के पत्नी बतावल गइल बा। सूर्य के किरण सूर्य के पुत्री होखला से संध्यो के पुत्री भइली स। स्वाभाविक बा, जब सूर्य के किरन क्षितिज के संगे रागरंग में रंगा गइल होई लोग तऽ संध्या के बहुते लाज लागल होई। एही लाजे उनकर मुँह (गुलाबी) लाल हो गइल स्वाभाविक बा।

श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में आइल एगो प्रसंग से एह काव्य-भाव के संपुष्टि कइल जा सकत बा। श्रीरामचंद्र अपना छोट भाई लछुमनजी के साथे महाराज जनक के फुलवारी देखे आइल बाड़े। एने श्रीजानकीजी भी अपना सखी लोग के संगे में गौरीजी के पूजा करे आइल बाड़ी। संजोग अइसन बनत बा कि श्रीराम आ जानकी अचके आमने-सामने आ जात बा लोग। श्रीजानकीजी के छवि अलौकिक बा। श्रीराम के आँख उनकरा मुखचंद्र के निहारे खातिर चकोर बन जाता बा। उनकर पलक जस के तस अडोल हो जात बाड़ी स। मानसकार उत्प्रेक्षा करत कहत बाड़े कि अइसन जनाइलदृ जइसे निमिजी (जनकजी के पूर्वज, जिनकर वास पलकन पर मानल गइल बा) बेटी आ (भावी) दमाद के प्रेम में परल देख के, लाजे पलकन पर से हट गइलीं (जेसे पलकन के गिरल रुक गइल)--- 'भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल।।'

शशि प्रेमदेव के गजल परंपरा के ज्ञान, युग के अनुभव आ खुद के अनुभूति के काव्य-व्यवहार हई स। इहनी में अइसन कुछुओ नइखे जे जिनगी के सहज धारा के बहाव के खिलाफ कुछ सोचे, कहे भा करे के कोशिश के रूप में लउकत होखे। इहनी में जिनगी के बेहतर बनावे के संकल्प जरूर बरकरार बा, जे काव्यकला के अंतिम लक्ष्य ह। शशि के गजल अपना पढ़वइयन के कवनो तिलस्मी लोक में ना ले जाके एही धरती, एही आसमान, एही सूरज-चान के बीचेकृ सुख-दुख आ एह से उपजल जीवन-राग के बीचे, आदमी के आदमी बनवले रहे के संकल्प के रूप में याद कइल जइहन स। साहित्य के मकसदो इहे होला। इहे मकसद होखहूँ के चाहीं।

शशि प्रेमदेव
के पाँच गो गजल...

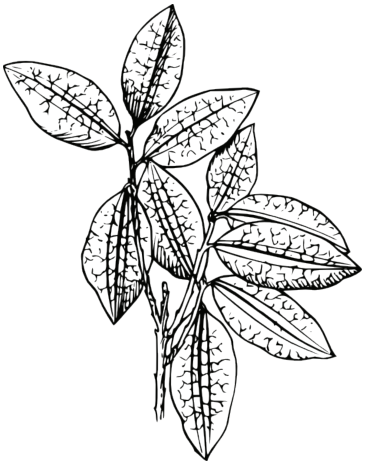

(एक)

जब चान आसमानी पानी में झिलमिलाई
हमरा उदास मन के तोहरे इयाद आई

तोहरे छुवन के कोमल सिहरन मतिन जनाई
अचके में फूल कौनो अँगुरी से जब छुआई

जबले परान बाटे ऊ चार दिन के नाता
तोहरो के ना भुलाई हमरो के ना भुलाई

अँखियन में ऊहे सपना कहियाले आई-जाई
कहियाले एगो आँचर सुधियन में फरफराई

अँसुवन के लेखनी से जवने गजल लिखाई
सदियन ले ई जमाना ओकराके गुनगुनाई

हियरा के एह् दरद के कहवाँ मिली दवाई
ए हो, 'शशी' बतावऽ कइसे इ हूक जाई

(दू)

कइ दऽ तबाह भलहीं अपना इयार के तूँ
पागल त, जनि बनावऽ सज्जी जवार के तूँ

थाती प, तोहरा बाटे दुनिया नजर गड़वले
आवऽ बना ल आपन हमके जुठारके तूँ

सुख-चैन लूटि लिहलऽ लोगन क, एक छन् में
कुटिया में आज हमरा अचके पधारके तूँ

कुछ बात ना रहल तऽ काहेंके छोड़ गइलऽ
हमरा नहान-घर में टिकुली लिलार के तूँ

कइसे ना दिल पसीजी बिधना के, ए पुजारी
माँग तऽ मन् से कहिओ आँचर पसारके तूँ

ठाढ़े गिरे चिताने दुनिया जलन का मारे
ताकेलऽ जब 'शशी' के बेसुध निहारके तूँ

(तीन)

नेहि बरिसल तरी हो गइल
धूर जिनगी धनी हो गइल

पाँव गोइयाँ क' जसहीं पड़ल
पत्थरो मखमली हो गइल

आँखि में आँखि जब डालिके
ऊ हँसल झुरझुरी हो गइल

हमके पँवरे सिखावे बदे
नार से ऊ नदी हो गइल

गोड़ धरती प' कइसे धरीं
मन उड़न-तश्तरी हो गइल

दूर जंगल से जाते, 'शशी'
आदमी जंगली हो गइल

(चार)

चाँद फक्कड़-मुसाफिर सफर में रहल
चाँदनी रात भर खण्डहर में रहल

ऊ भले दू घड़ी हमरा घर में रहल
फुसफुसाहट महीनन् शहर में रहल

छाँह के सुधि रहे ना फिकिर घाम के
हाथ जबले सजन के कमर में रहल

टारि दिहलीं निवेदन सिरिफ एह् बदे
छोट बहुते उ' हमसे उमर में रहल

ऊ जमाना गुजरले जमाना भइल
जब फरक आदमी जानवर में रहल

हम भले आज लाचार बानीं 'शशी'
धाक हमरो कबो गाँव भर में रहल

(पाँच)

बैदा ऊपर बइठल बा कसइय्या ऊपर बइठल बा
सज्जी नीमन-बाउर के करवइया ऊपर बइठल बा

डोले जेकरा मर्जी से पुरवइया ऊपर बइठल बा
अँगुरी पर सबके अपना नचवइया ऊपर बइठल बा

लेके मुट्ठी में सज्जी मलिकइया ऊपर बइठल बा
हमरा-तोहरा किस्मत के लिखवइया ऊपर बइठल बा

सबकर दादा काका बड़का भइया ऊपर बइठल बा
सबका ओरहन के एगो सुनवइया ऊपर बइठल बा

मूँहें करिखा - आन्ही के - पोतवइया ऊपर बइठल् बा
अब्बर नइया के जब्बर खेवइया ऊपर बइठल बा

दंभ भरम हर रावण के तुरवइया ऊपर बइठल बा
हर सोना के लंका के फुँकवइया ऊपर बइठल बा

प्रिंसिपल: के० एस०आई० कॉलेज, बलिया (उ०प्र०)

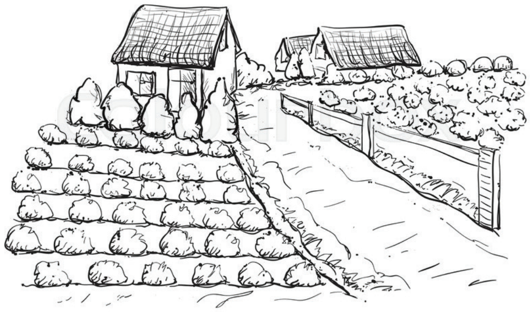

मिथिलेश गहमरी के गजल

✍ शशि प्रेमदेव

गाजीपुर जिला के गाँव गहमर के निवासी मिथिलेश गहमरी पूर्वांचल के प्रतिष्ठित रचनाकारन में गिनल जालें। पिछला लगभग दू-ढाई दशक से ऊ मुशायरा आ कवि सम्मेलन सभ में अपना असरदार काव्य-पाठ से एगो मजबूत पहचान बनवले बाड़ें। हालाँकि हिन्दी आ उर्दू में गजल, नज्म आ रुबाई पर उनकर बराबर पकड़ बा, बाकिर भोजपुरी रचना आ ओकर मंचीय प्रस्तुति खातिर ऊ सबसे बेसी जानल-पहिचानल जालें। उनका ग़जलन के संकलन 'केकरा से माँगीं अँजोर' से उनका लेखन के तेवर आ कवि कौशल के प्रमाण मिलत बा।

मिथिलेश गहमरी के गजल गहिर संवेदना, पैनी नजर आ भाव के सटीक अभिव्यक्ति से पाठक के परिचित करावत बा। अतने ना, उनकर चुस्त कहन-शैली, असरदार बिंब-विधान आ भाषा पर मजबूत पकड़ के बढ़िया मिसाल देखे के मिलत बा। एह गजलन के रंग-बिरंग संसार से गुजरत पाठक खाली शायर के निजी सुख-दुख, आशा-निराशा के एहसासे नइखन करत, बल्कि समाज के ओह संवेदनशील, कर्मठ आ मानवीय मूल्यन खातिर लड़त लोगन के पीड़ा, चिंता, आक्रोश आ उम्मीद से भी रूबरू होत बाड़न। रचनाकार एक ओर अन्हार के बढ़त साम्राज्य से उपजल हताशा, बेचैनी आ झुँझलाहट के साफगोई से सामने रखत बाड़न, त दोसरका ओर हरदम अँजोर के खोज में लागल रहत बाड़ें। ऊ खाली समस्या के रोना नइखन रोअत, समाधान के राहो सुझावे के कोशिश करत बाड़ें-

१- दिल भइल काठ, रात के फिकिरे
आँखि अझुरल बिहान में देखलीं

२- जिनगी के डेग-डेग पर गरहन जरूर बा
मन में अँजोर बा त' निवारन जरूर बा

३- घर अन्हरिया के सुरुज बिनु जगमगाई ना कबो
जुगनुवन से रात के करिखा पोछाई ना कबो

४- जोत जिनगी के जबहीं झँवाये लगल
मन के बाती केहू आके उसुका गइल

उनका संकलन का शीर्षक से भी एह बात के आभास हो जाता कि शायर अँजोर के खोज में बहुत जगह भटकलें, बाकिर हर ओर निराशा आ मोहभंगे हाथे लागल। एह सबके बावजूद ऊ आजुओ बदलाव के आस नइखन छोड़ले। ऊ अन्याय आ बुराई के चुपचाप सह लेवे

वाला आदमी ना हउवें। ओह पर खुल के बोलल, समाज के आगाह कइल आ व्यवस्था तक आपन बात पहुँचावल ऊ अपना साहित्यिक जिम्मेदारी मानेलें।

१- नाव के बा अबे मझधार से बचावे के
एके झिझरी कबो बाद में खेलावे के

२- चिरई उड़ल बिहान के, साँझे लवट गइल
बुचिया शहर से अबले ना लवटल् घरे, हुजूर

३- रोज अइसे जिहाद होई तऽ
सँउसे दुनिया बिरान हो जाई

जे लोग मिथिलेश गहमरी के खाली मंचीय शायर मानेला, ऊ उनका रचनात्मक गहराई के सही आकलन ना कर सके। गजल उनका खातिर शौक ना, साधना रहल बा। एह कारण कथ्य होखे चाहे शिल्प- दूनो स्तर पर ऊ मजबूत नजर आवेलें। कहीं-कहीं उनकर शेर कृष्ण बिहारी नूर, कुँवर बेचैन, अदम गोंडवी आ जगन्नाथ जइसन दिग्गज शायरन के अंदाज के याद जरूर दियावेला, बाकिर एह में कवनो अचरज नइखे, काहे कि साहित्यिक संस्कार ओही परंपरा से मिलल बा।

समकालीन समाज के शायदे कवनो अइसन गंभीर सवाल बचल होखी, जवना पर गहमरी जी कलम ना चलवले होखस। पाखंड, अहंकार, बनावटीपन, लालच, भ्रष्टाचार, दुराचार, बैर-भाव, सांप्रदायिकता, महँगाई, गरीबी, गाँव के बदलत संस्कृति आ जनप्रतिनिधियन से मोहभंग- एह सभ विषय पर उनकर गजल गहिर चोट करत बा। प्यार-मुहब्बत जइसन लोकप्रिय विषय पर शायर बहुत कम लिखले बाड़ें। बावजूद एह के, जे कुछ शेर एह भाव के मिलत बा, ऊ मन के छू लेत बा।

१- राउर मिलल सनेह तऽ दिल हो गइल हलुक
भींजल पथार घाम से मिलके भरक गइल

२- गंध के फूल से करे अलगा
कवनो आन्ही में एतना दम नइखे

३- नेह तोहार हिया में जोगवले बानीं हम
जइसे बोरसी में केहू आग जोगवले होखे

४- हमेशा अपना मर्जी से सँवारेला ऊ हमरा के
कबो फागुन बना देला, कबो सावन बना देला

मिथिलेश जी का 'केकरा से माँगीं अँजोर' संकलन में समकालीन समाज के विसंगति, आक्रोश आ पराजय-बोध के बीच शांति, सद्भाव आ बेहतर भविष्य के आस जगावे वाला बहुरंगी गजल- बाड़ी सऽ। मिथिलेश के मरहूम शायर अदम गोंडवी आ प्रख्यात समीक्षक अनिरुद्ध सिन्हा जइसन विद्वानन के शुभकामना आ सराहना मिलल बा। मिथिलेश गहमरी जी के स्वर से स्वर मिलावत, हमहूँ कहल चाहत बानी कि-

'केहू के लोर बहवले अन्हार ना भागी !
बइठिके गाल बजवले अन्हार ना भागी !
पटकिके फोर लऽ भलहीं कपार तूँ बाकिर
बिना लुकार जरवले अन्हार ना भागी !'

मिथिलेश गहमरी के गजल

(एक)

दरद के, पीर के, दुख के, जियान के जिनगी
फसल के साथे हँसेले, मचान के जिनगी

करज के दूध-मलाई के छूँछ जिनगी से
हजार नीक बा सतुआ-पिसान के जिनगी

तुँ एसी से बहरी निकल के आवऽ तऽ
तबे बुझाई, कि का हऽ किसान के जिनगी

हिया में पोस के रखलीं सनेह राउर हम
जहान पोसेला जइसे कि पान के जिनगी

शहर में आजुओ जोहत बा रात-दिन सुग्गा
ऊ गाँव-घर के, ऊ अपना सिवान के जिनगी

जो पूछी साँच त' नीमन बा मर गइल,बाकिर
नसीब होखे ना केहू के दान के जिनगी

खिलल मिलल कबो, मुरुझा गइल कबो 'मिथिलेश'
सुदी-बदी के घेरौना में चान के जिनगी

(दू)

फरक बता ना सकेला जे नीम-गूलर में
सुखेन बैद कहाता उहो नगर भर में

हजार ओर के उलझन, अकेल ई जिनगी
घेरा गइल बिया पतई-मतिन बवंडर में

बुता ना जाए कहीं नेह के जरत दीया
बहुत अनेति बा, नवकी हवा के तेवर में

बेमारी, भूख, लचारी, करज के मजबूरी
सिवाय एकरा, का पाइब गरीब के घर में

अजब कमाल के जादूगरी रहे उनकर
जहाज डूब गइल रेत के समुन्दर में

त' कइसे मान लीं पहरा बा आँखिवालन के
जदी, चिल्होर के गिनती भइल कबूतर में

अजाद भइलो प' हालत गुलाम जइसन बा
गरीब, चैन से दिल्ली में बा, ना 'गहमर' में

(तीन)

मन के गंगा प' जदी बान्ह बन्हाइल होई
कइसे जिनगी में मजउ कवनो भेंटाइल होई

आम तऽ आम, गुठुलियो के मिले लागल दाम
दिन सियासत में कहाँ अइसनो आइल होई

दोष कुल मढ़ दे, भले कहँतरी पऽ ई दुनिया
दूध तऽ अगिये के शह पाके फफाइल होई
तेल में अइसहीं नइखे ई 'फुलौरा' बिहँसत
पहिले पानी सँगे, ई खूब फेंटाइल होई

धार हँसुआ के, ह' का, जाके तू ओसे पूछऽ
घास का साथे अँगूठा जे कटाइल होई

मन में कुछ काँट गड़ल होई ज 'मिथिलेश'
बिना कारन के, कहाँ आँख लोराइल होई

(चार)

दवाई भेजेले, असुराह जब जखम होला
बताईं, बैद के हइसन धरम-करम होला

दरद के दाह से, अगिया गइल करेजा पर
तनिक सनेह के छींटा, बहुत अलम होला

ऊ फटलो-चिटलो में चमकत रहेले रातो-दिन
कि जिनका गाँठ में, ईमान के रकम होला

देहाती मन रहे, रुपवे प' बस पिघिल गइलीं
भइल धमाका, त' जनलीं कि फुलवो, बम होला

शहीद होखे बदे भाग्य ना मिले सबका
ए' काम खाती, चुनल लोग के जनम होला

ऊ अपना गाँव के, ई कहिके तजले जे, 'मिथिलेश'
कि अपना गाँव में, बहुते सरद-गरम होला

(पाँच)

केहू पथार डाल गइल बाटे लोर के
काबिल कहाय वाला, देखावे बिटोर के

देखे के बा, कि रंग-चमक कइ घड़ी रही
मरले बा पीठ पर केहू अच्छत परोर के

हम चुप रहीं, कि अबकी नया चोट ना मिलल
ऊ निहफिकिर बा, घाव पुरनका निखोर के

सपना हमार, कैद बा मुट्ठी में उनकरा
जइसे जुआरी राखेला रुपया चिमोर के

केहू बतावे, भा न बतावे, त' का भइल
सबका पता बा, के बा लुटेरा अँजोर के

माई के नेह-छोह, करेजा में भर गइल
दिहलस केहू जो हाथ प' छाल्ही खखोर के

'मिथिलेश' कइसे उनकरा पानी से होई भेंट
बइठल बा घर में लोग जे, गगरी अगोर के

(छ)

चाहे मजदूर रहे, चाहे 'गवरनर' होखे
सबहीं चाहेला मुकद्दर के सिकन्दर होखे

आज के दौर में इंसान जियत बा अइसे
जइसे बरसात में देवाल 'पलस्तर' होखे

हमके दरियाव बनावऽ, त' बनावऽ अइसन
आस में जेकरा खड़ा कवनो समुन्दर होखे

फूल केहू के मिलल, 'फर' बा मिलल केहू के
साझ के बाग ह', तऽ बाँट बराबर होखे

कम से कम खून में पानी में त' जाने अंतर
देश के, चाहे ऊ परदेश के लीडर होखे

नाग बनिके, जे खुशी चाट रहल चिरइन के
नाम ओकर त' सरेआम उजागर होखे

होके शायर जे कहे साँच के ना साँच जदी
ओसे नीमन बा कहीं नाच में 'जोकर' होखे

खोज के हार गइल लोग, मिलल ना 'मिथिलेश'
एको तारा, कि जे असमान से ऊपर होखे

(सात)

उनका रस्ता में फेंड़ आ गइलन
फरे से पहिलहीं कटा गइलन

नेह, जिनका रहे लुटावे के
ऊ अशर्फी-मोहर लुटा गइलन

का समझिहें ऊ गैर के दुख-सुख
खुद के जिनगी में जे नधा गइलन

आँस डलते, धधोर हो जाले
आग कइसन दो, ऊ लगा गइलन

देखे आइल रहन ऊ घाव हमार
चुपके से, नून तऽ मिला गइलन

पंच जिनके बना के बइठवलीं
ऊ तश अउरी लगा - बझा गइलन

चोर के चोर, लोग कहलस तऽ
काँहे 'मिथिलेश' तिलमिला गइलन
,

गहमर, गाजीपुर, मो०- 9120050308

सीख जिनिगी के

अरविन्द कुमार सिंह

सभागार के बत्ती धीरे-धीरे कम कइल जात रहे आ मंच पर एगो एगो स्पॉटलाइट डालल जात रहे। फूल न के महक हवा में तैरत रहे, पीछे तक आवत रहे, आ सामने के दीवाल पर बड़-बड़ अक्षर में लिखल रहे - 'राज्य कर विभाग, सेवानिवृत्त अधिकारी संघ, वार्षिक अधिवेशन।' ताली के गूँज अबहीं थमल ना रहे कि मंच - संचालक माइक लगे झुकके अगिला नाँव पुकारलें 'श्री आनन्द शंकर लाल जी।' पूरा हाल एक बेर फेर खड़ा हो गइल, कुर्सी के सरकत आवाज एके साथ गूँज उठल ।

आज ओह दस गो अधिकारी के सम्मानित कइल जात रहे जे ओह साल अस्सी बरिस पूरा कइले रहलें - सब स्वस्थ, सब अपना गोड़ पर खड़ा, केहू के हाथ में लाठी रहे त केहू के आँखि पर चश्मा के मोट फ्रेम, बाकिर सबकर आँख में ऊहे चमक रहे जवन कबो फाइल के ढेर के बीच ना बुझाइल। एक-एक कके नाँव पुकारल जात रहे, माला पहिनावल जात रहे, शाल ओढ़ावल जात रहे, आ हर बेर तारी के एगो नया लहर उठत रहे। बाकिर जब लाल साहेब के नाँव आइल, त हाल में कुछ पल खातिर एगो अलग हलचल भइल, आगे के पंगत कुछ पुरनका साथी लोग आपस में फुसफुसाइल, जइसे केहू खास आदमी के आवे के खबर देहल जात होखे।

लाल साहेब धीरे-धीरे मंच के ओर बढ़लें । उनकर चाल-ढाल आजुओ ओतने संयत रहे, जइसे तीस बरिस पहिले रहत रहे- न जल्दबाजी, न देखावा, बस एगो शालीन गरिमा जवन उमिर के साथ आउरो गहिर हो गइल रहे । उज्जर कुर्ता पर हल्का भूर रंग के शाल, मुँह पर थीर मुस्कान, आ चले के ऊहे ठहराव जवन हम बरिस पहिले उनकर दफ्तर में महसूस कइले रहलीं। माला पहिनावल गइल, फूल भेंट कइल गइल, आ जब ऊ धन्यवाद के दुगो शब्द कहे माइक लगे अइलें, त उनकर आवाज में ऊहे पुरनका नरमी रहे, जइसे समय ओह में कुछुओ बदलले ना होखे।

हम पिछला पंगत में बइठल उनके देखत रहीं, तारी बजावत रहीं औरन के साथे, बाकिर भीतरे भीतर कहीं अउरे रहीं। हहल के भीड़, माइक के गूंज, फूल के महक, सब धीरे-धीरे धुँधरा गइल, आ हमार मन ना जाने कब ओह हाल से निकलके तीस बरिस पीछे लवट गइल, कवनो छोट मोट मुफस्सिल कस्बा के एगो तंग-मोट दफ्तर में, जहवाँ पंखा चरचरात चलत रहे आ फाइल के गंध हवा में बसल रहत रहे ।

ओह दिन में बिक्री कर विभाग देश के ओह गिनल चुनल विभागन सभ में रहे जे आजादी के बाद बनल रहे । नाँव बदलत गइल, बिक्री कर से व्यापार कर, व्यापार कर से वाणिज्य कर, आ आखिर में राज्य कर, यानी स्टेट जीएसटी । पदनामो ओहीं क्रम में बदलत गइल- बिक्री कर अधिकारी अब असिस्टेंट कमिश्नर जीएसटी कहावे लागल, आ ऊपर के पदो ओहीं अनुपात में नया चोला पहिनत गइल । दफ्तर सभ के दीवाल पर लागल बोर्ड बदलल, मोहर बदलल, चिट्ठी के शीर्षक बदलल - बाकिर जवन ना बदलल, ऊ रहे प्रोन्नति के ऊ पुरनका, ढीला ढाँचा । आधा नौकरी बीत गइला के बाद पहिला प्रमोशन, आ बचल समय में जइसे तइसे तीन- चार आउर। आ एह पूरा प्रक्रिया के धुरी रहे साल भर के चरित्र - प्रविष्टि, वरिष्ठ अधिकारी साल के अंत में रउआ बारे में का लिखेलें, इहे तय करत रहे कि रउआ आवे वाला दस

साल कइसे बीती। एगो लाइन, कबो- कबो त बस एगो शब्द, बरिसन के भविष्य मोड़ सकत रहे। ई 1990 से पहिले के जमाना रहे, जब अधिकारी आजु जतना व्यावहारिक ना रहलें, कैडर प्रबंधन एतना चुस्त ना रहे, आ प्रमोशन कवनो दूर, धुँधला पड़ाव नियन लागत रहे, जेकरा बारे में सोचहूँ में थकान होखत रहे ।

ओह समय, नया चुनल गइल बिक्री कर अधिकारी सभ के फील्ड प्रशिक्षण खातिर कवनो खंड में अतिरिक्त अधिकारी बनाके तैनात कइल जात रहे। पूरा प्रदेश व्यापारिक गतिविधि के घनत्व के हिसाब से खंड सभ में बँटल रह, कवनो साधारण जिला में दु-तीन खंड, कवनो महानगर में दस के आसपास । हमनी के मूल काम रहे व्यापारी सभ के साल भर के टर्नओवर के आधार पर बिक्री कर के असेसमेंट कइल, आ अतिरिक्त अधिकारी के सीखे खातिर कुछ केस अलग से सौंपल जात रहे ताकि ऊ खुद फाइल देखे, बहीखाता के जाँच करे, आ अपना वरिष्ठ के निगरानी में फैसला लेवे सीखे।

हमहूँ ओहिजा, लाल साहेब के मातहत, प्रशिक्षण पर भेजल गइल रहलीं । दफ्तर बहुत बड़ ना रहे- एगो कमरा उनकर, बगल में एगो छोट मोट हिस्सा हमरा खातिर, बीच में रजिस्टर के अलमरी जेकर पल्ला ठीक से बंद ना होत रहे। एगो स्टेनो, एगो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी- बस हमार दफ्तर रहे। टाइपराइटर के जमाना रहे, कार्बन कागज के गंध हर मेज पर बसल रहत रहे, आ हर महीना एगो तय कोटा पूरा कइल जरूरी रहे तीस मुकदमा के अंतिम निपटारा, हर महीना, बिना कवनो बहाना के। ई संख्या हर अधिकारी खातिर अलग-अलग तय रहे, ओकर खंड के व्यापारिक बोझ के हिसाब से, बाकिर पूरा करे के त सबके रहे।

बाकिर हमार स्टेनो के पूरा एक महीना ले टाइपराइटर ना मिलल । पुरनका मशीन कहीं मरम्मत खातिर भेजल गइल रहे आ नया अबहीं आइल ना रहे । ऊ बेचारा रोज सबेरे कवनो सहकर्मी के मेज लगे मँडरात, इहाँ- उहाँ से मिनती कके, ओकरे टाइपराइटर पर चोरी-छिपे थोड़-बहुत काम निकाल लेत रहे- कबो दस मिनट, कबो आधा घंटा, जतना ऊ अफसर छोड़ देत रहलें। साँझ के ऊ हमरा लगे आके उदास स्वर में कहत रहे- “साहेब, आजुओ पूरा काम ना भइल, मशीने ना मिलल ।” हम ओकरा के दिलासा देत रहीं, बाकिर कोटा फेरू हर हफ्ता पीछे खिसकत गइल। महीना के अंत में हम लाल साहेब लगे गइनी आ सारा दिक्कत उनके बता देनी- टाइपराइटर के कमी, स्टेनो के मजबूरी, फाइल के ढेर जवन टाइप होखे के इंतजार में मेज पर जमा होत जात रहे । ऊ ध्यान से सुनलें, बीच में एक बेरो ना टोकलें, फेरू माथा हिलवलें आ बड़ी सहजता से कहलें- “चिंता झजिन करा, हम आज्जे ऊपर लिख देत बानी, जल्दी टाइपराइटर दिआ देब।” उनकर बात में एतना भरोसा रहे कि हम संतुष्ट होके लवट गइनी, जइसे समस्या ओहिजे सुलझ गइल होखे ।-

दुसरा दिन दफ्तर पहुँचनी त मेज पर उनकर एगो चिट्ठी रखल रहे कोटा पूरा ना होखला पर नाराजगी जतावत, जल्दी काम पूरा करे के सख्त निर्देश। चिट्ठी के भाषा औपचारिक रहे, बिल्कुल दफ्तरी लहजा में, बाकिर हमरा लागल जइसे केहू पीठ पीछे वार कइले होखे । काल्हे त उहे खुद भरोसा देले रहलें - आ आज ई चिट्ठी? हाथ काँप उठल। गुस्सा एतना चढ़ल कि विवेक कहीं पीछे छूट गइल। हम ओहि घरी कलम उठा के जवाब लिखे बइठ गइनी, कि हम मिलके सारा दिक्कत खुद बताइब- आ ओकरा साथे कुछ आउरो, कुछ तिखा तिखा, कुछ उल-जुलूल शब्द, जवन शायद ना लिखल होइत त बढ़िया रहित । लिखत घरी लागल रहे कि बहुत बड़ बात कहत बानी, बाकिर चिट्ठी भेजला के बाद जवन सन्नाटा भीतर उतरल, ओह गुस्सा से कहीं भारी रहे।

ओकरा बाद न हम मिले गइनी, न उनका ओर से कवनो आउर चिट्ठी आइल । दफ्तर में हम दुनु के आमना- सामना कबो-कबो गलियारा में हो जात रहे, तबहूँ बस औपचारिक नमस्ते, कवनो बात ना । एगो अजीब सन्नाटा दूनों आदमी- के बीच पसर गइल, जेके न ऊ तोड़लें, न हम महीना बीतत गइल, फाइल बढ़त घटत रहल, बाकिर हमनी के बीच के ऊ चुप्पी वइसने बनल रहल, जइसे केहू ओकरो फाइल नियन बंद कके अलमारी में रख देले

समय अपना गति से बहत रहल। दु बरिस बाद लाल साहेब प्रोन्नत होके कवनो जोन के संयुक्त आयुक्त बनके चल गइलें - तबादला के खबर दफ्तर में आइल त सब बधाई देलें, विदाई के छोट मोट समारोहो भइल, जेह में हमहूँ शामिल भइनी, बाकिर दूर खड़ा रहनी, भीड़ में। कुछे दिन बाद हमरो तैनाती एगो आउर जिला में खंड अधिकारी के पद पर हो गइल पहिला अलगे जिम्मेदारी, अपना दफ्तर, अपना मातहत। आ संजोग अइसन कि ऊ जिला ओही लाल साहेब के अधीने आवत रहे।

जब ई पता चलल, त मन भारी हो गइल। फेरू ओहि लोग के साथे काम करे के बा- इहे सोचके भीतरे कुछ सिकुड़ गइल। दु बरिस पुरनका ऊ चुप्पी, ऊ गुस्सा में लिखल चिट्ठी, ऊ कड़वा शब्द जवन अब याद करे पर खुदे अजीब लागत रहे - सब कुछ एके साथे लवट आइल।

रात में नींदो ठीक से ना आइल, इहे सोचत रहनी कि पहिला दिन दफ्तर जाके उनकर आमना-सामना कइसे करब । हम मन-ही-मन तय कर लेनी कि कवनो सिफारिश लगाके तबादला करा लेब, कवनो आउर जिला में, ताकि ई पुरनका किस्सा फेरू सामने ना आवे ।

एगो करीबी मित्र से ई इरादा बतवनी त ऊ चाय के प्याला मेज पर रखत, बड़ी सहजता से कहलें- 'तबादला बाद में करा लेहल जा, पहिले एक बेर अकेले में उनसे मिल त ल । भागके का साबित करब?' बात सीधा रहे, बाकिर ओह में एगो ठहराव रहे जवन हमरा भा गइल- जइसे ऊ हमरा से जादे हमरा के जानत होखें । हम ओह रात बहुत सोचनी, आ आखिर तय कइनी कि मित्र के बात सही बा- भागे से पहिले, एक बेर आमने-सामने होखल जरूरी बा ।

दुसरा दिन समय लेके हम उनकर कार्यालय पहुँचनी । बाहर के कमरा में उनकर चपरासी बइठल रहे, जे हमार नाँव भीतर भेज देलें आ थोड़ी देर में इशारा कइलें कि जाईं। कमरा में जाते देखनी, ऊ कवनो फाइल में उलझल रहलें - ऊहे पुरनका तल्लीनता, जइसे बाकी दुनिया कमरा से बाहर होखे। मेज पर कागज के तीन-चार ढेर करीने से लागल रहे, एक ओर स्याही के दवात, दुसरा ओर चश्मा के खाली डिब्बा । ऊ बिना माथा उठवले बइठे के इशारा कइलें आ फेरू फाइल में डूब गइलें। हम सामने के कुर्सी पर बइठ गइनी, हाथ गोदी में, आ घड़ी के सुइया देखत रहनी । आधा घंटा -पूरा आधा घंटा अइसहीं बीत गइल, कमरा में बस कागज के पलटाइल आ दीवाल-घड़ी के टिक-टिक के आवाज हमार मन में हर मिनट एगो नया विचार आवत रहे- का कहब, का ऊ पुरनका बात याद दिआई, का माहौल तनावपूर्ण होई ।

आखिर ऊ फाइल बंद कइलें, चश्मा उतरलें, आँख मललें, आ हमरा ओर देखलें। मुँह पर ऊहे पुरनका, सौम्य मुस्कान रहे, जइसे बीच के दु बरिस कबो भइले ना होखे ।
'आज कइसे आवल भइल, आशुतोष जी?'

हम कुछ साधारण-मोट जवाब देनी- औपचारिक, ऊपरी-ऊपरी, जइसन अइसन घरी अक्सर निकल जाला, जब भीतर बहुत कुछ होखे आ जीभ पर कुछुओ ना आवे । ऊ मुस्कुरात सुनत रहलें, बिना टोकले, बिना जल्दबाजी कइले, जइसे जानत होखें कि असली बात अबहीं बाकी बा आ जल्दी करे से कुछुओ हासिल ना होई ।

एही बीच दरवाजा पर केहू जोर से खटखटवलें - एतना जोर से कि हम चौंक गइनी लाल साहेब बिना पुछले बिना कवनो झुंझलाहट के कहलें 'आ जा।'

एगो कर्मचारी भीतर आइल, तेज कदम से, । आवते जोर-जोर से बोले लागल- 'सर, हमरा दु दिन के छुट्टी चाहीं।' स्वर में एगो अजीब-मोट तेजी रहे, जइसे बात कम आवेश जादे होखे, जइसे शब्द ना बलुक कवनो भीतरी दबाव बाहर निकलत होखे लाल साहेब ओकरा ओर देखलें- पल भर खातिर उनकर नजर ओकरा मुँह पर टिकल, फेरू बिना कवनो हिचक के इजाजत दे देलें 'ठीक बा, जा।' बाकिर ऊ कर्मचारी टस-से- मस ना भइल। कमरा के बीचोबीच खड़ा रहल, गोड़ थोड़ा फइलाके, हाथ हवा में लहरावत, आ बोलत चल गइल - 'हम रउआ से जादे पढ़ल -लिखल बानी, सर। रउआ त सिरिफ ग्रेजुएट बानी, ओकरा बाद सीधे सिविल सर्विसेज में आ गइनी । हम अर्थशास्त्र में पीजी कइले बानी। सीए के पढाइयो कइले बानी...' ओकर आवाज कमरा में गूँजत रहे ।

हमरा ई सुनके एगो झटका लागल। ई कवनो अधीनस्थ के अपना वरिष्ठतम अधिकारी से बतियावे के तरीका ना रहे- ई त सीधा बदतमीजी रहे, ऊहो एगो नया अधिकारी के सोझा, जे पहिलही मुलाकात में ई सब देखत रहे। लाल साहेब बड़ी शांति से जवाब देलें- "तोहार बात बिल्कुल सही बा। अब जा।" न उनकर स्वर ऊँच भइल भवें तनल, न मुँह के एगो रेखो बदलल । ई जवाब एतना अनचिन्हार रहे कि ओह कर्मचारी के गति भी एक पल खातिर रुक गइल। हमरा से आउर ना रहल गइल । खून खौल उठल- हम तब बिल्कुल जवान रहनी, आ ओह उमिर के सुभाव अइसहीं होला, गलत बात के चुपचाप देखत रहल जेकरा ना आवे। हम कुर्सी से उठ खड़ा भइनी, मुट्ठी अपने- आप भिंच गइल, मन में इहे रहे कि एह आदमी के कालर पकड़ के बाहर कर दीं, ओकरा बता दीं कि केकरा सोझा खड़ा बा । बाकिर लाल साहेब हाथ के हल्का इशारा से हमरा के रोक देलें - 'बइठ जा, शांत रहा।' उनकर आवाज में कवनो हुकुम ना, बस एगो थिरता रहे, जेकरा टारल मुश्किल रहे - जइसे कवनो गहिर कुआँ के चुप्पी होखे, जेकरा सोझा ऊपर के शोर अपने-आप दब जाला । हम फेरू बइठ गइनी, बाकिर भीतर सब कुछ उबलत रहे, मुँह तमतमाइल ।

थोड़ी देर में ऊ कर्मचारी बिना कवनो आउर प्रतिक्रिया के इंतजार कइले, कमरा से बाहर निकल गइल, जइसे आइल रहे वइसहीं तेजी से चल गइल । लाल साहेब अपना चपरासी के घंटी बजाके बोलवलें आ चाह मँगवा देलें, जइसे कुछ भइले ना होखे, जइसे ई कवनो रोजमर्रा के बात होखे। हम उनका मुँह के गौर से देखनी- न क्रोध, न नाराजगी, न आक्रोश के कवनो छाया, कहीं कवनो तनाव ना। ऊहे पुरनका, सौम्य मुस्कान, जइसे अबहीं कुछ भइले ना होखे ।

'अच्छा, अब बतावऽ,' ऊ पूछलें, कुर्सी पर

थोड़ा पाछे टिकके, 'आवे के कारण का रहे?'

हम ओह घरी कवनो शिकायत के मूड में ना रहनी। मन दृश्य में अटकल रहे जवन अबहीं- अबहीं घटल रहे । ओह अजीब शांति में, जेके हम समझ ना पावत रहनी। ऊ खुद बात आगे बढ़वलें- "हम तोहरा के बोलावहीं वाला रहनी ।" आ फेरू, बतिये बतिये में, बिना कवनो भूमिका के, उहे पुरनका चिट्ठी छेड़ देलें, जइसे कवनो पुरनका फाइल फेरू खोलत होखें ।

"तोहार जवाब पढ़के हमरा दुख भइल रहे" ऊ कहलें, स्वर में कवनो शिकायत ना, बस एगो सहज स्वीकृति, "बाकिर हम ओह घरी तोहरा के बोलावल ठीक ना समझनी नया उमिर में, नौकरी के शुरुआत में, परिपक्वता कम रहेला- नया अधिकारी जल्दी प्रतिक्रिया देलें, ई स्वाभाविक बा। कोटा पूरा ना होखे के बात पूछल एगो ऑफिशियल ड्यूटी रहे, एगो औपचारिकता- कवनो सजा देवे के इरादा से ना लिखल गइल रहे । अइसन चिट्ठी-पत्री रूटीन कामकाज के हिस्सा होला, आशुतोष । एकर एगो सीधा, सकारात्मक जवाबे काफी होला - बस एतना कि 'निर्देश के पालन कइल जाई', आ बात ओहिजे खतम ।" हमरा अपना गलती के एहसास होखे लागल, धीरे-धीरे, जइसे कवनो गहिर साँस भीतर उतरत होखे । दु बरिस पुरनका ऊ गुस्सा, जेकरा के हम एतना सफाई से सही ठहरा रहनी, जेके हम बार-बार अपना मन में दोहरा के एगो तरह के न्याय बना लेले रहनी, अब बेमानी बचकाना लागे लागल ।

कुछ पल के चुप्पी के बाद हम हिम्मत करके ओह कर्मचारी के बर्ताव के बात छेड़ देनी- 'सर, ऊ आदमी रउआ से अइसन उरेब कहलस, रउआ कुछ कहनी काहे ना?' लाल साहेब मुस्कुरइलें, एह बेर थोड़ा गहिर मुस्कान, जइसे कवनो बहुत पुरनका सीख याद करत होखें। 'ऊ बहुत मेहनती आ जानकार आदमी बा, "ऊ कहलें, "समय के पक्का । अकाउंट सेक्शन के हेड बा, पूरा सेक्शन ओकरे भरोसे चलेला, कबो एक दिनो देर ना करेला । बाकिर मानसिक रूप से थोड़ा अस्वस्थ बा - अइसन दौरा ओकरा पड़त रहेला । पहिले महीना में दु-तीन बेर आवत रहे, अब दु महीना में एक बेर ।"

"रउआ ओकर देखभाल करेनी?" हम पुछनी अब हमार आवाज में ऊ पुरनका आवेश ना रहे, बलुक एगो जिज्ञासा रहे।

"सरकारी इलाज त चलते बा," ऊ कहलें, "बाकिर हम खुदो ओकरा दवाई देत बानी- होम्योपैथी में हमार थोड़ा दिलचस्पी बा, कुछ पढ़त रहेनी, आ एगो होम्योपैथिक चिकित्सक से भी बतिया लेत बानी, फोन पर ओकरा लक्षण बता देत बानी । एहसे ओकरा काफी फायदा भइल बा, पहिले से बहुत सुधार बा।" उनकर मेज के एक कोना पर होम्योपैथिक चिकित्सा के एगो मोट-मोट किताब रखल रहे, जेह पर हमार नजर अबहीं ले ना गइल रहे- पन्ना कुछ मुडल, जगह-जगह पेंसिल से निशान लागल, जइसे बरिसन से इस्तेमाल होत होखे ।" होम्योपैथी में, "ऊ आगे कहलें, थोड़ा आगे झुकके, जइसे कवनो भेद खोलत होखें, "रोगी के लक्षण के बारीकी से अध्ययन करे के पड़ेला- ओकर बोलल, ओकर चलल, ओकर मुँह, सब कुछ। जब ई जोर-जोर से बोलत रहे, हम ओकर बात ना सुनत रहनी - हम ओकर मुँह के भाव देखत रहनी, ओकरा आँख में का रहे, ओकरा हाथ कइसे हिलत रहे। अब ओहि के आधार पर ओह चिकित्सक से बतियाके एकर खुराक तय करब ।"

ई कहके ऊ फेरू मुस्करइलें -ओहीं मुस्कान, जवन पूरा मुलाकात भर उनकर मुँह से हटले ना रहे, जइसे ई मुस्कान उनक सुभाव के हिस्सा होखे, कवनो बनावट ना।

हम कुछ देर चुप बइठल रहनी, उनक बात के भीतर उतरे देत । जेह कमरा में हम तबादला के बहाना खोजे आइल रहनी, ओहिजा से हम एगो अइसन जिनिगी के पाठ लेके निकलनी जेकर मोल हमरा बरिसन बाद, अपना खुद के कुर्सी पर बइठके, खुद अधीनस्थ सभ से जूझत बुझाइल- कि अधिकार जतना बड़ होखे, धीरज ओतने बड़ माँगेला! कि हर ऊँच आवाज के पाछे कवनो कहानी छिपल होला जेकरा के समझले बिना फैसला लेवल अन्याय बा आ जवन आदमी दुसरा के आवेश के पाछे झाँकल जानेला, अपना गुस्सा के थामके दुसरा के दरद देखल जानेला, उहे असल में नेतृत्व करेला । चाह आ गइल रहे, कप से भाप उठत रहे। हम चुपचाप चाह पियनी, बीच-बीच में कुछ हल्का-फुल्का बातो भइल, हमार नया खंड के बारे में, ओहिजा के व्यापारी सभ के बारे में आ ओह दिन के बाद हम कबो तबादला के बात ना सोचनी । जवन आदमी दु बरिस पहिले हमरा के कवनो सजा देवे वाला अफसर नियन लागत रहे, ऊ अब हमरा खातिर एगो अइसन मार्गदर्शक बन गइलें जेकर छाया हम अपना पूरा नौकरी में, जाने- अनजाने, हमेशा अपना ऊपर महसूस कइनी । आज हमके जिनिगी के सीख देबे वाला अनुभव संपन्न पुरान अधिकारी के सम्मान मिलत देखे के मोका मिलल।

irk% **6/88,** विनीत खण्ड-**6** गोमतीनगर,
लखनऊ-**226010,** मो०-**6306693068**

नवका बगइचा

✍ कमलेश

'तू त गजबे बाड़ऽ ए महराज। चहवा काहे नइख पीयत। सेरा जाई त नीक ना नू लागी। पहिले चाह पी लऽ। अब जवन होई तवन देखल जाई। एकरा चिंता में खाइलो-पीयल छोड दीही का आदमी?' गजानन तिवारी सुधाकर यादव के कान्ह प हाथ रख के सामने रखल चाह के गिलास का ओरि इसारा कइलन। सुधाकर यादव के मुँह एकदम चूना मतिन उज्जर हो गइल रहे। उनुका सोझा चाह से भरल गिलास पड़ल रहे बाकिर उनुका जइसे होसे ना रहे। उ चुपचाप चाह के दोकान प रखल बेंच प बइठ के सड़क का ओरि तिकवत रहन। अइसन लागत रहे जइसे सोझा आइल आफत से बचे के उपाय सड़किये प गिरल होखे आ बस खोजला के दरकार होखे। गजानन तिवारी जब चाह का ओरि इसारा कइलन तब उ गिलास के उठा के सुड़के लगलन।

परमाननपुर के गजानन तिवारी आ सुधाकर यादव बचपने के संघतिया। उमिर एकदम्मे आसपास के। दू-चार साल के फरका होई त होई। गजानन तिवारी के माई बतावस कि जब गंगाजी के बढ़ियइला से पटना में परलय आइल रहे त उनुकर जनम भइल रहे। गंगाजी त हर साले बढ़ियाली बाकिर पटना में परलय त एक्के साल आइल रहे। गजानन तिवारी जोड़ घटा के हिसाब लगावस कि उनुकर जनम 1974 में भइल होई। सुधाकर यादव के माई के त इहो इयाद ना रहे। उ बस इहे बतावस जे जब रघुनाथ तिवारी के बड़का बेटा गजानन के जनम भइल रहे तब सुधाकर पेट में आइल रहन। त सुधाकर यादव मान के चलस कि उनुको जनम 1974 के आखिर में भा 1975 के सुरू में भइल होई। उमिर भले बराबर बाकिर देह-धजा में दूनो एक-दूसरा से उलटा। गजानन तिवारी देखला से एकदम्मे गणेशजी के अवतार बुझास। टह-टह गोर रंग, छोट-छोट आँख , लमहर नाक, छोट देह, बड़का पेट, गरदन गायब आ सफाचट माथा। खाली माथा का बीच में लमहर चुरकी झूलत रहे। संस्कृत के श्लोक जब पढ़स त बुझाये कि मए वेद-पुरान बांच गइल होखस। भोर में पूजा कइला के बाद जब महामृत्युंजय मंत्र सुर में पढ़स त अइसन लागे जइसे आदमी बनारस के घाट प खड़ा होखे।

दोसरा ओर सुधाकर यादव निठाह पहलवान। लमहर कद, पातर-दुबर देह, सांवर रंग, छोट-छोट केस, ओइसहीं छोट-छोट आँख । देह में फुरती एतना कि इ मानल मुसकिल कि उनुकर उमिर पचास के लपेटा में होई। अभियो अखाड़ा में उतर जास त बढ़िया-बढ़िया पहलवान पानी मांगे लागस। गाँवे के लइकन के खेलावे-कूदावे में आगे। फुटबाल आ कबड्डी के दीवाना बाकिर किरकेट के ओतने विरोधी। घर से पइसा लगा के फुटबाल आ कबड्डी के मैच करावस। लइकन के किरकेट खेलत देख लेस त खूब गरियावस। कहस जे इ खेल मए देस के लइकन के बिगाड़ के रख देले बा। गाँव के लइको उनुका खातिर जान देबे के तइयार रह स। जवन काम उ कह देस ओकरा के पूरा करे में लइका जान लड़ा द स। बोले-बतियावे में जहां गजानन तिवारी उस्ताद ओहिजे सुधाकर यादव बस काम भर बोलस।

दूनो जाना इसकूल में साथे-साथे पढ़ल। दसवाँ पास कइला के बाद सुधाकर यादव दूध के धंधा में लाग गइले त गजानन तिवारी बक्सर कालेज पहुंच गइले। पढ़ाई-लिखाई त जम के भइल बाकिर नौकरी के फेरा में ना पड़लन। अब गाँवही रहेलन। आसपास के इलाका में बड़ा नाम बा उनुकर। पूजा-पाठ से लेके जग तक में उनुका के आदर के साथे बोलावल जाला। जजमनिका से जम के आमदनी बा। बाप रघुनाथ तिवारी बढ़िया जर-जमीन छोड़ के गइल बाड़न। इकलौता बारिस होखे के चलते एकर जम के उपयोग करेलन तिवारीजी। दोसरा ओर सुधाकर यादव दिन भर गाय-भैंस के फेरा में लागल रहेलन।

एकरा बादो दूनो आदमी के दोस्ती प खरोंचो नइखे आइल। अभियो दूनो साथी रोज सांझ के बइठ के दिन-दुनिया के हाल-चाल बतियावेला लोग। जाड़ हो भा गरमी, सांझ के छव बजे दूनो आदमी गाँव के बरम्ह चउरा प बइठ जाला। एकरा बाद टाइम के कवनो पते ना चले। इ गपबाजी के लेके एने पंडिताइन खिसियास त ओने सुधाकर यादव के घरे पहुंचला प उनुकर मेहरारू मए गत उतार देस। बाकिर कवनो अंतर ना पड़े। अगिला दिन फेनु उहे बरम्ह बाबा के चउरा आ उहे गपबाजी।

बाकिर जिनगी के रंग। एके लेखा कहिया रहल बा। अभी दूनो संघतिया के रोटीन गडबड़ाइल बा। दूनो आदमी रोज भोरही घर से निकल जाला आ दिन भर चउसा से लेके बक्सर तक हाकिम लोग के गोड़धरिया में लाग जाला। इ दउगा दउगी आपन कवनो काम से नइखे होखत। बात इ बा कि परमाननपुर के सोझा बड़का संकट हो गइल बा। गाँव के हाईस्कूल के पीछे के जमीन प सरकार दावा क देले बिया आ मए गाँव से कहा गइल बा कि एह जमीन के खाली क द लोग। अब बूझ जाईं जे इ गाँव के इकलउती जमीन हवे जवना प गाँव भर के काम होखेला। एही जमीन प एक ओरि बरम्ह बाबा के चउरा बा त दोसरा ओर ईद प गाँवही के ना, आसपास के इलाका के भी मुसलमान लोग नमाज पढ़ेला। पुलिस भा फउज के नौकरी के तइयारी करे वाला मए लइका एहिजे दउगे आ कूदे-फाने के अभ्यास करेलन स। एहिजे सुधाकर यादव फुटबाल के मैच करावेलन त दुर्गापूजा में एहिजे रामलीला होखेला। एह जमीनिया के गाँव भ के लोग नवका बगइचा कहेला। ताजुब के बात इ कि एह जमीन प कवनो बगइचा नइखे। बूढ़-पुरनिया लोग बतावेला कि पचास-साठ बरिस पहिले गाँव भर के लोग एह जमीन प बगइचा बनावे के बारे में सोचले रहे। अइसन बगइचा जवना से गाँव भ के लोगनि के काम चले। कवनो कारण से एह प बगइचा त ना बन सकल बाकिर एकर नाम पड़ गइल- नवका बगइचा। हं, एह जमीन प दू-चार गो बइर के फेड़ अपने जाम गइल बाड़न स।

अब नवका बगइचा के बगले से चार लेन वाली सड़क बनावे के काम सुरू भइल बा। इ सड़क बक्सर से बनारस तक जाई। बक्सर से पटना तक सड़क बन गइल बिया। माने पटना में गाड़ी प बइठी त सड़ाक दे बनारस। अब इ सड़क से देस-बिदेस के घुमनिहार बड़की-बड़की गाड़ी से आई लोग। सरकार तय कइले बिया कि एह सड़क से गुजरे वाला लोगनि के सुभीता खातिर नवका बगइचा के जमीन प बाजार बनी। एह में बड़की-बड़की दोकान खुलिहन स। अइसन दोकान सब जवन देस-दुनिया के बड़-बड़ सहर में होखेली स। सुधाकर यादव के बड़का लइका बक्सर पढ़ेला। उ बतावत रहे कि अमेरिका में जवन खाये पीये के सामान बिकाला उ एहिजो बिकाये लागी। उ त कवन दो कंपनी के नांव बतावत रहे। बाकिर उ कुल्हि दुकान में गाँव के लोग त घुसियो ना सकेला खरीदे के बात त दूर। सुनाता कि ओह में सिनेमा हहल भी खुली। जब से इ खबर गाँव में आइल बिया तबे से खाली इहे प बात होखतिया। नवहा लोग त खुश बा बाकिर गाँव के बूढ़-पुरान लोगनि के बुझाता कि अब नवका बगइचा प गाँव के कवनो हक ना रही। जमीन ना रही त गाँव भर के ईद-दशहरा, मेला-ठेला, गेना के खेल आ नाटक के साथे गवनई-बजनई कहंवा होई। इ सभ काम के खातिर आपन जमीन त केहू देबे से रहल। अइसहूं अब एतना जमीन केकरा भीरी रह गइल बा। त अब गाँव भर में नवका बगइचा वाली जमीन के बचावे के काम सुरू भइल बा आ एकर अगुवई गजानन तिवारी आ सुधाकर यादव करताड़े। एकरा खातिर चउसा बलौक आफिस से लेके बक्सर डीएम आफिस में हाकिम लोग के आगे खूब निहोरा होखता। अभी तुरत्ते चउसा के बीडीओ के आफिस से निकलल रहे दूनो लोग। चउसा के बीडीओ नवहा हाकिम बाड़े। नाम राजेन्दर गुप्ता। बक्सरे के हवें। एकदम कांच-कुंआर। इनिका से जादा उमिर त गजानन तिवारी के बड़का लइकवा के होई। बाकिर हाकिम त हाकिम होखेला। उमिर कम होखो भा जादा। दूनो आदमी ओकरा सोझा अइसन निहुरल लोग कि डांढ़ में दरद हो गइल। बीडीओ राजेन्दर गुप्ता उ लोगिन के निहुरे के तरीका प ठठा के हँसले- 'अरे ठीक बा भाई। अब कवनो राजा-महाराजा के जमाना नइखे। ठीक से खाड़ होखे बतावऽ लोग काहे आइल बाड़ऽ?'

ओकर बोले के अंदाज प गजानन तिवारी एकदम बलिहार। एही से नू कहाला कि जिमवारी वाला काम नया उमिर के लोगनि के देबे के चाहीं। देख त केतना बढ़िया से बतियावताड़े हाकिम। उ दूनो हाथ जोड़ लिहले- 'अरे हाकिम। हमनी का खातिर रउवे राजा आ रउवे महाराजा। रउवे सरकार आ रउवे कोरट-कचहरी। हमनी के पुकार रउवा ना सुनब त के सुनी?'

'बताव लोग का संकट बा?' बीडीओ गजानन तिवारी के बोलला के तरीका पर मुसुका के कहलन।

'हुजूर संकटे संकट बा। हमनी के घर परमाननपुर ह। हमनी के गाँव के बगल से संड़क निकलतिया।' गजानन तिवारी अइसे बतवलन जइसे बीडीओ साहेब के इ बात पता ना होखे।

'अरे त एह में संकट का बा? गाँव के बगल से सड़क बनला से सभका फायदा होई। जमीन के दाम बढ़ी, रोजी-रोजगार के मउका मिली। सुख-सुविधा बढ़ी। एह में कवन संकट बा?' कहके बीडीओ साहेब गौर से दूनो आदमी के चेहरा देखलन। फेनू ओही तरे मुसकइलन जइसे कवनो हकीम मरीज के बेमारी जान के हंसेला। उ दूनो हाथ ऊपर उठवलन आ तरनिया के जम्हाई लिहलन। एकरा बाद गंभीर होखे कहलन- 'बुझाता जे सड़क के खातिर तू लोगनि के जमीन लिहल जाता। बाकिर जमीन लिहल जात होई त मुआवजा भी दीहल जात होई। बढ़िया मुआवजा। अब त मुआवजा देख के लोग सड़क का खातिर आपन जमीन देबे खातिर पगलाइल बा।'

'ना हुजूर, हमनी के जमीन सड़क में नइखे जात। हमनी के भीरी जमीने केतना बा?' अबकी सुधाकर यादव मुँह खोलले।

'तब?' कह के बीडीओ सोझा रखल फाइल प झुक गइलन। उनुका बुझाइल जे इ लोग एही तरे आपन नेतागिरी में एहिजा आ गइल बा।

अबकी गजानन तिवारी हाथ जोड़ के कहलन- 'हुजूर संकट गाँव के हाई स्कूल के पीछे के खाली परती जमीन के लेके बा। पता चलल हा कि सरकार उ जमीन बाजार बनवावे खातिर ले तिया।'

बीडीओ साहेब आपन मुँह ऊपर उठवलन। अबकी उनुकर चेहरा प खिसिअइला के भाव आ गइल रहे- 'अच्छा त एह खातिर आइल बाड़ लोग। अरे ओहिजा बड़का बाजार बनी। उ रोड से हो के बड़-बड़ गाड़ी से देस-बिदेस के लोग बनारस जाई। ओह लोगनि के सुभीता का खातिर दर-दोकान होखे के नू चाही। अब मान ल कि केहू पटना से आपन गाड़ी से चली आ बक्सर पार करत-करत भुखा जाई त कहंवा खाई-पीही। इ त पुन्न के काम बा।'

'बाकिर सरकार...।' गजानन तिवारी कुछ बोले के चहलन बाकिर बीडीओ साहेब हाथ उठा के उनुका के रोक दिहलन- 'उ जमीन त सरकारी ह। ओकरा के लेके एतना काहे परेसान बाड़ लोग।'

'हुजूर उ गाँव के नवका बगइचा ह।' सुधाकर यादव कह के चुपा गइलन।

'नवका बगइचा? बगइचा कहां बा ओकरा प। खाली जमीन बिया। आ सरकारी जमीन प जे बगइचा बनाई उ जेल जाई।' बीडीओ साहेब अपना कुरसी प पसर गइल रहले।

अबकी गजानन तिवारी मामिला साफ कइले- 'हुजूर, गाँव के लोग ओह जमीनिया के नवका बगइचा कहेला। पूरा गाँव में एगो उहे खाली जमीन बिया जवना प गाँव के मए काम होखेला। अइसे त गाँवे के लइका ओह जमीन प गेना खेलेलन स। बाकिर दुर्गापूजा में भगवती के मूर्ति ओहिजे रखल जाला। रामलीला आ नाटक का साथे गवनई-बजवनई ओहिजे होखेला। ईद के नमाज ओहिजे पढ़ल जाला।'

'त का चाहताड़ लोग? सरकार आपन जमीन छोड़ देबे?' अब बीडीओ साहेब के आवाज पहिले वाला ना रह गइल रहे। एह में डांटे के भाव जादा रहे।

'अरे ना हुजूर बाकिर सरकार त हमनिए के नू ह। हमनी के दुख-सुख उहे नू देखी। अब बाजार त गाँव का आगे-पाछे कहूं बन सकेला सरकार। हुजूर रउवा तनी-मनी हमनी का बारे में सोचतीं तब इ जमीनिया बांच जाइत।' गजानन तिवारी तनी मधिम आवाज क के बोललन। 'पगला गइल बाड़ का तू लोग? अब नियम आ कायदा सिखइब तू लोग?' बीडीओ साहब के अंदाज से बुझाइल जे अब उ बात करे के मूड में नइखन।

सुधाकर यादव मुँह खोले के कोसिस कइले तले बीडीओ साहेब चपरासी के इसारा कइलन। चपरासी आ के दूनो जाना के बांह पकड़लस आ बाहर जाए के कहलस। गजानन तिवारी के त बुझाइल कि बीच बाजार में केहू धोती खोल दिहले होखे। गाँव-घर भा इलाका-जवार में कोई अइसे कइले रहित त उ अगिया बइताल हो जइतन। बाकिर इ त सरकारी आफिस। उ आपन मए खीस कवनो जहर-माहुर मतिन पी गइलन। सुधाकर यादव के त मन कइल कि

चपरसिया के दर्रे प पटक देस। बाकिर फेनू सोचले कि एह में चपरसिया के कवन दोस बा? उ त उहे नू कइलस जवन ओकरा से कहल गइल।

बलौक आफिस से बाहर आके दूनो आदमी चुपचाप चाय के दोकान प बइठ गइल लोग। भोरही में गाँव से उपासे निकलल रहे लोग। अभी दिन के एक बजत रहे। बाकिर दूनो आदमी के बुझाये जे भूखे मर गइल होखे। बाहर अइला के बाद सुधाकर यादव त एकदम सटक सीताराम हो गइल रहन। उनुका बुझइबे ना करे कि अब का कइल जाए। चिंता में त गजानन तिवारीयो पड़ल रहन। बाकिर उनुका भगवान के नियाव प अनघा भरोसा रहे। उ मान के चलत रहन कि भगवान गलत के साथ कबो ना देस। चाय के गिलास रखला के बाद दूनो अदमी बस अड्डा का ओरि पैदले चल दीहल। बीच राह में सुधाकर यादव गजानन तिवारी के कान्ह प हाथ रखलें- 'अब का कइल जाई भाई? बीडीओ त कवनो बात सुने के तइयार नइखे। हमरा त इहे नइखे बुझात कि अब गाँव के गेना खेले वाली टीम के का होई। हमार त मन रहे कि अबकी नवका बगइचा का एक ओरि अखाड़ा खोनवइती आ गाँव के लइकन के पहलवानी सिखइती। बाकिर पता ना भगवान का चाहताड़ें।'

गजानन तिवारी धीरे से कहलें- 'मन छोट मत कर सुधाकर भाई। भगवान संकट देबेलन तक उबारे के रस्तो बतावेलन। चल गाँवें चलल जाव आ लोगनि से बतियावल जाव। आखिर जवन काम करे के होई उ त लोगनि के राय-बिचार से ही होई नू।'

गाँवें पहुँचत-पहुँचत सांझ हो गइल रहे। थाक के चूर रहे दूनो आदमी। गजानन तिवारी त घरे पहुँचते बिछावन प अइसन गिरलन कि खाहू खातिर ना उठलन। पंडिताइन जगावे के कोसिस क के हार गइली। फेनू तनमना के कहली- 'अधिया रात में भूख लागी त हमरा के मत जगाइब। हमहू दिन भर खटीला। अब हमहू सुतब त होस ना रही। आ इ कवन रोजगार ठान देले बानी रउवा। गाँव के लोग आपन काम में लागल बा आ इ दूनो संघतिया चउसा-बगसर एक कइले बा लोग? बुझाता जे सभसे अनघा समय रउवे लोगनि के भीरी बा।' कहत-कहत पंडिताइन कब सुत गइली उनुको पता ना चलल।

भोर होखे के पहिलही नीन टूटल गजानन तिवारी के। कस के भूख लागल रहे। बाकिर बिना पूजा पाठ कइले खाये के कवनो जोगाड़ ना रहे। चुपचाप मन मार के लोटा उठवलन आ खेत का ओरि निकल गइलन। लउटत खा कुछ सोच के सुधाकर यादव का घर के ओरि मुड़ गइलन। सुधाकर यादव के घर के बाहर एगो नीम के फेड़ रहे। इ फेड़ तरे गाँव भ के लइका जमा रहन स। सुधाकर यादव बीच में खटिया प बइठल रहन आ चारो ओरि से लइका घेरले रहन स। सुधाकर यादव लइकन के किछुओ समझावत रहन बाकिर लइकन के देख के बुझात रहे कि उ खिसिया के लाल भइल बाड़न स। जइसही सुधाकर यादव गजानन तिवारी के देखलन, हहा गइलन। मए लइका चीचीया के नारा लगइलन स- 'गोड़ लागिला बाबा।'

'जीय लोग। मउज कर लोग।' कह के गजानन तिवारी मुसकइलन।

'बढ़िया टाइम प आइल बाडऽ भाई। चाह बनता। पी के जइह।' सुधाकर यादव खटिया प गजानन तिवारी के बइठे के जगह बनवलन।

'आरे ना सुधाकर। हम त अइसही एने बढ़ गइनी हा। नहान-धेयान नइखे भइल। बिना नहान-धेयान के कइसे चाह पीयल जाई।'

'अरे मरदे। चाह कवन खाये चीज ह। जइसे पानी ओइसे चाह। बइठऽ आ लइकन के बात सुन। कहताड़े स कि केकर बेवत बा कि नवका बगइचा प चढ़ि जाई। जे हिम्मत करी ओकर छाती के बाती टूटी।' सुधाकर यादव हँस के कहलन।

'ना बबुआ ना। मारपीट ना। मारपीट भा लड़ाई-झगड़ा से दुनिया के कवनो संकट दूर नइखे भइल। ओइसे काम अभी सुरूओ ना होई। अभी टाइम लागी।' गजानन तिवारी सुधाकर यादव के बगल में बइठ गइलन।

'जानतानी बाबा, बस पता चल जाओ कि एकर ठीका के लेता। एगो ठीकेदार धोआ जाई त दोसर कवनो ठीकेदार एहीजा आवे के हिम्मत ना करी।' एगो लइका एकदम गजानन तिवारी के सोझा आके कहलस।

'पगला गइल बाड़े का रतन। आरे पहिले मए गाँव के जुट के बातचीत करे दे। देखल जाओ गाँव के लोग का कहता। सांझ के ठाकुरबाड़ी में सभके बोलावल गइल बा।' गजानन तिवारी ओकरा के समझवलन।

तले सुधाकर के छोटका लइका चाह लेके आ गइल। लोग कहत रह गइल बाकिर गजानन तिवारी मुँह में चाह के कप ना सटवलन।

सांझ में ठाकुरबाड़ी प भइल जुटान। गाँव के मए टोला से लोग आइल रहे। नवहा लोग के जोस ठाठ मारत रहे। एने बूढ़-पुरान लोग के कहनाम रहे जे सरकार

के जमीन खातिर काहे पगलाइल बाड़ लोग। सरकार के जमीन। सरकार चाहे त लुटा देव। अरे जेतना दिन ओकरा पर गाँव के काम भइल, भइल। अब छोड़ लोग एकर आसरा। बाकिर मुँह में पान चुभलावत इमतियाज मियां एकरा खातिर तइयार ना रहन। उनुकर कहनाम रहे जे जब ले सांस तब ले आस। जब ले जमीन बचावे खातिर लड़ल जा सके तबले लड़ला के काम बा। एही तरे कइसे छोड़ दी आदमी। एन्ने सुदरसन कमकर के कहनाम रहे जे बाजार बने में कवनो हरज नइखे। गाँवे के लइकन के काम-धाम मिली। दोसरा ओर बंसरोपन तिवारी जमीन प गाँव के हक बचावे खातिर धरना-परदरसन के बात करत रहन। गाँव के लइका अलगा भड़कल रहन स। ओहनि के कहनाम रहे जे गाँव में हरवा-हथियार के जोगाड़ रहे के चाही। लमहर लड़ाई के तइयारी होखे के चाही। जे जमीन प चढ़े ओकर हिसाब-किताब कई दिहल जाव।

केहू इर घाट के बात कहे त केहू मीर घाट। एक्के साथे कई लोग बोलत रहे। एतना हल्ला होखत रहे जे बुझइबे ना करे जे के का बोलता। एही हल्ला में खड़ा भइले गजानन तिवारी। हाथ उठा के चुप रहे के इसारा कइले। उनुका इसारा कइला के देर रहे कि मए लोग चुपा गइल। तिवारीजी खखार के गला साफ कइले आ कहले- 'देख लोग, जमीन त गाँव के हाथ से ना जाए दिआई। एकरा खातिर लड़ाई त लड़ल जाई बाकिर ओइसे ना जइसे लइका लोग कहता। जुलूस निकालल जाई, धरना दिहल जाई, जमीन प केहू बाहरी ना घुसे, एकरा खातिर एकरा प घेरा डालल जाई।'

गेना खेले वाली टीम के कप्तान इकबाल जोर से हंसलस- 'का कहतानी ए बाबा। जमीन घेरब जा त पुलिस आई आ मार लाठी के सरिया दीही। तब का कइल जाई। त जबाब देबे खातिर हमनियो के तइयारी करे के चाही।'

अब सुधाकर यादव मुँह खोललन- 'लाठी मारी त मार खाइल जाई। अरे गान्ही बाबा एही राह प चल के अंगरेजन के भगा दिहलें, इ त आपन सरकार हिय। इ बात कइसे ना सुनी।'

इकबाल खड़ा भइल- 'त ठीके बा। अगिला सोमार से बान्हल जाए मोरचा। बाकिर गजानन बाबा आ सुधाकर भइया के राह से काम ना चली त हमनी के राह अपनावे के होई।'

एकरा बाद ठाकुरबाड़ी के ओसारा में बने लागल लड़ाई के रूप रेखा। देर रात तक सभकरा से राय विचार क के परचा-पोस्टर लिखाये लागल। तीन दिन के बाद सोमार से नवका बगइचा के सामने धरना देबे के तय भइल रहे। सभकर बारी बन्हा गइल। बगइचा का सोझा एगो बड़का बैनर टंगा गइल। एह प लिखल रहे- 'गाँव आपन संपत्ति ना छोड़ी, नवका बगइचा प बाजार ना बनी।'

सोमार आइल त गाँव के नकसे बदल गइल। परसासन के धरना का बारे में पता चल गइल रहे। एन्ने नवका बगइचा में धरना सुरू भइल आ ओन्ने खम-खम पुलिस। पुलिस के देख के गाँव के लइकन के जोस अउर चढ़ गइल। जोर-जोर से नारा लागे लागल- 'नवका बगइचा छोड़ब ना, सरकार के बात मानब ना।' हफ्ता दिन तक अइसही धरना चलल। पुलिस आके खड़ा हो जाओ आ एन्ने से नारा सुरू हो जाए। ना पुलिस कुछ करे आ ना गाँव के आदमी।

बाकिर हफ्ता दिन के बाद नजारा बदलल। अबकी गाड़ी प बड़का हाकिम अइले। बड़का हाकिम के माने उहे बीडीओ साहेब। हाकिम गाड़ी से उतरले आ केहू के इसारा कइले। एगो आदमी दउग के भोंभा लिया के बीडीओ साहेब के हाथ में धरवलस। बीडीओ साहेब भोंभा हाथ में लेके दू-तीन बार हलो-हलो बोलले। फेनू खंखार के गला साफ कइले आ चिचिया के बोलले- 'गाँव के मए लोगनि के बतावल जाता कि इ जमीन सरकारी ह आ एह प दू दिन में काम सुरू होखे वाला बा। त काल्हू से इ जमीन खाली हो जाए के चाही। ना त सरकार अपना तरीका से खाली कराई आ एकर मए जिमवारी गाँव के लोगनि के होई।'

बोलला का बाद उ सोझा दरी प बइठल गाँव के लोगनि का ओरि देखलन। उनुका उमेद रहे कि उनुकर बात के असर होई। असर भइल बाकिर उल्टा। इकबाल खड़ा हो के जोर से चिचियइलन- 'लाठी-गोली खाइब जा।' पीछे से मए गाँव चिचियाइल- 'जमीन के ना छोड़ब जा।' बीडीओ गजानन तिवारी के भीरी आवे के इसारा कइलन। गजानन तिवारी आ सुधाकर यादव धीरे-धीरे उनुका ओर बढ़ल लोग। बीडीओ गजानन तिवारी के कान्ह प हाथ रखलन- 'बात मान जा लोग। काहे मए गाँव के फेरा में डलले बाड़ लोग। जमीन त सरकार लेइये लिही, गाँव के लोग प केस मुकदमा होई तवन अलग। लाठी गोली चली त केकर नुकसान होई।'

गजानन तिवारी हँसलन- 'अब जवन हरि के मरजी। हमनी के त चल देले बानी जा। जीत मिली बाह-बाह, हार मिली त बाह-बाह।'

बीडीओ तरनिया के बोललन– 'त ठीक बा। काल्हू मैदान खाली न होई त जबरिया खाली करावल जाई।'

पहिले बीडीओ के गाड़ी निकलल आ ओकरा पीछे पुलिस के गाड़ी। मैदान में धरना देबे वाला लोगनि के इ बुझा गइल रहे जे अब लड़ाई के अलगा मोरचा बान्हे के होई। सांझ होते गाँवे के लइका ढोलक-हारमोनिया ले आइल रहन स। तिरलोकी मिसिर मइया के गीत सुरू क देले रहन– नीमिया के डांढ़ि मइया लावेली हिलोरवा कि झूलि रे झूलि ना...। मए गाँव के लोग थपरी बजा के साथे-साथे गावे लागल रहे। मइया के गीत खत्म होते इमतियाज मियां सुरू कइलन– हमलोग हैं ऐसे दीवाने...। एन्ने गवनई-बजनई चलत रहे आ दोसरा ओर गजानन तिवारी आ सुधाकर यादव के मुँह प फेफरी पड़ल रहे। काल्हू पुलिस लाठी चलाई आ लोगनि के पकड़ के ले जाई ओकरा बाद का होई? उ लोग के कवनो राह ना लउकत रहे।

अगिला दिन भोर होते पुलिस के दरजन भर गाड़ी। पचासन पुलिस के जवान। सभका हाथ में लाठी। साथे दू-तीन गो खलिहा बस। अजबे नजारा रहे। एक ओरि मोरचा बन्हले पुलिस के जवान त दोसरका ओरि गावत-बजावत आ नारा लगावत गाँव के लोग। पूरा नवका बगइचा जइसे लड़ाई के मैदान बनल होखे। एगो पुलिस के अफसर हाथ में भोंभा लेले सोझा आइल आ चिचिया के बोललस– 'पांच मिनट में जे मैदान ना खाली करी उ आपन हालत के खुदे जिमवार होई।'

एतना बात कह के उ सिपहियन का ओरि देखलस। सिपाही इसारा बुझलन स आ धरना देत गाँव के लोगनि प टूट पड़लन स। दनादन लाठी। निरदई सिपाही अइसन लाठी चलावें स जइसे सोझा आदमी ना कवनो मवेसी होखे। केहू के माथा फाटल त केहू के हाथ-गोड़ टूटल। बाकिर धरना प बइठल एक्को आदमी मैदान छोड़ के ना हटल। गजानन तिवारी के माथा फटला से पूरा मुँह आ कपड़ा खून से रंगा गइल रहे त सुधाकर यादव के हाथ टूट के एक ओरि लटक गइल रहे। इमतियाज के गोड़ टूट गइल रहे आ इकबाल के त मार के अलस्त कइ देले रहन स। एकरा बाद मए घवाहिल लोगनि के उठा के बस में डाले सुरू कइल गइल। थोड़ही देर के बाद धरना देबे वाला मए लोगनि के बस में ठूंस दिहल गइल। एकरा बाद पुलिस अइसन मदमस्त चाल से चलल जइसे पूरा जग जीत लेले होखे। एगो पुलिस अफसर फोन प बीडीओ के बतावत रहे– 'सर, मए मैदान खाली। काल्हू से काम सुरू करा दिहल जाव।'

अगिला दिन भोरही गाँव में धड़धड़ात तीन गो ट्रक पहुंचलन स। तीनों में ईंटा, सीमेंट आ बालू। साथे पुलिस के जीप। मए ट्रक नवका बगइचा का सोझा आ के रुक गइलन स। पुलिस के अधिकारी ट्रक वालन के ललकरलस– 'घुस जा मैदान में। आ मए सामान उतार द लोग।'

ट्रक के साथे अपना कार में चलत ठीकेदार नीचे उतरल। सोझा जवन हाल रहे उ देख के ओकर पूरा हाड़ कांप गइल। सोझा मए गाँव के मेहरारू आ लइकी खड़ा रही स। आ ओहनी के पीछे गाँव के मए लइका-बुतरू। सभका हाथ में लाठी। नवका बगइचा में घुसे के राह बंद। अब ट्रक केने से घुसो। पुलिस के अफसर दउर के आगे आइल। सोझा मेहरारूअन के देख के ओकरो होस गायब। ओकरा कुछ ना बुझाइल त बीडीओ के फोन लगइलस– 'सर, आज काम सुरू कइल मुसकिल बा। गाँव के मए मेहरारू हरवा-हथियार का साथे राह रोक के खड़ा बाड़ी स। लेडिज फोर्स बोलावे के होई सर।'

ओन्ने से एकदम चुप्पी। एन्ने से पुलिस अफसर हलो-हलो कइले जात रहे आ ओन्ने जइसे हाकिम गायब। तनी देर के बाद ओन्ने से आवाज आइल– 'मए सामान के साथे लउट जा लोग। डीएम साहेब दू दिन बाद गाँव के लोगनि के साथे बात करिहें ओकरा बादे कवनो कार्रवाई होई।'

पुलिस के गाड़ी आ ट्रक गाँव से बाहर जाए लागल रहे। नवका बगइचा में फेनू गीत गावे लागल रहे लोग– नीमिया के डांढ़ मइया.....।

❑ फ्लैट नं. 301, निरंजन अपार्टमेंट, आकाशवाणी मार्ग खाजपुरा बेली रोड, पटना, बिहार । मो.– 09934994603

वापसी

✍ **मीनाधर पाठक**

ट्रेन से उतरते हम घड़ी देखनी। दिन के चार बजत रहे। जल्दी-जल्दी डेग उठावत हम इस्टेसन से बहरा निकल के आटो बुक कइनी। व्हाट्सऐप पर मिलल सूचना एक बेर फेरु से देखनी आ पता आटो वाला के बता दिहनी। ऊ जवन किराया कहलस, हम तइयार हो गइनी। काहे कि हमके कवनों अंदाज ना रहे ओ जगहि के कि केतना लाम, चाहे नियरा बा। भींड़ में रेंगत आटो आगे बढ़े लागल। हमार मन बेर-बेर अतीत में झाँकत रहे बाकिर ट्राफिक के हो-हल्ला आ आटो के झटका हमके बर्तमान में खींच ले आवत रहे। स्टेशन के भींड-भाड़ से निकल के आटो रफ्तार पकड़ लिहले रहे।

"हे भगवान जी ! ईहे करे के रहे त मिलइबे काहें कइनीं? जिनगी में भाग-दउड़ में हमनिका एक दुसरा के भुला गइल रहनीं जा। बरीसन पहिले हमनीके साथ छूट गइल रहे। त काहें?" हमरे भीतर हूक उठत रहे। बुझात रहे कि हमार कवनों महंग चीज हेरा गइल होखे। बाकिर आजु अइसन काहें लागत रहे ? ना त कबो ऊ कुछ कहलस ना हम। आ काल के धारा में सब कुछ बहि बिला गइल। ऊ कहीं, आ हम कहीं। ओकरे बाद ढहत-ढिमिलात जिनिगी आपन राहि पकड़ लिहले रहे। हमनीका आपन-आपन राहि तय करत रहनीं जा कि जिनिगी के एह मोड़ पर ओकरा से एंगा मिलल आ कुछ कहले बिना ए तरे चल दीहल हमके भीतर ले झाकझोर दिहले रहे।

एकदम से आटो सड़क छोड़ के एगो कच्चा राहि पकड़ के रुक गइल। हमके बुझाइल कि मंजिल आ गइल बाकिर आटो वाला मुँह में भरल मसाला थूक के गुमटी वाला से रस्ता पुछलस आ फेरु से चल दिहलस।

अब हम अपने आस-पास देखनी। आटो शहर से बहरा की ओर बढ़त रहे। सड़क से लागल नहर हरहरा के बहत रहे। नहर के दुनू ओर कच्चा सड़क रहे आ ओही में से एक पर हमनीका हचका खात चलत रहनी जा। नहर के दुनू किनारे लामे-लामे ले खेतेखेत देखात रहे। कहीं-कहीं कई-कईगो खेत काँटदार तार से घेरल रहे आ बोर्ड पर अलग-लालग सोसायटी के नाँव लिखल रहे। जवना के देखत आटो वाला अपने धुन में बोलत जात रहे।

"इधर गाँव वालों की सारी उपजाऊँ जमीने बिल्डरों ने खरीद ली है। वे यहाँ बड़ी-बड़ी बिल्डिंगे बना कर भारी मुनाफा कमाएँगे पर गाँव को वैसे ही छोड़ देंगे। इनके आ जाने से यहाँ की जमीनों के भाव आसमान छूने लगे हैं। कोई आम आदमी तो यहाँ जमीन लेने की सोच भी नहीं सकता। किसी तरह लेना भी चाहे तो ये बिल्डर उसे लेने नहीं देते क्योंकि उन्हें तो यहाँ पूरा का पूरा रिहाइशी शहर बसाना होता है। ये पूरे के पूरे मगरमच्छ हैं साहब ! धीरे-धीरे पूरे गाँव की जमीनों को निगलते जा रहे हैं। देखना, एक दिन ये गाँव भी लील जाएँगे।"

हम अपनी आगे के राह कस के पड़ले बइठल झुलुआ झूलत बेमन से ओकर बात सुनत रहनी। तबे कुछ दूर आके ऊ फेरु से आटो रोक दिहलस।

कुछु लइका ढलान पर बइठ के बकरी चरावत रहले सन। ओकनी से पुछला पर पता चलल कि सामने जवन पगडंडी नीचे उतरतिया, ओही पर कुछ दूर आगे जा के हमार मंजिल रहे। ओहिजा ले आटो ना जा सकत रहे, एसे अब हमके पैदले जाए के रहे।

आटो से उतर के हम ओ पगडंडी के ओर बढ़ गइनी। ऊ लइकवा कुल हमके बड़ी चिहा के देखत रहले सन। एगो त राहि बतावत हमरे संघवे चल दिहलस। सड़क से उतरके ओ पगडंडी पर अबहिन लगभग सौ डेग चलल होखब कि ऊ लइका एक ओर अँगुरी देखा के कहलस, “वो रहा।”

हम एक बेर चारू ओर देखनी। सुरुज देव डूबत रहलें। उनके ललाई आसमान में डोलत उज्जर बादर के अपने रंग में रंग दिहले रहे। बीचे-बीचे एगो-दुगो करिया भूअर बादरो लटकल रहे। चारू ओर बबूर के झाड़-झंगाड़ रहे। एक ओर बाँस बेयारि के साथे झूमत अजब-अजब बोली बोलत रहे। एक ओर ईंटा के जर्जर देवाल पर टीन सेड के नीचे लकड़ी के ढेर लागल रहे बाकिर कवनो आदिमी में नाँव निसान ना रहे। ओकरे लगवे लमसम चार फुट ऊँच एगो चहारदिवारी रहे। जवना के गेट जंगिया के जगहि-जगहि से झर गइल रहे। ओकरे ऊपर बोर्ड लागल रहे। ओपर कुछु लिखल रहे जवना के मुर्चा चाटि लिहले रहे, हम उहे अक्षर पढ़े के कोसिस करत रहनी। ई सोचि के कि का जाने ओने केहू होखे, हम ओ गेट के ओर चल दिहनी बाकिर अपने पाछे से आवत आवाज सुन के ठिठक गइनी।

“उधर कहाँ जा रहे हैं बाउजी ?”

हम चिहुक के घुमनी। देखनी त एगो करिया के बरिआर आदमी हमरे ओर आवत रहे।

“आदर्श स्वर्गधाम यही है न?” हम ओकरा से पुछनी।

“हाँ बाउजी, लेकिन…!” काजाने ऊ कुच्छु अउरी कहल चाहत रहे, बाकिर चुपा गइल।

“क्या मैं भीतर जा सकता हूँ?”

“अब तो सूरज डूबने वाला है बाउजी। गेट बंद करने ही आया हूँ। संका से देखत हमसे कहलस ऊ।

“कल एक स्त्री की चिता यहीं जली थी। क्या मुझे वहाँ तक ले कर चल सकते हो?” ओकरे बाति पर ध्यान दिहले बिना हम कहनी।

“हाँ, कल दोपहर में एक औरत की मिटटी ले कर आये थे कुछ लोग। उस समय मैं बाबा के साथ यहीं था। तबसे कोई दूसरी मिटटी नहीं आई यहाँ। लेकिन उसका फूल तो चुन ले गए लोग !”

“तुम मुझे ले कर चल सकते हो?” हम आपन बाति दोहरवनी।

“अभी तो अन्धेरा होने वाला है बाउजी। आप कल आइये, मैं आपको वह जगह दिखा दूँगा।”

“बस दो मिनट के लिए।” हम जेब से पर्स निकाल के ओहिमे से पाँच सौ के नोट निकाल के ओकरे ओर बढ़ावत कहनी। हमरी आँखि में निहोरा के भाव उतर आइल रहे। नोट देख के ओकरो गोली नियर आँखि बहरा निकल आइल रहे।

“चलिए बाउजी पर दो मिनट से ज्यादा मत रुकिएगा। अन्धेरा होते ही यहाँ आत्माएँ मंडराने लगती हैं। आपको शायद मालूम न हो, बरसों पहले यहाँ पास के निरंकारी भवन में अकालियों के साथ जब मार-काट मची थी, तब सैकड़ों लोग मारे गए थे। बाबा बताते हैं कि तलवारों से न जाने कितनी गरदनें कटी थीं। पूरा निरंकारी भवन कलिंग युद्ध का मैदान बन गया था। चारो तरफ खून ही खून और उसमें तड़पते बिखरे हुए मानव अंग ! बड़ा भयानक सीन था बाउजी ! तब इस स्वर्गधाम में तिल रखने की जगह नहीं थी। दूर-दूर तक नहर के दोनों किनारे भी चिता की आग से जल उठे थे। आस-पास के पेड़-पालो सब झुलस गए थे। इतनी चिताएँ जली थीं कि पूरी रात यहाँ से उठती लपटों को ये शहर देख रहा था। बाबा बताते हैं कि तभी से यहाँ पर रात में अजीब-अजीब आवाजें आती हैं। सबकी अकाल मृत्यु हुयी थी ना बाउजी ! इस लिए मैं शाम को ही गेट में ताला लगा कर चला जाता हूँ। वैसे भी अब बहुत कम लोग ‘मिट्टी’ ले कर यहाँ आते हैं।”

हम ओकरे पाछे-पाछे गेट के भीतर आ गइनी। ऊ का कहत रहे, हमरी समझ में कुछ ना आवत रहे। हमके त चारू ओर बस प्रिया देखात रहे। एहिजा जहाँ-जहाँ ‘माटी’ जरल रहे, तहाँ-तहाँ के धरती करिया हो गइल रहे। जगहि-जगहि करिया गोला देखात रहे जवन शून्य के आकृति बनावत रहे। हमार जियरा धाड़-धाड़ करत रहे। प्रिया के सुकुवार मूरत हमरी आँखी के सोझा घूमत रहे। अबहिन कुछ दिन पहिलवे त फोन पर ओसे बात भइल रहे।

“हमनीका बहुत दूर निकल अइनीजा पियूष।” सुन के हम भीतर ले हिल गइल रहनी। मुँह से कुछ कहत ना बनल।

“तूँ एको बेर ई जाने के कोसिस ना कइला कि हम कवने तरे बानी। कइसन बानी? कवने हाल में बानी ?” एगो लमहर साँस लेत ऊ कहले रहे।

“केतना बेर एके बाति कहबू? तोहरा का पता कि तोहरे शहर गइला के बाद हमरे ऊपर का बीतल रहे? ओ समय हमरे घर भीतर के स्थिति का रहे ? संयुक्त परिवार में मुखिया के आँखि टेढ़ हो जा, त परिवार हेवान हो जाला। ऊहे भइल हमरे घरे। खेत-खरिहान, घर-दुवार सब बँटा गइल। बाबूजी के साथे हमहूँ ओही में अझुरा के रहि गइनी। अपने बड़ भाई के अइसन कइला से आ उनसे अलगी-बिलगा से बाबूजी एकदम टूट गइल रहनीं। उहाँके हम

ना सम्हरती त ओ जुनी दूसर घरी लाग गइल रहित आ कुछ समय बादे पता चलल कि तोहार बिआह हो गइल।" सुन के कवनो जबाब ना दिहली ऊ।

'तोहके का मालूम कि तोहरे बिआह के सुन के हमरे ऊपर का बीतल रहे?" हम चाहिओ के ई बाति ना कहि पवनी। हमनी के बीचे कुच्छु देर खातिर चुप्पी घेर लिहले रहे।

"अच्छा, सुना ! हमार बड़ा मन बा कि हम गाँवे जाईं आ ओहिजुगिओ, जहँवा हमनिका खेलत रहनी जा।" बाति बदल के कहली ऊ। ओ समय ऊ एकदम से हमके ऊहे बलकपन के छोट प्रिया देखाए लागल रहली।

"पागल।" कहि के हम हँस दिहनी।

"अब ऊ कुल जगहि कहाँ बा रे ! मंदिर वाला छोड़ के सब पोखरा पटा गइल। पेड़-पालो उधिया गइल। सब बिला गइल।" सुन के ऊ मायूस हो गइल।

"पियूष, बड़ा मन करेला गाँवे जाए के। केतना साल हो गइल गाँव गइले।"

"हँ प्रिया, कुछु पैतीस-चालीस बरीस हो गइल।"

"बाबूजी के ना रहला पर परिवार में जमीन जायदाद के लेके एतना अलगाव आ मन मोटाव हो गइल कि गाँव जाए के रस्तवे बंद हो गइल।" कहत-कहत उनकर बोली काँप गइल रहे। "परेशान काहें हो ताड़े रे ! आरे हम तोके गाँवे ले के चलब!" ओकर मन राखे खातिर कहि दिहनी हम। सुन के ऊ ठठा के हँसलि।

"हँसु जनि। देखि लीहे, एक दिन तोर हाथ पकड़ के गाँवे ले जाइब हम।"

"हाथ...! आ तूँ? जब पकड़े के रहे तब त पकड़ल ना, अब ले चलबा हाथ थाम के !" हमार बाति सुन के हँसी-हँसी में तंज कइली ऊ।

"ओ दिने कहाँ मालूम रहे कि एकदम से हार्ट अटैक से प्रिया...!" हमार आवाज कंठे में अटक के रहि गइल। "ये रहा बाबूजी !"

अचकचा के देखनी हम, ऊ एगो करिया गोला के लगे रुक गइल रहे। देख के हमरे भीतर लहर उठे लागल। देहि काँप गइल। हम ओहिजा बइठ गइनी। हँसत-खेलत प्रिया राखी हो गइल रहे। हम राखी छूवे खातिर हाथ बढ़वनी कि तबे जइसे प्रिया के आवाज हमरे काने में गूँज उठल।

"छुइहा जनि, नाहीं त चाची से ओरहन देब।"

एकदम से हमरा लइकई के बाति ईयाद आवे लागल। मेज पर धइल कोर्स के किताबिन में चोरावल कहानी के किताब उठा लिहले रहे प्रिया।

"देखू, हमार किताब लौटा दे।" हम झपटनी।

"नाहीं, पढ़ि के देब।" कहत किताबिया ऊ पाछे क लिहले रहे।

"देखु, पहिले हम पढ़ब, ओकरे बाद तें पढ़ लीहे।" कहते कहत जइसहीं हम ओकरा के पकड़े चलनी, ऊ हवा हो गइल। हम गोड़ पटक के रहि गइनी।

दू दिन बाद जब ऊ किताब लौटावे आइल तब हम आँख तरेरत ओकर झोंटा नोचे वाला रहनी कि, "देखा, हाथ मत लगा दीहा, हाथ मत लगा दीहा पियूष ना त ठीक ना होई।" जइसे प्रिया अँगुरी देखावत, आँखी तरेर के बोलत रहे। हमार हाथ काँप गइल। आँखि से लोर के धार फूट पड़ल। "प्रिया, हमनीका ए तरे मिलल जाई, हम सपनों में ना सोचले रहनी।" बुझाइल कि अब्बे हम भोकार पार के रो देब बाकिर आपन रोवाई रोकले हम जेब से दस्ती निकाल के ओहिजा बिछा दिहनी आ एक मुट्ठी राखी ले के गठिया लिहनी।

"बाउजी जल्दी चलिए।" हम चिहुक के ओकरा के देखनी आ उठ के ओकरे साथे चल दिहनी। अबहिन बहरा निकलते रहनी कि एगो हवा के झंकोरा हमके छूवत निकल गइल। "हम जानत रहनी हँ कि तू जरूर अइबा।" बुझाइल जे प्रिया हमरे काने में कहले होखे। हमार रोवाँ-रोवाँ भरभरा गइल। रुमाल के गाँठ पर कसके अँगुरी बन्हा गइल आ जल्दी-जल्दी चल के हम नहर किनारे आ गइनी। घूमत-टहरत आटो वाला हमके देखते अपनी सीट पर बइठ गइल आ आटो स्टार्ट कके घुमावे लागल। हम जइसहीं आटो में बइठनी, देखनी कि ऊहे लइकवा, जवन हमके रास्ता देखावत साथे गइल रहे, बड़ी आस से हमके देखत रहे। दूसरो लइकवा कुल आ के ठाढ़ हो गइल रहले सन।

"इन्हें कुछ दे दीजिये साहब, खुश हो जायेंगे।" ओकनी के देख के आटो वाला कहलस। हम चुपचाप एगो पचास के नोट ओ लइकवा के थमा दिहनी जवन हमरे सथवा गइल रहे। नोट देख के कुलिन्ह के चेहरा फुला गइल रहे।

"कुछ खरीद कर सारे मिल बाँट कर खा लेना।" आटो वाला कहलस। सब मूड़ी हिला दिहले सन।

आटो मेन रोड पर आ गइल रहे। अब हमार मन लवट के अपने शहर जाए के ना करत रहे। आजु प्रिया हमरे साथे रहे। हमरे एहसास में रचल-बसल। हम ओ एहसास के साथे कुछ समय बितावल चाहत रहनी। हम आटो वाला से बस इस्टेशन ले चले के कहनी। ई शहर हमरे खातिर कवनो एतनो अनजान ना रहे। सरकारी काम खातिर कई बेर एहिजा आ भइल रहनी हम। एसे मेन-मेन सड़कियन से परिचित रहनी। आटो भागत चल जात रहे आ हमार मनवो।

घर के बँटवारा, नोकरी खातिर भाग दौड़, बिआह आ ओकरे बाद बाल-बच्चा, दिन-दिन बढ़त जिम्मेवारी के बोझा तरे दबल बीतत समय के साथे प्रिया मन के अतल में याद बन के दबा गइल रहे। कुछ महीना पहिलवे एगो व्हाट्सऐप ग्रुप में ओकर फोटो देख के हम एके नजर में चीन्ह लिहले रहनी। फेर एक दिन डेरात-डेरात ओकराके मैसेज कइनी। एसे, कि का जाने ऊ ना चिन्हलस आ कुछ उलटा पुल्टा हो गइल त का होई। बाकिर अइसन कुछ ना भइल। ऊहो चीन्ह लिहले रहे। ओकरे बाद त लगभग रोजे बातचीत होखे लागल। ओही तरे, जइसे बचपन में होत रहे। एक दूसरा से बतिआवत कबो ई ना बुझाइल कि हमनीका उमर के ढलान पर ठाड़ बानी जा। हमनीका अपना के ओहिजा पाईंजा, जहँवा से साथ छूटल रहे।

"सुना पियूष ! ऊ चकरोड ईयाद बा तोहके ?"

"कवन? ताल वाला?"

"हँ, ऊहे। आ ऊ पीपर ! मन परता तोहके कि हमनिका ओकरे छाँह में बइठ के खेलल करींजा आ ऊ सेमर के पेड़ ईयाद बा न? जब ओकरे नीचे गिरल कोआ से हम रुई निकालीं त तूँ हमसे पूछा कि, का करबे एकरा के? हम कहीं कि अपना खातिर दुलहा बनाइब, त तू रुइया छीन के फूँक मार के उड़ा देत रहल आ कबो-कबो त हमके चपतिआइयो देत रहल।"

"ओकरे बाद का होत रहे? ईयाद बा ?" हम जोर से हँसनी। "हँ, सब ईयाद बा। कुछ भुलाइल नइखे। हमनिका केतना झगड़ा करत रहनी जा।"

"ऊ ताल के रास्ता कबके बंद हो गइल प्रिय अब केहू ओने ना जाला। गाँव ले पक्का सड़क बन गइल बा आ ऊ पीपर आ सेमर कुछु नइखे अब।" सुन के चुपा गइल रहे ऊ।

"बाकिर हमरी ईयाद में त ऊहे बरीसन पहिले वाला पुरनका गाँव बसल बा पियूष! ऊहे गाँव के कुल गली, खेत-खरिहान, बाग-बगइचा, ऊ बरखा आ माटी के सोंह-सोंह महक। ओहिजा जाए के बड़ा मन करेला पियूष।"

"तोर रेकार्ड के सुई एके जगहि आके रुक गइल बा। गाँव गाँव। हम कहनी हँ नू कि तोके गाँवे ले चलब।"

"अब तोहरे साथे कइसे चल सकब हम।" कहि के उदास हो गइल ऊ।

"बस से, ट्रेन से, अउर कइसे? हवाई जहज अपने गाँव में ना उतरेला, जनलू।" सुन के ऊ जोर से खिलखिला के हँसल रहे। हार्न के तेज आवाज से एकदमे हम चिहा के देखनी। बस इस्टेसन आ गइल रहे। आटो वाला के मन मोताबिक किरया दे के हम आगे बढ़ते रहनी कि तबे मोबाइल बाजि गइल। देखनी त घर से नियति के फोन रहे। "रउरा कबले आइब हे !" गाँवें जातानी। दू दिन बादे लौटब।" "अरे ! का हो गइल ? सब ठीक बा न ! अबे त हमनीका गाँवे से लवटनी हँ जा।"

"सब ठीक बा। बस अचानक एगो जरूरी काम आ गइल ह।" कहते कहत हम एगो बस देख के चढ़ गइनी आ पाछे के एगो खाली सीट देख के बइठ गइनी। नियति ए बाति के जानत रहली।

"ठीक बा, बाकिर बतावे के रहल ह न ! आ ई राउर बोलिया काहें एंगा सुनाता हमके ? तबीयत ठीक बा न ?" "हँ, तनी कपार बत्थता, एहीसे।" तबे कंडेक्टर हमरे लगे आ के ठाड़ हो गइलन। "आछा, फोन धरा, बाद में तोहसे बाति करब हम।" फोन काट के हम टिकट खातिर पइसा निकाले लगनी।

अन्हार हो गइल रहे। शहर के जगर-मगर लाइट आँखि में सुई नियर गड़त रहे। सड़क पर भागत-दउड़त सवारी साधन आ ओकुल्हिन के शोर से सचहूँ कपार फाटे लागल रहे। भीड़ में रास्ता बनावत बस अबहिन रेंगते रहे, तबे एक जने आके हमरे सीट लगे ठाड़ हो गइलन आ हमसे घुसुके के कहे लगलन। हम देखनी त ऊ अपनी मोबइलिया में अँखिया गड़वले हमसे इशारा कइलें। हम खिड़की ओर घुसुक गइनी आ आपन मूडी पीछे सीट पर टिका के आँखि मून लिहनी।

बस हमके ले के गाँव की ओर भागत जात रहे। ओही गाँव के ओर जहाँ हमार आ प्रिया के बचपन बीतल रहे। आठवाँ पास कके ऊ आगे के पढाई खातिर अपने बाबूजी लगे चल गइल रहे आ हम गाँवे रहि गइल रहनी। सोचते रहनी कि एक बेर फेर से फोन बाजि गइल। देखनी त ओही व्हाट्सऐप ग्रुप से एगो मित्र के फोन रहे।

"हेल्लो...! यार, कुछ सुना तुमने ? प्रिया नहीं रही।"

"जानता हूँ।" जेब में रखल पोटली पर हमार हाथ चल गइल रहे।

"और तुमने बताया भी नहीं!" ओरहन दिहलन ऊ। "मुझे भी कल रात ग्रुप में ही पता चला।" "हाँ यार ! बहुत दुःख हुआ सुन कर। ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दें।" अफसोस जतवलन ऊ।

"और हम कर भी क्या सकते हैं !" कहि के हम फोन काट दिहनी। आँखि फेरु से छलछला गइल। ग्रुप में केहू ना जानत रहे कि प्रिया के हम बचपन से जानत रहनी। हम पोटली निकाल के भर निगाह देखनी। ओकर सूरति एक बेर फेर हमरे आँखी के आगे घूम गइल। हमार आठवीं के

इम्तिहान रहे आ ऊ हमरा खातिर पेन ले के आइल रहे। "हई ल, एकरा से लेख बना-बना लिखिहा।" बड़हन बड़हन हरिना तरे आँखि मलकावत कहलस ऊ।

"चल होने, जइसे हमरे लगे पेनवे नइखे ! देखु, काल्हिए कीनि के ले अइल रहनी हँ।" अपने जमेट्री बाक्स से पेन निकाल के ओकरा के देखावत कहनी हम। "राखि ल, बिद्या ह।" कहत ऊ हमरे हाथे पेन थमा के हमार अँगुरी मोड़ के मुट्ठी बाँध दिहलस।

"हुँह, पगलेट कही के। कहले रहनी न कि एक दिन तोके गाँवे ले के चलब, देखु आजु ऊ दिन आ गइल आ तेहूँ कइसे चुपचाप बइठल बाड़े। बड़ा डेरात रहले हमरे साथे गाँवे जाए में। आजु का भइल ? बोलु। मुँह में जीभि नइखे का?" पोटलिया के देखत हम बोल उठनी।

"क्या हुआ भाई साहब?" बगलिया में बइठल अदिमिया बोलल त हम चिहुँकनी।

"कुछ तो नहीं।"

"आप कुछ कह रहे थे।"

"नहीं, कुछ नहीं। झपकी आ गयी थी, शायद नींद में कुछ कह गया।"

बाति बदल दिहनी हम। हमरे जबाब से ऊहो संतुष्ट होके फेरु से अपनी मोबाइल में डूबि गइल।''

मन बेचैन रहे। हम ओकरा के आजु खो दिहले रहनी जेकरा से बिना बोलल‌ले बतियवले, लड़ाई-झगड़ा कइले हम रहि ना सकत रहनी। तब हम ओकरा से कहिये ना पवनी कि हम ओही खातिर जीयत रहनी। का जाने कि ईहे हम चूक गइनी। मनेमन बुझत रहनी कि आखिर ई जाई कहाँ ? जब समय आई तब बता देब। बाकिर हम सोचते रहि गइनी आ समय के धारा अपनी साथे सब बहा ले गइल। अब ओकरा से मिलबो कइनी त ना मिलले लेखा। अबो कई बेर सोचनी कि कबो मौका मिली त ढेर कुल बाति बतिआएब, बाकिर हाय रे बिधिना...! फेरु से सोचते रहि गइनी। आपने भीतरे ई पीर लिहले एक दिन ए दुनियो से बिदा हो जाए के बा। ईहे लिखल बा भागि में। एगो लमहर साँस लेत हम फेरु से आपन मूड़ी पीछे सीट पर टिका के आँखि मून लिहनी।

गाँवे पहुँचत-पहुँचत भोर के उजियार हो गइल रहे। पूरब के आसमान पर ललकी टिकुली जइसन अदित नारायण अपने बाल रूप में चमकत रहलन। कुछु बादरो एने ओने से आ के छपले रहले सन।

जगहि-जगहि धान के बेहन भूइं पर बिछल खमल अइसन लागत रहे। एतना सुन्दर वातावरण रहे बाकिर हमरे मन में उदासी घेरले रहे। आजु से पहिले जबो गाँवे गइनी, प्रिया हरदम हमरा मन परे। सोचीं कि का जाने ऊहो गाँवे आइल होखे? जेतना दिने रहीं, ओकर राहि ताकीं बाकिर आजु ऊ प्रतीक्षा खतम हो गइल रहे। प्रिया हमरे साथे गाँवे लवटि आइल रहे। हमेशा खातिर।

अपने भीतर के तुफान से जूझत हम गाँव के एकलौता महादेव मंदिर के सीढ़ी चढ़े लगनी। ऊपर नंदी बाबा के ठीक समनवे मंडप तरे सिव बाबा बिराजमान रहनीं। चार खम्भा पर मंडप टिकल रहे आ चारू ओर से मंदिर खुलल रहे। हम जा के भगवान जी आगे रुमाल के गाँठ खोल के ध दिहनी।

"देखु प्रिया ! ते आ गइले अपने गाँवे। ए मंदिर में हमनीका केतना बेर बेलपत्र चढ़वले रहनी जा, ईयाद बा नू? देख, ऊ पोखरा आ ऊ स्कूल, जहाँ हमनीका पढ़त रहनी जा, आ ऊ लामे लामे ले खेत। देखु न !"

लाख कोसिस के बादो हम रोवाई ना रोक पवनी। अकेले खूब रोवला के बाद अपनी आस्तीन से आँसू पोंछि के रुमाल उठा लिहनी आ हारल थाकल सीढ़ी उतरे लगनी। तबे हमार निगाह घूँघुट कइले आवत दुगो मेहरारुन पर पड़ल। एक हाथे जल के लोटा आ दुसरे हाथे डोलची लिहले ऊ पूजा खातिर आवत रहे लोग। तबे हमरी ऊपर एगो बुन्नी टप्प दे गीरल। हम जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गइनी।

आसमान में बादर उमड़ आइल रहे आ सुरुजदेव के ढाँप लिहले रहे। बेयारि तेज हो गइल रहे। हम तनी अउरी तेज चाल धइनी आ स्कूल के पीछे के खेत में आके रुक गइनी। रूमाल के गाँठ खोल के राखी के भर निगाह देखनी आ धीरे से गिरा दिहनी। कुछु राखी हवा के साथे उड़ गइल आ कुछु ओहिजा ढेर हो गइल।

"प्रिया...! ले, ई तोरे खेत ह। अपने गाँव, माटी के खुशबू आ बरखा से मिल के अब खुश बाड़े न !" जइसे प्रिया सामने बइठल होखे आ हम ओही से बतियावत होखीं।

तबे एकदम से बादर गरजल आ झकझोर के बरसे लागल। देखते देखत राखी पहिले भींजल, आ धीरे-धीरे खेत के माटी में मिल गइल। हमरे आँखी के लोर बरखा के पानी के साथे बहत जात रहे। बुझात रहे जे हमहूँ ओ राखी के साथे माटी में समात जातानी। तबे जइसे केहू हमके बोलावल।

"पियूष...ए पियूष...!"

हम चिहुँक के अपने पाछे देखनी। प्रिया लाल फ्राक पहिनले स्कूल के बिना जाली वाली खिड़की पर गोड़ लटका के बइठल जइसे हमरे के बोलावत रहे।

"ए पियूष, हेने भागि आवाऽ, अउरी केतना भिंजबा?"

कान्ही ना लागब सजनी

✍ बिम्मी कुँवर सिंह

महामारियन में प्लेग महामारी सबसे पुरान मानल जाला, पुरातन समय में कवनो महामारी फइलत रहे त ओकरा के प्लेग नाव ही दिहल जात रहे।

उनइस सौ सोरह में लंदन में प्लेग महामारी फइलल आ पूरा के पूरा आबादी में से दू तिहाई लोग देस छोड़ के भाग गइल आ बाचल लोग प्लेग के चपेट में आ गइल रहे। एगो पुरान कहावत कहल जात रहे जे प्लेग सिन्धू नदी ना हेल पाइ बाकिर उनइसवीं सताब्दी में प्लेग के आक्रमण भारत प भइल, आ एकरा प्रकोप से क गो राज्य प्रभावित भइल ।

उन्इस सौ तीस से एकतीस तक ले भारत के पूरबी राज्य भी प्लेग के भीषण चपेट में आइल आ ओही घरी बक्सर जिला के गाँव के गाँव ऐह बेमारी से दम तूड़े लागल। नरायण पुर गाँव के जीनत राय जी के दूसरकी मेहरारू भी ऐही बेमारी के चपेट में आ गइली, दवाई बीरो बहुत भइल बाकिर बुला देरी से बेमारी पकड़ में आइल आ घरेलू देसी इलाज से प्लेग के कीरा फेफड़ा आ सांस नली के भीतरी ढुक गइल रहे ।

दू गो बेटा रामाकांत आ जगदीश बाबू, एक जना तीन बरिस आ दूसरका जना सवा बरिस के रहले। दूनों दुधमुँहा लइकन के छोड़ के ऐह दुनिया से उ चल गइली।

जीतन राय जी के पहिलकी मेहरारू रेवतिया के रहली जिनकरा से एगो बेटी नैनकुमारी रहली। चार बरिस बीतला प जब बेटा ना भइल त जीतन राय जी के माई उनकर दूसर बिआह तिलक राय के हाता गाँव के बेटी से करवा देली।

दूनो जानी रहली जा सवत त बाजिब बात रहे कि उ दूनो बेकत में इचिको प्रेम ना रहे।

आ जबले छोटकी जिअत रहली बड़की अपना नइहर भी सादी बिआह भा तीज फगुआ में महीना दिन खातिर जात रहली। उनकरा इहों डर रहे कि बेसी नइहर रूक जाइब त कही मलिकार छोटकी के त ना नू मान जान करे लगिहें, तिजोरी के चाभी ओकरा के ना नू सऊप दिहें। काहे से कि भले दूसर बिआह राय जी क ले ले रहले आ दू गो बेटा भी वंश चलावे खातिर छोटकी जन देले रहली , बाकिर सनूक, तिजोरी, बखरी के मलिकाओ बड़की भीरी रहे।

दूसरकी मेहरारू के मूअला के बाद पहिलकी तनि अउरी मनसंहका लेखा हो गइली। छोटकी के दूनो बेटा के तनिको सेवा सुसुक्ता, देखभाल ना करत रहली, इ बात जब जीतन राय जी के पता चलल त उ गाँव के कहारिन चनरमा बो के छोटका बेटा जगदीश राय के लालन पालन खातिर रख लेलन आ बड़का बेटा रमाकांत अब दलान प उनकरा संगे रहे लग लन।
गतेगते जब दूनो बेटा छह-सात बरिस के भइल लोग त राय जी गाँव ही में नेटुआ बोलवा के ओकनी से दूनो बेटा के कुस्ती के ट्रेनिंग दिअवावें लगलन।
जीतन राय जी बहुत ही धार्मिक सुभाव के मरदाना रहुअन, मास-मदिरा के कब्भो हाथ ना लगावत

रहुअन। उनकरा बाबूजी स्वर्गीय रीतुबरन राय के बनावल शिवाला प उ भोरही उठ के आपन दुआर प के ईनार से नहा के जय भोले के जयकारा के साथ जल चढ़ावत रहुअन। इ नियम से भोर आ सांझ के करल उ कब्बो ना छोड़ले चाहे कतनो बेमार होखस भा कवनो बरखा बूनी वाला रीतु होखे। उनकर मोछ एक हाथ के रहे । दूनों कान में मोछ के लपेट के राखस।

जब दूनो बेटा कुस्ती सीखे लागल लोग त जीतन राय जी उ दूनो लोग खातिर बढ़िया पुस्टई भोजन के बेवस्था करे लगले, उ अपने हाथे मास- मछरी बना के दूनो जना के खिआवस। ए गो स्पेशल गाय आ एगो बकरी रखाइल रहे जेकर दूध खाली दूनो बबुआ लोग पिअत रहे।

कबो पूआ त कबो बोजा ,कबो लिट्टी चोखा त कबो अमर पीठा उ अपने हाथे बना के दूनो बबुआ के खिआवस , आ अब दूनो लोग के अपना संगही दलानी में सुतावें लगले ।

मेहनती आ इमानदार खेतिहर राय जी मय फसल उपजावत रहुअन, बर बनिहार से हरमेसा बाबू बचवां कह के ही बतिआवत रहुअन। ऐह से गाँव-गिरान में कोस-कोस तक राय जी के लोग देवता लेखा पूजत रहे। उनकरा दुआरी से केहूं भूखे भा छूछें ना जात रहे।
केकरो बेटी के गवना बिआह खातिर पूंजी ना जुड़े त उ राय जी के दरबार में पेसी जरूर लगावे आ कबो निरास हो के ना जात रहे लोग।

फगुआ के तेवहार में दूनो बेटा खातिर चानीं के पिचकारी किना के आइल । इ बात बड़की मेहरारू के भी पता चलल, डाह के लुत्ती लहकत भठ्ठी के ताप से भी बाऊर होला । उनकरा बेटी के चानी के पिचकारी ना आइल आ सवत के दूनो बेटा चानीं के पिचकारी से फगुआ खेलिहे जा इहें सोच के उनकरा करेजा प सांप लोटे लागल। कुछ बोल त ना पवली बाकिर करेजा के भट्ठी में गते-गते लवना झोंकत रहली।

फगुआ बीत गइल दूनो बबुआ पिचकारी ले आ के बड़की माई के दे देलन आ कहलन लोग कि बाबू जी कहनी ह कि रौरा हई सन्दूक में रख दींही, फेर अगिला साल फगुआ में फिचकारी निकालल जाइ। उ कुछ बोलली ना, आ पिचकारी ले के संदूक में रख देली।

फगुआ से दिन बीतल त रोपनी सोहनी ले ले देले सावन भी आ गइल , बड़को के नइहर से तीज लेके उनकर भाई आ दस बरिस के भतीजा भी गंगा ओह पार से आइल रहे लोग। जब उ दूनो लोग दू तीन दिन रह के अपना गाँवे जाए लागल त बड़की ए गो चानीं के पिचकारी निकाल के चुपके से अपना भतीजा के दे देली। जब फेर फगुआ के तेवहार आइल त चानीं के पिचकारी जोहाए लागल, बाकिर पिचकारी मिलबे ना करे।

मलिकार से कवनो दाई नोकर जा के लाई लगा देलन स कि बड़की जानी अपना भतीजा के दे देले बाड़ी । जब जीतन राय जी उनकरा से पूछलन कि का रौरा अपना भतीजा के पिचकारी दे देले बानी?

अतना त सुनते बड़की के बुझाईल जे अब त हमार मय पोल पट्टी खुल जाइ त उ कह देली जे हम राउर दूनो बेटा के किरिया खात बानी कि हम पिचकारी के बारे में कुछहूं नइखी जानत।

दूनो बेटा के किरिया काहें खइनी हं रौरा?' उ दहाड़ के बोलले

"रौरा जब हमरा बात के पतिआवते नइखी त हम का करी, राउर दूनो दुलरूआ बेटा के किरिया खा लेनी ह" उ इ बात बड़ा मनसरहगई में बोल गइली

"रौरा आपन बेटी के किरिया खा सकत रहनी, हमार किरिया खा लेती ,अपना भाई-भतीजा के किरिया खा लेती ! बाकिर रौरा हमार दूनो बेटा के किरिया खा लेनी जेकरा के हम अपना जान से भी बेसी मानी ना, इ रौरा ठीक ना कइनी, आज हमहूँ ऐही दूनो बेटा के किरिया खात बानी जे आज से राउर मुँह ना देखब आ रौरा के कान्ही ना लागब"

अतना कहके उ दलान के ओरी चल गइले आ वचन के पक्का राय जी दिन, महीना छ महीना बीत गइल बाकिर जनानी किता में गोड़ ना रखले ना मेहरारू के मुँह देखले।

नइहर के मनबढ़ बड़की खीसन अपना भाई के खबर भेज के बोलवली आ बिना बेटी नैनकुमारी के लिहले अकेलही भाई संगे अपना नइहर चल गइली।

जीनत राय जी अब तीनो बाल बच्चा के लालन पालन में जी जान से लग गइलन। भोर आ सांझ के पूजा-पाठ करके तीनों बच्चा के रामायन महाभारत आ गीता के कथा कहनी सुनावस । जब दूनो बेटा पढ़े चल जास लोग त बेटी नैनकुमारी के किसिम-किसिम के पकवान बनावे के भी लूर-रहन खुदे सिखावत रहुअन।

ऐह बीच जाने कतना सावन भादो, तीज खिचड़ी, दीवाली छठ के तेवहार बीत गइल बाकिर ना हेने से बड़की के बोलावल गइल ना उ ओने से आवे के कोसिस कइली।

नैनकुमारी अब चउदह बरिस के हो गइल रहली, गंगा ओह पार दौलतपुर गाँव के बहुत रईस राय जी के परिवार में उनकर बिआह तय हो गइल । बेटी माई के असरा देखत-देखत ससुराल चल गइलीं, ओने बड़को के ऐह बात के कानो कान खबर ना लागल।

नैनकुमारी के महतारी आ ममहर में बिआह के बोलहटा खातिर कवनो खबर ना भेजल गइल। जब ऐह बात के खबर बड़की के भौजाई लोग के लागल त उ लोग ननद के अउरी ताना मारे लागल लोग।

धुकनी लेखा मनें मन उ कुफुत में रहस बाकिर सान में अतना रहली कि मय अनधन अछइत आ नइहर में लउड़ी बनल रहली।

एगो बात जे हर छौड़ी के बूझे के चाही कि जेकर ससुरार आ संवाग से रिस्ता नीक रहेला नइहर में ओकरे पूछ, मान जान भी होला।

देखत-देखत दस बरिस बीत गइल । एकदिन भतीज पतोह के ताना से करेजा में आग लाग गइल जब उ अंगना में गावत रहे...

भाई प करिहें राज ऐ दादा
छोड़ भतार के अनधन नोकरिआ,
बहुत भइल खटानी ऐ दादा
हमनी से ना होखी अब इनकर चकरिआ,

रोज रोज के ताना से बड़की अब उबिआ गइल रहली आ खीसन एक दिन भोरे-भोरे उठ के रेल ध के अपना ममहर चल गइली ।

सनक के इलाज जब समय प ना कइल जाला त उ लाइलाज बेमारी बन जाला, आ दिसाहीन हो के रस्ता भी भटकत रहेला।

हेने नरायणपुर में जीतन राय जी के बड़का बेटा के बिआह भी इटवां के केसा देवी से हो गइल। ऐहू बिआह में बड़को के ना बोलावल गइल । गाँव गिरान के बात कहीं ना कहीं से पता लागिए जात रहे, त बड़को के भी पता लाग गइल। मामी आ उनकर पतोह लोग भी बात बेबात गाभी मारिए देत रहली जा।

अपना भूई भांग लोटे पाही जोते जाइले... कुफुत के दंश उ भीतरे-भीतर सहत रहली बाकिर झुके के नाव ना लेस।

अब ऐहिजो मामा के पतोह लोग महीना, दू महीना त नीके-नीक रहे बाकिर जब देखल लोग कि इ ऐहिजा से इ खसकिहें ना त उ लोग भी दुख देबे लागल, धीरे धीरे चउका बरतन भी करावे लगली जा।

ऐजुगो रहत एक बरिस बीत गइल आ जब एकदिन मामा के पतोहू कवनो बात प इनकरा देहीं प जरत चइलीं फेंकलस त फेर खीसिन ओइजा से उठली अपना सखी के घरे चल गइली जे हजाम बिरादरी के रहलीं।

ओहिजा राय जी के मेहरारू होखला के नाते इनकर मान सम्मान होत रहे। ओही हजमा के घर के एगो बेटी नरायणपुर गाँव में बिआहल रहे, उ एक दिन राय जी के पतोह केसा से मय बात उनकर सवतेली सास के बारे में बता दिहलस। केसा देवी घर ही में पढ़ल रहली आ बहुत समझदार कनिआ रहली उ अपना सास के चुपे चिठ्ठी लिखली,

अम्मा जी के गोड़ लागत बानी, अम्मा जी के मालूम होखे जे रौरा घर में चीज समान अछइत आ रौरा हे घर से हो घर मारल-मारल फिरत बानी, आ अब रौरा हजाम के घर में बइठ के राय जी लोगन के नाके नू कटवा देहम। रौरा के ले आवे ना त राउर संवाग जइहे, ना राउर बेटा लोग जइहे आ हमार बेटा अभी एक साल के दूधमुँहे बाड़न त हमार बात मानी, रौरा केहूं के संगे चल आइ, काहे से कि अपने खूंटा प कुकुरो बली...हम ऐजुगा राउर सुआगत सेवा सतकार करब। रौरा अपना घर में इज्जत हाल से रहम। हमरा उमेद बा कि रौरा हमार बात ना टारब।

राउर पतोह
केसा देवी

चिठ्ठी जब बड़को पढ़ली त ढरक-ढरक के लोर बहे लागल आ फफक-फफक के उ रोअली। उनकर सखी विदाई के मय तैयारी कर देली आ बड़को अगिला भोरे ओजुगा से ससुराल खातिर चल देली। जब ऐक्का गाड़ी ससुरार के दुआर प रूकल त उ उतरली ना, आ हजमा के बेटा जवन उनकरा संगे आइल रहें ओकरा के भीतर बिदा कइली कि जा के पूछ ल आ बता द कि हम आइल बानी ना त मलिकार कही फेर भगावे लगिहे त का करब-।

हजाम के बेटा भीतर गइल त केसा देवी अपना बेटा मुरली बाबू के अबटत रहली , उ मय बात उनकरा के बतवलस , त उ हाली से घूंघ कइले बहरी आ के एक्का प से सास के उतार के घर के भीतर ले गइली। ओह घरी राय जी कोर्ट कचहरी के सिलसिला में बगसर आइल रहले। जब सांझ खा राय जी आ दूनो बेटा खाना खाएं बइठल लोग

त केसा देवी बड़की सास के घरे आवें वाली बात बता देली।

“बारह बरिस बाद उनकर हिम्मत कइसे भइल ह ऐंह दरवाजा में लात धरे के, हो ना हो केंहू के सह से ही उ आइल बाड़ी, हमरा के तुरंत जानकारी चाहीं कि के सह दे के बोलावल ह ” थरिया भूईया फेकत राय जी दहाड़ के बोलले।

“बाबूजी आमा जी अपना नइहर में ना रहली, आपन एगो हजाम सखी के घर में रहत रहलीं, ऐहि से हमनिओ के त नाव-गाँव खराब होत रहल ह” केवाड़ी के ओहारे में से केसा देवी बोलली

“जब हमार उनकरा से कवनो सम्बंधे-नाता नइखे त का हजाम भा का कहार, कतहुँ रहस” , फेर डपट के जीतन बाबू बोलले।

मय घर में सन्नाटा परसरल रहें... खाली ससुर आ पतोह के बकझक चलत रहें उ आपन जबान के दलील देस, पतोहूं गाँव घर के इज्जत हाल के बात समुझांवत रहली।

ऐतने में जब रामाकांत बाबू अपना मेहरारू के अपना बाबूजी से मुँह चलावत देखले त अंगना में रखल टांगीं उनकरा देहीं प चला के मार दीहले आ देखते देखत केसा देवी के लिलार से धइले मुड़ी एक बित्ता ले फांट गइल। उ बाप बाप चिचिआत धरती प गिर गइली। ओह घरी उ बात बन हो गइल आ सभ केहूं केसा पतोह के सम्भारे में लाग गइल।

हाली हाली मवेशी अस्पताल से डाकडर के बोलावल गइल, उ मरहम पट्टी कइके दवाई बीरो दे देलन।

बड़को अब नीके-नीक रहे लगली, बाकिर जीतन राय जी फेर जनानी किता में आवल उ छोड़ दिहले आ अब दलानी में ही खाना भी खाए लगलन।

बड़को के अइला के डेढ़ दू बरिस बाद जगदीश बाबू के बिआह भइल। बिआह में नैनकुमारी बेटी आ दमाद के भी बोलावल गइल।

बिआह के बाद नैनकुमारी जब अपना दूल्हा के संगे जाए लगली त बड़को फेर से बवाल मचावे लगली कि खेत में हमरा बेटी के भी हिस्सा दिआई।

जबकि बेटी नैन कुमारी महतारी के समुझावत रहली कि, “माई हम अपना ससुरा में धन-जन रहन-सहन से बहुत खुस बानी, रउरा हमरा खातिर बाबूजी से झगरा मत करी। अब बढ़िया से अपना घर में रहीं।”

बाकिर सौतिया डाह में बउराई मेहरारू मान-मरजादा भुला जाली लो। सवतेला बेटन से लड़त-झगड़त उ दलान में जीतन राय जी के सोझा भी जा के बक-झक करे लगली।

अतना सुनते राय जी के ब्रह्मा में आगि लाग गइल आ उ ओही समय आदेश दिहले जे हमार घर ऐही समय रौरा छोड़ के निकल जाई आ फेर मुँह मत देखाइब।

आन-बान-सान आ सनकपन से हबडब बड़को फेर अपना नइहर चल गइली। ऐह बेर गइली त छवे महीना में बिछौना ध ले ली । भतीजा कुल फेर केसा देवी के भीरी खबर भेजलन लोग कि फुआ बहुत बेमार बिआ, ना होखे त रौरा नरायण पुर बोलवा लिहीं।

एक बेर फेर से केसा देवी के करेजा में सास खातिर ममता उमड़ गइल, उ हिम्मत कइके सास के बोलवा ले ली, खटिया प लाद-फांद के बड़की फेर नरायण पुर आ गइली, बाकिर बोली बन हो गइल रहे आ बस आँख से लोर ढरकत रहे। दस दिन बाद उहो गिरल भी बन हो गइल, खाली एकटक केहूओं के तिकवत रहस।

केसा देवी अपना सास के बहुते सेवा सुसुक्ता कइली, बाकिर करेजा में हाड़ होखित त कुछु अलम भी होखित, खाली मास के लोथड़ा कतना ताप सहस, कइ एक साल से आन-बान-सान, बेइज्जती, हिकारत, तिजारत सहत-सहत अब बड़को के करेजा जर्जर हो गइल रहे। कतनो घीव दूध दही, दवा बीरो से सास के बचावे के कोसिस केसा देवी कइली बाकिर एक रात बड़की के प्रान पखेरू उड़ गइल।

अन्तिम क्रिया के तइयारी चलत रहे बाकिर जीतन राय जी दलानी में से टस से मस ना भइले। कबो चचेरा, त कबो ममेरा भाई बोलावें खातिर आईल लोग बाकिर उ ऐक्के बात कहस कि उनकरा के गढ़ही में बीग द सन, बाकिर हम कान्हि ना लागब! हम अपना बेटवन के किरिआ खइले बानी।

फेर रामाकांत बाबू अइले आ अपना बाबू जी से निहोरा करे लगलन

“चली माई के अन्तिला किरिया करी, अभी त मय बाचले बा, पंडी जी कहलन ह जे मुखाग्नि रौरा देब”

“एक बेर कह देनी त सुनात नइखे, जा तू मुखाग्नि दे दीहूँ, तूहो त बड़ बेटा हव” खिसिया के जीतन बाबू बोलले

हित नात सब केहू अपना अपना तरीका से समुझावे के कोसिस कइल बाकिर उ टस से मस ना भइले। थाक हार के रामाकांत बो घूंघ कइले केवाड़ी के अलोत से ठाढ़ होके निहोरा करे लगली

"बाबू जी रौरा गोड़ प गिरत बानी मान जाइ, सवांग के रहते सौतेला पूत मुखाग्नि दीही त आत्मा भटकत रह जाइ, छोड़ दिही आपन जिद्द, मान जाइ, माई के कान्ही दीहीं आ आग देबे खातिर शमशान घाट चली"

"ठेर तमासा करे के मन करत बा, उठाई का लबदा! जब एक बेर हम कह देनी कि इनकरा के हम कन्धा ना देब त ना देब! रायकवार के वचन से बढ़ के कुछु ना होला ओकरा खातिर अपना सग बेटा भाई के भी छोड़े के पड़ी त कवनो बात नइखे आ इ त हेठार पेठार के मनबढ़ मेहरारू रहली, जा-जाके रामाकांत ना त जगदीश से कह द कि आग दे देस लोग, अब हमरा भीरी केहू निहोरा करे ना आई"

दाँत पीसत जीतन बाबू बोलले।

अतना निहोरा पहोरा प भी जब उ ना मनले त रामाकांत बाबू तइयार हो गइले जे मयभा रहे बाकिर रहे त महतारी नू ! हम इनकर अन्तिम किरिया करब।

लास जब मसान घाट चल गइल त जीतन राय के लइकाइ के संगतियाँ रामवचन राय समुझवले जे

"बउराह हंव तू, अपना मूअला प जूंठ आगि लेब-, चल- कान्ही ना लगब त मत लाग, आगि त दे द..."।

रामवचन के समुझवला प उ गते-गते उठ के मसान घाट चहुंप गइले ।

आ कायदा ना बिगड़े ऐह से बायदा तूर दिहले...।

पता– Mr Sanjay Kumar Singh (Commandanta)
150 BN Mandir wala gate Alamganj
District & Dhubri- -783339 (Assam)
Mob: 8160492100, Email: sanjaybimmi@gmail-com

कुररे काग भदेस

दिनेश पाण्डेय

अब के सगुन कहीं मोरी सखिया
कुररे काग भदेस !

ना अँगनइया गाछि चनन की ,सास-ननद परबीना
कबके मरल आँखि के पानी, लोक-लाज कतहीं ना
ईरिखे गोतिन जरि न बुताली , उलटा सब परिवेस !

बनटेसू के छाँहि कंटीली असबस जिया बुझाला
भुतहा पीपर छाँहि चुरावे, बरगद उमटा जाला
बिरिछ-बिरिछ पर बदुरी झूले, उलटपंथ दरवेस!

बिसर रहल गनगौर महादेश मनता कवन पुजावे
सबहीं ढेल-ढुकुर महँकारे परले पीठ खुजावे
नदियन के अमरित पानी में, माहुर केरि अनेस!

खर-खरिहानी दंड मुसरिया परल बढ़ावन ताने
बिसुनचुटकिया केहु न बूझे पवनी-जन के जाने
भूखे पेटे आल्हा गावे , रगरे मोंछ सरेस !

गब्बर - गुसइयाँ बात न समझल होत परात पराइल
जीयन मरन रहन रहवासू अबले खबर न आइल
कइली जोग जोगिनी कवनो, किया बनवली भेस !

❑ सरकारी आवास 100/400 राजवंशीनगर,
रोड़ नं०2 पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

चेहरा

आलोक पाण्डेय 'अनवद्य

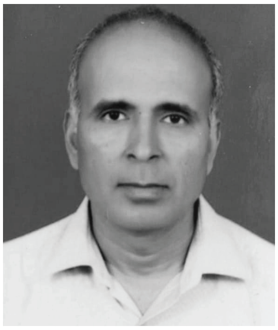

"हलो!"

"हाँ, के बोलत ह, भइया?"

"अरे! डार्लिंग, केतना बेर समझवनी कि ई 'भइया-वइया' कहल छोड़ दऽ। खाली 'हाँ, के बोलत बा?' कहला से काम चल जाई, ना त 'जी, सर' कहे के सीख लऽ। चलऽ, छोड़ऽ एह बात के...'

फोन पर बोलत आदमी के आवाज सुनते उनका याद पड़ल - ई केरापा जी रहस। उनकरा से पहिल बार परिचय चौहान जी के माध्यम से भइल रहे। ओह समय जब केरापा जी के परिवार घर पर ना रहत रहे आ उनके मन बहलावे के इच्छा जागत रहे त एक-दू घंटा खातिर ओके बोला लेत रहलन। हर बेर उनकर एके शिकायत रहत रहे- तनिको सिंगार-पटार कइल करऽ, लिपिस्टिक लगा लिहल करऽ। कबो-कभार जीन्स-टॉप पहिन के आइल करऽ। ई सादा कपड़ा में अइसन सहमल-सिकुड़ल आवेलू कि हरियाइल मन बंजर हो जाला। एगो त भगवानो जी तोहार चेहरा अइसन बनवले बाड़े कि एकदम बहिनजी टाइप के लागेलू।'

आज बहुत दिन बाद केरापा जी के फोन आइल रहे। उ आपन बात जारी रखलन - 'ना-ना, आज हमरा लगे आवे के जरूरत नइखे। हमार एगो संगी बा, हमरे साथे दफ्तर में काम करेला, आज तनिक ओकर मन रूमानी भइल बा। ऊहे तोहरा के अपना कमरा पर ले जाई। तहार फोन नंबर दे देले बानी। ऊ तोसे कॉन्टैक्ट कर ली। फेर ऊ अपना ढंग से समझावे लगलन- 'आ सुनऽ, मानबू त नाहीं, बाकिर तनिको ढंग के कपड़ा पहिन लिहऽ। सेंट-पाउडर लगा लिहऽ। अइसन मत लागऽ कि जइसे काल्हुए विधवा भइल...'

ना, ना विधवा त ऊ ना रहली, बाकिर दुर्भाग्य के मारल जरूर कहल जा सकत बा। परित्यक्ता जरूर रहली पर बिना कवनो कानूनी प्रक्रिया के। उनकर बियाह एगो निजी कंपनी में स्टोरकीपर के नौकरी करे वाला आदमी से भइल रहे। शुरुआती दिनन में दांपत्य जीवन संतोषजनक रहे। कहा सुनी त हर घर-परिवार में होखेला, एह में नया का रहे। मगर कोरोना महामारी उनका जीवन के दिशा बदल देलस। उनकर पति के नौकरी छूट गइल। ओकरा बाद ऊ इहाँ-उहाँ रोजी-रोटी के तलाश में भटकत रहलन। घर-गिरहस्ती के गाड़ी अइसन हालत में पहुँच गइल जइसे एक बैल से बैलगाड़ी खींचल जात होखे- चलत त रहे, बाकिर लड़खड़ात। ऊपर से कोढ़ पर खाज ई कि ऊ एगो विधवा मेहरारू के । मोहजाल में फँस गइलन जेकरा दिल्ली में आपन नाम से मकान रहे। उनकरा के लागत रहे

कि अगर ऊ संबंध सफल हो गइल त दिल्ली में स्थायी ठिकाना मिल जाई आ किराया के झंझट खत्म हो जाई। ऊ अपना आदमी के बहुत समझवली, रोकली, मनवली, बाकिर आदमी त ठहरल आदमी आखिर कब सुने वाला रहे। मरद उनकरा के छोड़ ओकरे के इहाँ समय ज्यादा बितावे लगलन। हँ, पाँच-सात दिन पर मन फेरावे खातिर आके, कुछ खर्चा-पानी दे जात रहलन। बीच-बीच में ई सलाह भी देत रहलन- 'तू बिटिया के लेके गाँव चल जा। हम खर्चा भेजत रहब। जब हालत सुधरी त फेर दिल्ली बुला लेब। ए शहर में एतना कम कमाई पर गुजारा अब कठिन हो गइल बा।'

उनका मालूम रहे कि उनका आदमी के नीयत में खोट बा। कुल चालबाजी ऊ समझत रहलिन। बाकिर एगो बिटिया के लेके दुनिया में कहाँ शरण मिलत? कलजुग में त धरती मइयो लाख पुकारल पर कहाँ सुने वाला रहलिन ...आज तक उनसे सीता मइया के दर्द ना सम्हलल। बाबूजी के निधन के बाद उनकर छोट भाई अपना माई आ परिवार के साथ सिकंदराबाद में रहत रहे। ओकरा लगे जा के अपना दुखड़ा रोवलो से कुछ हासिल होखे वाला ना रहे। ऊ ना चाहत रहली कि बुढ़ौती में विधवा माई पर अपना दुख के बोझ डालस। ससुराल के नाम पर प्रतापगढ़ जिला में उनका हिस्सा में बस एगो कमरा आ आँगन के ओतने टुकड़ा जमीन रहे, जहाँ मुश्किल से दू गो खटिया बिछ सके। एतना से जीवन कहाँ चले वाला रहे। जीवन-यापन खातिर ऊ आसपास के घरन में चौका-बर्तन आ खाना बनावे के काम करे लगली। रोज बिहान सात बजे बिटिया के स्कूल छोड़ फिर आठ बजे से दुपहरिया तक दूसर के घर में पसीना बहावत रहली। जीए खातिर मनुष्य के लगे एगो सपना होखे के चाहीं। उनकर बस इहे एगो सपना रहे- अपना बिटिया के पढ़ा-लिखा के समाज में सम्मानजनक स्थान दिलावल। ऊ सपना के काजर बना के अपना आँख में लगा लिहली। बेटी त मेहनती रहे पर परीक्षा में अंक औसते दर्जो के आवत रहे। थक हार के टयूशन के हजार रुपिया महीना के बोझ आपन माथे लाद लेहलिन।

बढ़त महँगाई में जिनिगी के नइया डगमगाए लागल रहे। ऊ जे-जे घर में काम करत रहली, ओहिजा मजूरी बढ़ावे खातिर हर छटवें छमासे निवेदन करत रहली। बाकिर अधिकांश लोग मोहल्ला में चलत मजूरी के हवाला देके उनकर बात टार देत रहे। कइएक लोग त खीझियो जात रहे- "अगर ई मजूरी में गुजारा नइखे होत त कहीं अउरी काम खोज लऽ। काम करे वाली मेहरारूअन के का कमी बा!" दुनिया कतना विचित्र बा। लागेला जइसे सभे नियम-कायदा गरीबन खातिरे बनल होखे। लोग अपना लइका-बच्चा पर, घूमे-फिरे पर आ सुख-विलास पर हजारों रुपइया खरच कर देला, बाकिर कवनो मजदूर के सौ-दू सौ रुपइया मजूरी बढ़ावे के बात सुनते उपदेश देवे लागेला। मॉल में दुकानदार से एक रुपइया घटवावे के हिम्मत ना होखे, बाकिर रिक्शा चलावे वाला आ तरकारी बेचे वाला से देर तक मोल-भाव कइल जाला। जब घर-गिरहस्ती चलावल कठिन होखे लागल त एगो परिचित मेहरारू उनकर ध्यान उनकर 'देह' क ओर खींचलस। पहिले-पहिले ई बात सुनके उनकर रोम-रोम काँप उठल। "ना-ना बहिन, अइसन बात मत कहऽ। आगे से कबो मत कहिहऽ।।" बाकिर समय धीरे-धीरे उनकर प्रतिरोध के कमजोर पड़त गइल।

कुछ महीना पहिले ऊ गंभीर रूप से बीमार पड़ गइल रहली। बिटिया के साथे लेके पाँच दिन अस्पताल में भर्ती रहली। अस्पताल में रोगी खातिर जवन भोजन मिलत रहे, माई-बेटी ओही से दिन काट लेहली । अस्पताल से छुट्टी मिलला के बादो शरीर जल्दी सँभर ना सकल। लगभग दस दिन तक कमजोरी एतना रहल कि ऊ कामो पर जा ना सकली। एह बीच कुछ मालिक लोग सहायता त कइलस, बाकिर ओह सहायता में आत्मीयता कम, हिसाब-किताब अधिक रहे। मदद के हर रुपया के बाद में काम से चुकावल जाए के रहे। कवनो मालिक मुख्तार ई ना कहलन कि एह पैसा के लौटावे के जरूरत नइखे। तूहों हमार बेटी-बहिन जइसन बाड़ू।

ढाढस के दू गो शब्द भी मानो बहुत महँग हो गइल रहे। आ ऊ पूरन सिंह साहेब, जे कवनो मंत्रालय में उच्च पद पर कार्यरत रहलन। पहिले जब-तब अपना संघर्ष के कथा सुनावत रहलन- कइसे अभाव के दलदल से निकलके ऊ आज ई मुकाम तक पहुँचलन। कइसे समाज उनकर जाति-बिरादरी के नीच दृष्टि से देखत रहे। कथा सुनावत पूरन सिंह का बड़ जात के प्रति रोष रह रह के झलक उठे। ऊ त आपन जाति छुपा के काम करत रहलिन। अच्छा भइल कि ऊ कबो जान ना पवलन कि ई औरत खुद ब्राह्मण परिवार से आवेली। बाकिर जब उनकर कठिन समय

आइल, त ओह सज्जन के स्वर बदल गइल- 'दू-चार दिन तोहार रास्ता देखल गइल। कवनो खबर ना मिलल त दूसर मेड रखा गइल। अभी जे कामवाली रखले बानी, ओकरा के अचानक कइसे हटा दीं?' ओही दिन उनका बुझा गइल कि संघर्ष के कहानी सुनावे वाला हर आदमी दूसर के संघर्ष के वेदना समझे, ई जरूरी नइखे। गरीब आदमी जब धनी बन जालन त धनी के संग पकड़ लेवेलन। आज पूरन सिंह आ उनकर भाई-बहिन सब सुखी-संपन्न जीवन जीअत रहलें। हर समय के नया शोषक आ नया शोषित होखेलन। इहे हर जुग क चरित्र ह।

धीरे-धीरे उनका भीतर एगो भयंकर द्वन्द्व जन्म लेवे लागल - चरित्र, अस्मिता, सम्मान, देह क पवित्रता, जइसन भारी भरकम शब्द मन में टकरात रहलें। फेर ऊ सोचत रहली- शरीर आखिर ह का? ई कवन अमर धरोहर बा? हम कवन महात्मा गाँधी हईं कि मरला के बाद लोग समाधि पर फूल चढ़ावे आई। चार आदमी लाश उठा के श्मशान ले जाई, अग्नि देके लौट आई। शायद पूरा चिता जरे के प्रतीक्षा करे के धीरजो ना राखी। फेर केहू ना जानी कि कवनो गाँव के एगो छोट दुआर पर कभी एगो नन्हकी लइकी पियर-पियर नीमकौड़ी चुन-चुन के डालिया में बटोरत रहली आ आम बेचेला के खेल खेलत रहली।

'आम ले लऽ हो! पाकल-पाकल आम!' ऊ जोर-जोर से आवाज लगावत रहली।
उनकर बाबूजी भी खेल में शामिल हो जात रहलन- 'आम कवना भाव देत हऊ, बूढ़ी माई?'
'दू रुपइया किलो, रे नतिया!'
'त दू किलो दे दऽ।'

खेल समाप्त होखला पर ऊ बाबूजी से लिपट के कहे- 'बाबूजी हो! हम बड़ होके आम बेचब। पियर-पियर आम।'

बाबूजी हँस पड़त रहलन- 'ना ए हमर बचिया! तोहरा के हम खूब पढ़ाइब-लिखाइब। अफसर बनाइब।'

ई चिनिगी जइसे अचानक वर्तमान के अँधियारा चीर के सामने आ खड़ा भइल। बाबूजी के चेहरा आँख के सामने तैर गइल। आँख भर आइल। फेर आपन बिटिया के चेहरा उभरल। प्रश्न उभरल, अगर काल्ह ऊ मर जाई, त का केहू ओह फूल-जइसन लइकी के ओहने सहेज पाई जइसे ऊ खुद सहेजत बाड़ी? का भाई-भउजाई ओकरा के ममता दे पइहन? ओह घड़ी उनका सोच में आइल कि ऊ अपना देह के अपना सपना से बड़ा ना होखे दिहन। उनका के याद पड़ल कि एगो कथा में पढ़ले रहलीकृभूख से व्याकुल एगो शेरनी अपना बच्चन के खा जाए पर उतारू हो गइल रहली। ई देख, ओही समय उधर से गुजरत बोधिसत्त्व आपन शरीर पहाड़ी पर से शेरनी के आगे गिरा देहलन, ताकि शावक बच जास। ओह दिन उनका लागल कि ऊहो अपना भितरी संघर्ष के ऊँच पहाड़ पर खड़ी बाड़ी। बहुत देर तक मन के भीतर संघर्ष चलत रहल। आखिरकार अपना सपना के जीवित राखे खातिर, उहो आपन चरित्र के गिरा देहली। युद्ध ना होई त बुद्ध मरा जाई ना?

फोन पर ऊ केरापा जी के तोख देहली- "जी केरापा जी, कोशिश करब कि समय के तौर-तरीका सीख लीं। बाकिर शायद रउआ ना बूझ पाइब कि आईना के सामने खड़ा होखे के साहस जुटावल कतना कठिन लागेला।"

केरापा जी कहलन, "साहस के का बात बा? कवन तोहरा के अखाड़ा में गदा भाँजे के ह ? आगे तोहार मर्जी। मदद त तूँहीं मँगले रहू। एहसे इह आदमी के तोहार नंबर दे देले बानी। अब आगे तूँ जानऽ आ तोहार काम।"

ओह दिन के नौ बजे ऊ उत्तम नगर मेट्रो स्टेशन लगे पहुँच के उनकर इंतजार करे लागल। दुपट्टा के नीचे लटकावे के बजाय ऊ थोड़ा ऊपर गरदन ले चढ़ा लेले रहली, जेकरा से ऊ अपना के असहज महसूस करत रहलिन। ऊ अदिमी एही बीच राजीव चौक मेट्रो पहुँचल रहलन। एके जगह खड़ा रहला से ओकरा बेचौनी होखे लागल। ऊ सोचल कि इधर-उधर टहल के समय काटल जाए। रास्ता में एगो फल बेचेवाला के नजर ओकर उभारन पर पड़ल। ऊ झट से दुपट्टा नीचे खिसका, सिर झुकवले तेज कदम बढ़वले आगे निकल गइलीन। चलत-चलत ओकरा आजुकाल के लइकियन के ख्याल आ गइल। का-का अजीबोगरीब कपड़ा पहिर के कतना सहजता से घूमेली सन। अइसन कपड़ा कि पूरा पेट आ नाभि साफ देखाई दे। शॉर्ट्स पहिन के खुलल जांघ देखावत लड़कियन कतना बेफिकिर भाव से चलत रहेली। वाह रे दुनिया! केहू के कपड़ा फाटल होखे त ऊ गरीब कहल जाला, बाकिर केहू फाटल जींस पहिरे त ऊ फैशन हो जाला। फेर ऊ अपना मन के बुझवले लागल- देखे वाला के का बा? ऊ त देखिए करी।

दूसर के बहिन-बेटी के ताकी, बाकिर चाही कि अपना घर के मेहरारू लोग पर केहू नजर मत डाले। ई आधुनिकता त आखिर केरपा जी जइसन लोगे देखे चाहेला। आ ऊ अनिल जी कौन शब्द कहले रहले? ओह शब्द के याद करत-करत अचानक ध्यान आइल कि ऊ बहुत दूर निकल अइले बाड़ी। ऊ मुड़ के ओही राह से लवटे लागल। 'हॉट!' हँ, अब याद पड़ल। अनिल जी कहले रहले कि मेहरारू लोग के हहट लागे के चाहीं। लोग देखी त देखे। ई सोच के ऊ फेर दुपट्टा नीचे सरका लिहलस। फल बेचइया के सामने से ऊ सिर झुकवले गुजर गइल। ऊ देखलस कि ना, एह पर ध्यान देबे के जरूरत ना समझलस।

एही बीच मोबाइल के घंटी बाज उठल। आवे वाला गेट नंबर दू पर खड़ा रहल। शर्ट के बतावल रंग से ऊ ओकरा के पहचान गइल। ऊ आदमी खुदो कुछ डेराइल-डेराइल लागत रहे। शायद सहज होखे खातिर ऊ हाथ बढ़वले- हाथ मिलावे खातिर। ओकरो हाथ आगे बढ़ गइल। ई पहिल बेर रहल जब कवनो आदमी ओकरा से हाथ मिलवले रहे। आगंतुक के हाथ एकदम ठंडा लागल। ओह ठंडक से ओकरा के केहू के याद आइल, बाकिर ऊ सोचलस- 'ना, ई त खाली ग्राहक ह।'

'अरे! रउआ त एकदम बच्ची जइसन बानी। सो क्यूट यू आर।'

'हम बच्ची ना हईं। तीस बरिस पूरा कर चुकल बानी।' ऊ कहलस, फेर पुछलस, 'रउआ कहाँ रहेंली?'

'हरिनगर की तरफ।'

'उधर सुरक्षित रही न? बुरा मत मानब। कुछ हो गइल त हमार बेटी के हमरा सिवा केहू नइखे। भगवानो ना।'

'अरे, डेराईं मत। बिलकुल सुरक्षित बा। हमार आपन घर बा।' फेर ओकरा ओर देखत कहलन, 'रउआ डेराइल लागत बानी। आईं, इहाँ खड़ा होके बात कइल ठीक ना रही। पाँच-दस मिनट घूम लीं, हमरा साथे सहज हो जाइब। कोई आदमी के जाने के हवे त ओकरा साथ कुछ दूर यात्रा करे के चाही।

'ना, अइसन कवनो बात नइखे।' ऊ कहलस आ ओकरा संगे बढ़ गइल। चलते-चलते फेर कहलस, 'आवे खातिर के ऑटो भाड़ा देबऽ न? दू बजे ले बेटी के स्कूल पहुँचे के होखेला।'

ऊ मुस्कुरा दिहलन। रास्ता भर ओकरा बारे में कुछ बात पूछत रहलन, ताकि ऊ सहज हो सके। थोड़ी देर बाद एगो फल वाला लगे रुक के एक किलो सेव खरीदलन। फेर दूगो पाँच-पाँच सौ के नोट निकाललन। शायद कम बुझाइल त दू गो अउरी पाँच सौ के नोट निकाल के ओकरा हाथ में पकड़ा दिहलन।

'ई लीं।'

'ई का? एतना जल्दी पहिले ही? बाकिर ई त बहुत जादे बा। हम त खाली पाँच सौ चाही।'

'सेव रउआ बिटिया खातिर बा।'

'बाकिर पहिले संगे त चलीं।'

ऊ धीरे से कहलन, 'देखीं, बुरा मत मानब। हम रउआ संगे कुछो ना कर पाइब। रउआ साथे कबो अइसन भइल बा कि ना, हम ना जानी। बाकिर जबो हम कवनो चेहरा देखिले, त मन में अजीब भाव उठेला। कवनो चेहरा देख के जी चाहेला कि ओकरा पर गुस्सा निकाल दीं। आ कवनो चेहरा देख के लागेला कि ढेर सगरी दुआ दे दीं।'

ओकर ई बेमेल बात सुन के ऊ मुस्कियाइ के पुछलस 'त फेर हमार चेहरा कइसन बा? पिटाई करे लायक न?'

'ना। कुछ चेहरा अइसनो होला, जवना में आपन कवनो प्रिय जन के छवि देखाई दे जाला।' ऊ कहलस

ई सुनते ओकर हाथ काँप उठल। ऊ सेव आ रुपइया वापस बढ़ा दिहलस। मानो कहे चाहत होखे कि ओकरा के भीख ना चाहीं। बाकिर ऊ आदमी हाथ ना बढ़वलस, खाली एतने कहलस- 'ईश्वर करे रउआ जिनिगी में ऊ दिन आवे, जब रउओ कवनो आदमी के एही तरह रुपइया दे सकीं। याद रखब। जब अइसन मौका मिले, त हाथ तंग मत करब।'

एतना कह के ऊ फुटपाथ से नीचे उतर सड़क के भीड़ में जा मिलल। धीरे-धीरे ऊ भीड़ में हेराए लागल। पहिले सिर देखात रहे, फेर ऊहो ना। ऊ सैलाब से उछरल एगो बूंद जइसन लागल। जब बूंद सैलाब से अलग होके उछल जाले, त सूरज के किरिन ओकरा में सात रंग बिखेर देले। क्षण भर खातिर प्रकृति से बूँद के ऊ सब मिल जाला जे सैलाब के ना मिल पावेला। फेर ऊ बूँद लवट के ओही सैलाब में समा जाले।

अब ऊ कहीं नजर ना आवत रहलन, भीड़ के साथ कहीं दूर हेराइ गइलन।

ऊ अपना कमरा में लवट आइल- बोझिल, थाकल - हारल, लाचार आ बेबस। आईना के सामने खड़ा होके पहिल बेर ऊ अपना चेहरा से नजर ना चुरवलस। ध्यान से देखलस।

ओकरा अपना बाबूजी के छवि देखाई पड़ल।

लोग त ई कहते रहे- 'एकदम अपना बाप पर गइल बाड़ी। ऊहे नाक, ऊहे आँख। केहू-केहू त इहो में जोड़ देत रहे- 'देखिहऽ, बाप जइसन आपन नाक पर माछी ना बइठे देई।' आज बहुते दिन बाद ऊ अपना बाबूजी से मिलत रहुवे।

ऊ देखलस- बाबूजी ओकरा माई के डाँटत बाड़ें- 'अरे चंडालिन! पाप लागी, पाप! ई गाय जइसन बच्ची पर हाथ उठवले रहू? फेरो देखऽ, कतना बड़ मन बा एकर। कुछो ना बतवलस। हमरा त पता ही ना चलित अगर विवेकी बो चाची ना बतवली रहितीं।'

फेर ऊ देखलस कि बाबूजी ओकरा के गोद में उठा के पीठ सुहुरावत दुकान तरफ ले जात बाड़ें- 'तू त दुनिया के सबसे प्यारी बिटिया बाडू। तोहरा से नीक केहू नइखे। एह बेर कलकत्ता से आइब त तोहरा के कलकत्ता ले चलब...'

ओकर आँख लोर भर-भर के छलक उठल। सभ कुछ धुँधला हो गइल। आँसू के ओसार में बाबूजी के छवि धीरे-धीरे ओझाइल जाए लागल। केरपा जी होखस चाहे दोसर लोग, ऊ कइसे समझाइत कि ऊ मन से ऐना देखल ओह दिने छोड़ दिहले रहे, जवना दिन बाबूजी ओकरा छोड़ बहुत दूर निकल गइल रहले। ऐना देखला पर बेबस लुटल- पुटल बाबूजी देख जास । ओकरा पाँव में एतना ताकत ना बचल रहे कि बिछावन पर जा के गिर सके। ऊ ओहिजे जमीन पर बइठ गइल। दूनो हथेली से चेहरा ढाँक लिहलस आ फफक के रो परल- 'बाबूजी होऽऽ...'

पताः— सी—6, यमुना विहार दिल्ली—110053
मो०-9871595723

लघुकथा

पानी के सुख दुख

❑ विनोद द्विवेदी

एक बेर पाण्डव लोग बनारस घूमे आइल। भुखाइल-पियासल ओ लोग के ओठ झुराइल रहे। द्रौपदी पानी-पानी क रट लगावे लगली। सहदेव आ नकुल अगस्तकुण्डा का गली में घुसि गइल लोग, देरी होत देखि भीमो ओहरे चलि गइलन। द्रौपदी क परेसानी अर्जुन से बरदास ना होत रहे ऊहो पाछा लागल पानी का खोज में चलि गइलन। जब बहुत देर हो गइल त युधिष्ठिर के जाए के परल। ऊ जाके देखत बाड़न कि नकुल-सहदेव दूनो जाना गड़हा खनत रहें, भीम जोर लगा के नलवे के झुकावत रहलन आ बाण से बोरिंग करे वाला धनुषधारी अर्जुन लगिए ठाढ़ दू गो मेहरारुन से झगरा करत रहलन कि 'पानी सबसे पहिले हम लेइब!'

युधिष्ठिर के देखि के नल क मालिक रतन यादव बोलल, 'पहिले हमरा सवाल के जबाब देबे के परी तब्बे पहिले पानी मिली।' उनका सहमति दिहला पर ऊ पुछलस, 'सबसे बड़ सुख का ह?'

'अपना नल में पानी आइल।' युधिष्ठिर जबाब देहलन।

'सबसे बड़ दुख का हऽ?' - 'पड़ोसी का घर में पानी आइल।'

नल के मालिक खुस होके बोलल- "एकदम सही। तू बहुत समझदार बाड़ऽ। अब एह नल क पानी सबसे पहिले तोहरे के मिली।"

- एन-१०/७६ आर०बी०सी०, आर०के०पुरम, न्यू कालोनी, ककरमत्ता, वाराणसी-४

ओरहन देत अछरंग

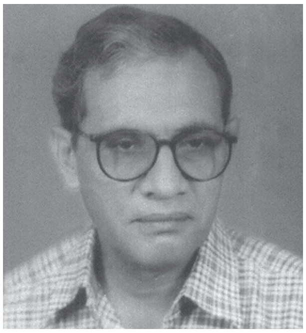

✍ कृष्ण कुमार

ऊ एक कट्ठा डीह ननकेसवर चाचा के नकनका देते रहे।
हमरा गाँव के डीह में पूरा साल में लोग दूइये चीजन के खेती करेलें । भादो - भदवारी में जनेरा-जोन्हरी आ रबी फसल के बेरा आलू-तेलहन। आलू कोड़ला के बाद चटकवाहे पिआज के रोपनी हो जाला काहे कि ओह डीह के जमीन ऊँचास हई सऽ। ओहि डीह के किनार प० ननकेसवर चाचा के एक कट्ठा खाल खेत रहे। हम जब से होस सम्हरनी, तब से इहे देखत आवडतानी कि खाल खेत होखे के चलते ननकेसवर चाचा ओह डीह में दूइये चीजन के खेती करत रहन। खरीफ के बेरा धान आ रबी के समय मसुरी। गाँव के गोएँडा के खेत होखे के चलते बड़ा ढंग से फसल उपजत रहे । दर-मन में एक दम अव्वल। बाकिर ओह एक कट्ठा डीह के एगो दाना चाचा के घरे ना आवत रहे। उनका डांठे पऽ सबुर करे के परत रहे।

असल में ओह टोपरा के साथे ई बात रहे कि ओकरा एक किनार से गाँव भर के निकसार के पगडंडी बा। माल-मवेशी के जब कबो ओह राह से गुजरे के मोका लागे तऽ उनका खेत में ऊ बिना मुँह लगवले ना मानत रहन सऽ । एह से राह के पंजरा के तऽ सभ फसल गोटाये से पहिलही ओरिया जात रहे आ जवन बांचि जात रहे ओह के सुअर ओरिया देत रहन सऽ । ओह डीह से एक बिगहा पुरुब मुसहरटोली बसल बा। होत पराते जब मुसहर लोग अपना सुअरन के चरावे खातिर खोलसु तऽ सबसे पहिले ननकेसवर चाचा के टोपरा प ऊ हमला करत रहन सऽ। चरवाहन के 'हंऽ...हंऽ...' कहे से पहिलही ऊ उनका खेत के नोंचि-चोथि के ओरिया देत रहन सऽ। ओह खेत पऽ जब जासु ननकेसवर चाचा तऽ झनकि जात रहन । खिसि अगिया बैताल हो जासु। अपना खेत के हालात देखि ऊ गरिआवे के काम लगावसु। माई-बहिन से लेले दादी-नानी तक के पाहटि पूरा देत रहन । बाकिर कवनो फएदा ना होत रहे।

ओह जमीन के डांरारि के सटले गोरेया बाबा के थान बा। गाँव के लोग कइअक बेर कहल ननकेसवर चाचा से, "बाबा, दे दीं जमीनिआ गोरेया बाबा के नाम पै । एह से रावा कवनो फएदा नइखे । गारी देके आपन मुँह असुध करऽतानी। राउर नाम अमर हो जाई । रउआ ढेर जमीन बा। एह एक कट्ठा से का होखे-जाए के बा...?" "चाचा बेच दीं एह जमीनिआ के हम कीनि लेब। ई गाँव के गोएंडा बा। हम एह में घर बनाइबि । हमरा गाँव में रहे में बुझाता। परिवार बढ़ि गइल बा। बड़ा दिकदारी होता.....।" बड़ा स जबाब में कहसु ननकेसवर चाचा, "तुहीं आपन घरवा बेचि दऽ ना। हम खरीद लेबि। तोहरा दिकदारी के हम ठीका लेले बानी का...?" गाँव के लोग के कहत-कहत मुँह दुखा गइल। ननकेसवर चाचा मरि गइलें बाकिर ना ओह डीह के बेचलें आ ना गोरेया बाबा में दान देलें...।

ननकेसवर चाचा के परिवार बहुत छोट रहे। बस दू बेकत। चाचा आ चाची। दूनों बेकत बूढ़ा गइलें बाकिर कवनो बाल-बच्चा ना भइल। तब हमनी के पांचि घर कायस्थ अपना गाँव में रहीं जा। जेवना में एक घर नतुहा हवें। एक तऽ अकसआ जाति आ ऊपर से आपस में

कवनो ताल-मेल ना। पाँचों घर के पाँच राहऽ। तीन कनउजिया तेरह चुल्हा वाला हाल। केहू, केहु से भर मुँह बोलहूं खातिर दलिदर। ननकेसवर चाचा सवंगर ना। रहन बाकिर तबहुं केहु से दबसु ना। बिना सेवा कइले गोतिया लोग उनकर धन छोवे के उपाय में लगलें। ऊ लोग नली-गली के ममिला में ननकेसवर चाचा के दबावे के शुरू कइलें। बाकिर ननकेसवर चाचा तनिको ना पिछुअइलें। उनका से अझुराइल रहन तऽ एके घर । बाकिर सभ गोतिआ लोग के नाम डालि के बक्सर कचहरी में नालिस कऽ अइलें ननकेसवर चाचा। नमरी केस रहे। बीस बरीस तक ले टोपरा बई कऽ के ऊ केस लड़लें। ऊ साफ कहत रहन, "तोहनी लोग के लड़ावत-लड़ावत उजारि देबि।" अन्त दांव में डिगरी हो गइल ननकेसवर चाचा के। बाद के जीवन खेपे में आपन ढ़ेर खेत बेचलें चाचा । अन्त दांव में ऊ दुनिआ से कूच कऽ गइलें। कुछ खेत बाँचल रहे। जवना के बल-बूता पे चाची आपन जिनिगी खेपली। ओह लोग के तीन बिगहा खेत चाची के मुअला के बाद बाँचल रहे । जवन हमनिन के तीनों गोतिआ बाद में आपुस में तोर मोर कइला के बाद बांटि लेनी जा। अगर जे चाची अवरू एक हपता जिअल रहिती तऽ उहो खेत साफ कऽ देले रहिती । ओह पऽ महाजन से बतकही चलत रहे। एको धूर उनकर जमीन केहु के ना भेंटाइल रहित। बाकिर जेकरा भाग में जवन रहेला ऊ सटिये जाला। चाची मुए से छव महीना पहिले साफ कहले रही, "केहु गोतिआ-देआद हमार सेवा नइखे कइले। एक गिलास पानी तक नइखे देले। एह से जे केहु हमरा धन के हकदार होई, ओकर बंस-बरकत कबो ना होई। हमरे लेखा उहो निरवंश हो जाई...।"

ओह घरी हम अपना नोकरी के जोगाड़ में बोकारो स्टील सीटी में रहत रहिं। लइकन के टिउसन कऽ के आपन खरच -बरच निकालत रहीं आ अपना नोकरी के प्रयास में भी रहत रहीं । एक बेर गाँवे अइनी तऽ चाची के कहल बात जब हमरा कान में आइल तऽ हम अपना माई से कहले रहीं, "चाची के कहनाम ठीक बा। जब केहु ओह दूनों परानी के सेवा ना कइल तऽ धन के हकदार कइसे होई...?"

अपना घर के हालात देखि हम अपना घर के टेढ़-टाढ़ भइल इज्जत के पटरी पऽ ले आवे के जोगाड़ में भीड़ गइनी । अब ले हमरा नोकरी के जोगाड़ ओइजा ना भइल रहे। अनसा के गाँवे आ गइनी। तब बाबूजी. त्रिदंडी स्वामी से दीक्षा लेके साधु हो गइल रहीं। ऊहाँ के गाँव पऽ कम रहत रहीं। सभ खेत- बधारि मनी - बटइआ पऽ बन्दोबस्त कऽ के ऊहाँ के अहथिर हो गइल रहीं। हम सभ आपन खेत तऽ ना बटोर सकनी बाकिर पाँच बिगहा खेत अपना जिम्मे राखि के ट्रैक्टर से खेती करावे के काम लगवनी। एहि बीचे ननकेसवर बो चाची गुजरि गइली। उनकर सभ बाँचलि-खुचलि जायदाद हमनी के जिम्मे आ गइल जवना में गोरेया बाबा के थान तक के ऊ एक कट्ठा डीह भी रहे। चाची के घरेलू समानन के हमनिन के आपन आपन हिस्सा बाँट लेनी जा। बाकिर अबहीं खेत- बधारी चाची के ना बँटाइल रहे। असल में चाची के धन में तीनों गोतिया के बरोबर-बरोबर हक ना बनत रहे। एगो गोतिआ महेश भइया आठ आना के हकदार रहन आ आठ आना में चार-चार आना के हकदार हमार घर आ लालबाबू भइया... ।

चाची के काम-किरिया से उगरह होते गाँव के लोग हमरा से सलाह कइल, "ननकेसवर चाचा के एक कट्ठा डिहवा गोरेयाबाबा में दे दिहितीं तऽ बड़ा निम्मन होइत । ओइजा फैलगर जगहा हो जाइत । गवनई-बजनई करे खातिर जइसे गाँव के तीनों दिसन में सिवलन लगे फैलाह जगहा बा, ओसहीं दखिनो ओरे गोरेया बाबा किहाँ जगहा हो जाइत। गाँव के इज्जत-हुरमत के सवाल बा। तनिका सा रावाँ ताकि देतीं तऽ ई काम हो जाइत । ननकेसवर चाचा के कवनो औलाद नइखे। उनकर नाम आगे अब डूबे जा रहल बा। गोरेया बाबा भीरी जलसागर जगहा बना के ओह दूनों बेकत के नाम संगरमरमर के पट्टी पऽ लिखवा के लगवा दिहल जाइत। ऊ दूनों बेकत अमर हो जइतें...।"

चाची के कहल बात कि 'जे हमार धन लिही' ओकरा कबो हबेख ना होई' ई हमरा जेहन में तूफान मचवले रहे। साथे हम लइकाइये से इहो देखत आवत रहिं कि खरिहानी में अन्न के कवनो गल्ला जब तैयार होखे ओसहीं सूप से गोरेया बाबा के नाम पऽ सबसे पहिले अंगउँ निकाल दिहल जात रहे जवन गाँव के पासवान लोग खरिहानी-खरिहानी घूमि के तसीलत रहन आ ओकरा के बीन-बरा के धो-धाइ के जांत में पीसत रहन आ तब कचवनिया-पिठार बना के गोरेया बाबा के चढ़ावत रहन...।

हमरा गाँव में बरसात के दिनन में माल-मवेसी रोग के पकड़ में आके जब मरे लागेलें ओह घरी संउसे गाँव के लोग एकवटि के बेहरी लगावेलें। शराब आ सुअरी के छाँवना (बच्चा) किनेलें। सुतली राति खा, आधा राति के बेरा में गोरेया बाबा लगे जुमेलें। ओइजा हवन-हुमाद कऽ के लोग शराब गिरावेलें आ गोरेया बाबा के लगे से सउसे गाँव के बाहरे-बाहरे सिवान के डंरारि धइले घेरवटेलें। चौतरफा

घोंरवटला के बाद दखिन ओरे अपना सिवान से बाहर होके सुअरी के ओह छाँवना के दोसरा गाँव के ओरे खदेर देलें। आ कहेलें, "दुख-बलाइ ले के भाग हमरा गाँव से बहरी...।"

बेमारी बहरिआवला के जानकारी मिल गइला पऽ पड़ोसिया गाँव के लोग भी लाठी-डंटा लेके अपना सिवान में जुमल रहेलें कि आन गाँव के भगावल सुअरी के छावना ओह लोग के गाँव में मति पैसार करि पावे। अइसन भगावल सुअरी के बच्चा के दोसरो गाँव के लोग हांक- हुक करेलें बाकिर जान से कबो ना मारसु ।

हमरा गाँव के लोग के एह बात के आजुओ विश्वास बा कि अइसन कइला से माल गरू के बेमारी भागि जाई। चाहे जवना विधि जानवर निरोग होखत होखसु बाकिर ई लोग एकरा के गोरया बाबा के प्रभुताई मानेलें । ओइसे जानवरन के दवा-बीरो के भी उपाइ कइल जाला। हरेक साल बरसात के दिनन में ई टोटरम हमरा गाँवे आजुओ होला....।

हमरा गाँव के लोग भूत-प्रेत में बहुते विश्वास करेलें । एह से ओझा-भगत से हमार गाँव भरल-पूरल बा। लईकाईं में ओझा के भूत झारल हम खूब देखले बानी। ओह में हम ई देखले रहीं कि कवनो ओझा जब भूतहा घर में दुकत रहन तऽ सबसे पहिले गोरेया बाबा के ही नाम गोहरावत रहन । ओझा लोग के मुँहे सुनले बानी कि बिना गोरेया के गोहरवले कवनो ओझा भूत ना झारि सकेलें । ना तऽ उनकर ओझाई वाली विद्या असफल हो जाला। कहीं जे भूत-प्रभावी मरद चाहे मेहरारू ताकत के ममिला में ओझा से अगर बरिआर होई तऽ ऊ दवरे पऽ ओझा के पटकि के उनका करेजा पऽ चढ़ि जाई आ उलटे उहे ओझा राम के भूत झारे लागी।

लइकाईंये से ई सभ बात गोरेया बाबा के बारे में देखे - सुने से हमहूं ओह सभ से अपना के अलगा ना पवनी बलुक पसन से सउना गइल रहीं। हमरा गाँव के डिहवार के बारे में तऽ कहहिं के नइखे। बड़ा तेज परेलें। हमरा ई कहे में तनिको गुरेज नइखे कि जवार भऽ के ओइसन कवनो ओझा नइखन जे हमरा गाँव के गोरेया लगे आके ना अरज कइले होइहें। पहिले तऽ ऊ माटिये के रहन बाकिर एक बे गाँव के लोग सलाह कऽ के रते-राति नहर के छलका के ईंटा उजारि के ढो ले आइल गोरेया बाबा लगे आ दू दिन में उनकर चबूतरा-मुड़ि सभ बान्हि के पक्का के बना देलें। तब से गोरेया बाबा अवरू चमके लगलें... ।
ननकेसवर बो चाची के मुअला के बाद जब गाँव के लोग हमरा से चाची वाला डीह के बारे में बतकही कइल तऽ हम अपना के रोकि ना पवनी आ आपन हिस्सा बिना अपना घरे सलाह कइले बेहिचक गोरेया बाबा के नाम पऽ दे दिहनी। हमरा एह काम से ओह डीह के चौथाई हिस्सा गोरेया बाबा में भेंटा गइल। हमरा देखा-देखी, चाहे गोरेया बाबा के प्रेम के चलते चाहे डरे एगो अवरू चवनिया हिसदार लालबाबू भइया के बेटा नीलम भी आपन हिस्सा गोरेया बाबा में दे देलें। एह तरीका से ननकेसवर चाचा के आधा डीह गोरेया बाबा में भेंटा गइल। हमरा घर के सभ लोग हमरा एह काम से खुस ना रहे। काहे कि गाँव के गोएंडा के जमीन के बात रहे । साठ-सत्तर हजारे कट्ठा के दर से बेचाए वाला जमीन। गाँव के एकदम सटले परत रहे। रहे-बसे जोग। हमार बड़का बाबूजी आ हमार बाबूजी दूनों आदमी अबहिं जिअत रहन। अबले हमार नोकरी इसकूल मास्टर में लागि गइल रहे। सोचनी, अगर जे घर के लोग एह जमीन खातिर हल्ला-गुल्ला करिहें तऽ कमा के ओह लोग के रोपेया दे देबि। ओह लोग के मुँह बन्द हो जाई बाकिर गाँव के लोगन के सोझा अंगद लेखा पीछा गोड़ ना हटाइबि। संजोग निम्मन रहेक हमरा घर के केहू हमरा सोझा ना बोलल। पीठ पीछे कुछ खुसुर-फुसुर एह बारे में जरूर कइल। हमरा कान में बात आइल बाकिर हम अनसुना कऽ के चुपा गइनी। अपना काम के जिअतार बनावे खातिर हम गाँव के लोग से कहि देनी, "हम काल्हु होत पराते अपना इसकूल पऽ चलि जाइब। नियरा के खेतन से माटी काटि के ननकेसवर चाचा के आधा जमीन भरि के गोरेया बाबा के चबूतरा में मिला दिह लोग। अगर हमरा घर के लोग उजुर-एतराज करे तऽ हमरा हमरा के बता के समुझा-बुझा दिहऽ लोग...।"

हमार फाइनल भिसिल सुनला के बाद गाँव के लोग तूफान हो गइलें। होत पराते इसकूल पऽ जाये खातिर एने हम गाँव से बहरी निकलनी ओने गाँव के लोग कुदारी-छईंटी लेले गोरेया बाबा लगे टूटि परल। घंटों के काम सेकन्डों में फरिआ गइल। घंटा-दू-घंटा में ननकेसवर चाचा के डीह चबूतरा के रूप में खाड़ हो गइल। लोग ओतने काम कऽ के ना मनलें। महीना लागत-लागत गाँव में दुआरे-दुआरे घुमि के चन्दा बटोरलें आ ओह नया चबूतरा पऽ हरिकिरितन करे के प्लान बना दिहलें। ओह घरी हम गंगा पार मुंजही के दिअर खवासपुर में मास्टरी करत रहीं । आजु लेखा ओह घरी फोन - मोबाइल के भी हलचलि ना रहे। शहरन में केहु-केहु के घरे बेसिक फोन रहे। गाँवे से अर्जुन खबर लेके अइलें खवासपुर, "गाँव के लोग राउर दिहल जमीन पऽ चौबीस घंटा के हरिकिरितन करे के प्लान बना देले बा।

नव तारीख के बारह बजे दिन में हरिकिरितन शुरू होई आ बिहान भइला दस तारीख के खतम हो जाई। रावा के खबर देबे खातिर गाँव के लोग हमरा के भेजल हा। रावा समय से गाँवे चलि आइबि... ।"

सुनि हमार मन गदगद हो गइल। उनका के खिया-पिया के भेजत हम कहनी, "जा, हम जरूर ओह दिन गाँवे आइबि। गाँव के लोग से कहि दि.. ।"

अपना वादा के मोताबिक हम नव तारीख के एक दम भोरे हरिकिरितन में सामिल होखे खातिर इसकूल पऽ से चलि दिहनी। हम सोचले रहीं कि सांझि तक ले गाँवे पहुँच जाइबि । बाकिर सोचल काम पूरा ना हो पावल। गंगा जी के अरार पऽ आवत-आवत पहिलकी नाव छूटि गइल। दूसरकी नाव से आगे के जतरा कइनी। ओसहि गंगा जी पार कइला के बाद बस धरे के बेरा सिन्हा बस स्टैंड में भी कुछ ओइसने भइल। बस खुले के समय हो गइल रहे। खुले खातिर ड्राइवर जोर-जोर से हॉर्न बजावत रहन। हम आपन चाल बदलनी। दुलुकिया चाल छोड़ि के दउरि गइनी । बाकिर ओइजो सफल ना हो पवनी। बस के टाइम पूरा होते एजेन्ट लोग ओह बस के एको मिनट अधिका ना रूके देलें। मात्र सई कदम खातिर हम पिछुआ गइनी आ बस चलि गइल। ओकरा दू घंटा बाद दोसर बस रहे। आरा पहुँचत-पहुँचत सांझि हो गइल। आरा से अबहीं पैंतालीस किलोमीटर दूर हमार गाँव रहे। बस के राहऽ। आखिरी बस गाँवे जाये खातिर चार बजे सांझि खा रहे। एह से ओह राति आरा के अपना घर में पड़ाव डाले के परल। दूसरका दिने होत पराते हम गाँवे जाये खातिर चलि दिहनी। ओह दिन ओइसन दिकदारी ना भइल। नव बजत-बजत गाँवे पहुंचि के पनपिआव कइनी आ झटकले गोरेया बाबा के स्थान लगे पहुँच गइनी। हरिकिरितन के पुरणाहुति ओहि दिने रहे। हरिकिरितन के पंडाल बड़ा सजाह लोग सजवले रहन। बेदी भी रंगीन चाउर से सजल रहे। अखंडदीप के दीया तऽ माटिये के रहे बाकिर ओकर पेट ह गहिराइ रहे। हम अंदाज कइनी - डेढ़ किलो घीव ओह दीया के पेट में आराम से आंटि जाई। ओह में रूआ के बाती ओइसने मोट लगावल रहे आ लह-लह जरत रहे। हम देखनीं, अबहि ओह दीया में घीव एक-दू घंटा जरे खातिर काफी रहे बाकिर तबो एगो लइका कटोरा में घीव लेके ओह दीया के लबालब भरि देलसि। हमरा बुझा गइल, गाँव के लोग अउला घीव तसीलले बा। जब ले हरिकिरितन खतम ना भइल हम ओइजे रहि गइनी। अंदाजन बारह बजे दिन में हरिकिरितन खतम भइल। तब हम घरे अइनी आ खा-पी के आराम करत रहीं। तीन बजे एगो लइका हमरा के खोजत आइल। हम ओकरा से मोजाहिम भइनी। ऊ लइका कहलसि, "काकाजी, हरिकिरितन में के दीया बुता के घीव लेले भागि गइलें विजय ठाकुर।" हम ओह लइका से फारिग होखे खातिर झटकाहे कहनी "जा ठीक बा। हम साँझि ले गोरेया बाबा लगे आइब ते एह बारे में पुछारो करबि...।"

गधबेर के बेरा में हम अपना घर से निकलनी। हमरा दुआर पऽ बइठल उमा साहु, मदन साहु, दुअरिका, कलामुद्दीन आ अवरू एक-दू आदमी हमरा साथे हो गइलें। असल में हम अपना गाँव के सामाजिक कामन के अगुवा हमेशा से रहल बानी। आ भगवान के अइसन किरिपा बा कि गाँव के चौमोहान पऽ हमार घर बडुए आ घर के सटले गणेश जी के विशाल मंदिर। हमरा घर के आगा लम्बा-चौड़ा पक्का बरामदा बा। एह से का दिन आ का राति, हमरा दुआर पऽ दू-चार आदमी बरमहल बइठल-सुतल रहेलें। साथ हमार ई सोभाव रहल बा कि गाँव के केहु जब कबो हमरा से जवन मदद मंगले बा हम ओह खातिर अपना अवकात भऽ हमेशा तइयार रहल बानी। कबो घुरचिआह नइखीं कइले । एह से जब हम गाँवे जाइला आ अपना दुआर पऽ से कतहीं जाये खातिर निकलि ला तऽ दू-चार आदमी हमरा साथे लागि जालें, उहो बिना हमरा कहले; हमरा कबो-कबो तऽ बरिजे के परेला...।

हँऽ, तऽ हमनी के सभ आदिमी चलि देनी जा गोरेया बाबा के स्थान के ओरे। सांझि हो गइल रहे। अन्हार होखे में अब थोरहिं देरी रहे । संजोग ठीक रहे। विजय ठाकुर आ कुछ गाँव के सेयान लइका पहिले से ओइजा बइठल रहन। नथुनी के बारल दीया के लाफ में गोरेया बाबा के मुड़ी लउकत रहे। हवा सिसुके से लाफ दहिन-बांये फेंकात रहे। जगहा पऽ अहथिर ना रहि पावत रहे। हम मने मन खुश भइनी कि बिना खोजले विजय ठाकुर से भेंट हो गइल। उनका दुआर पऽ केहु के ना भेजे के परल। विजय ठाकुर खातिर हमरा मन में खीस तूफान पऽ रहे। हमरा बरदास ना भइल। बोले खातिर मुँह ककुलात रहे। अपना साथे वाला लोग से हम ओह लइका के कहल बात राह में कहनी। जवाब में ऊ लोग बतावल, "हमनिन के ई सभ ममिला पहिले से मालूम बा...।"

खैर, ओइजा पहुँचते आ विजय ठाकुर से नजर लड़ते हमार पारा तीसरा आसमान पऽ चढ़ि गइल।

सवाल दगनी, “का हो विजय ठाकुर, हरिकिरितन के दीया बुता के घीव लेले घरे भागि गइल हा। ई ठीक काम ना कइलऽ हा। राम-राम ! छीः-छीः ! एक चिरूआ पानी में डुबि मरऽ । तनिको विचार ना कइल हा। हम आजु ले तोहरा बारे में अइसन कबो ना सोचले रहीं कि तु आतना गड़हा में उतरि जइबऽ । माई के छाती घटोरला से पेट ना भरलऽ तऽ बाप के पेल्हड़ पिअला से पेट भरी? जा तू हरदम कंक भइल रहबऽ । तोहरा बहुते पाप लागी...।”

हमरा सवाल के जबाब में गरम हो गइलें विजय ठाकुर, “कवन ससुरा कहलऽ सा काका जी? हमार ई काम कइल ना हऽ ।”

“तब केकर कइल हऽ...?”

“हम का जानीं... ।”

“सउंसे गाँव जानि गइल आ तु जानते नइखऽ...?”

“बोलबऽ झूठ... ?”

“ना काका जी, एकदम ना। कहि तऽ हम गोरया बाबा के मुड़ी छू दे तानी। ई कवनो लगावे-बझावे खातिर रउआ से लाई जोरि देले बाडें स। हम ईमानदारी से कहत बानीं । रउआ विश्वास करीं...।” उनकर बात सुनि हम आंखि गुंड़ेरत डपटनी, “चुप रहु । बेसी मत बोलु...।”

हमरा भीतरी पहिले से खीस रहले रहल। उनका चुप ना भइला से ऊ अवरू दोगिनिआ गइल। विजय ठाकुर के गारी हमरा के भँभोरी देलसि। गरम तेवर में नहला पऽ दहला फेंकनी, “खबरदार गारी मत दऽ । अबहीं पूछते बाड़ऽ कि के कहता? हम कहऽतानी । सुनात नइखे। जबान सम्हारि के बात करऽ, ना तऽ जीभ उखाड़ लेबि । साले, गलती कऽ के गारी दे तारें...?” अतना कहत हम अपना के जप्त कइनी। हमार जबान ठंढाइल । हम अफसोस के कोहरा से तोपा गइनी। अपना कथनी पऽ तरस आइल। आ हमरा इहो बुझाइल कि अबरूआ पवनी-पवंरिया जानि के हम एकरा के अधिका बोल देनी। हम एकरा के पहिले गारी देले बानी। हमरा अइसन ना कइल चाहत रहे। परम पवित्र मन बहका देनी। अफसोसे मन पितरिआ गइल। विजइया हमरा नाता में भतीजा लागत रहे। एकर बाप बनारसी हमार बड़ा रहन। मरे के बेरा ऊ हमरा से कहले रहन, “विजइया जोरे निबाहि देबि....।” उनकर कहल बात हमार मन में उमड़े लागल। हम डंरारि पार कऽ गइल रहीं । जब कबो गाँवे जात रहीं विजय ठाकुर बिना बोलवले हमरा दुआर पर आके पूछि जात रहन, “काका जी, दाढ़ी बना दे तानी। केस काट दे तानी।” जबकि हमार खानदानी हजाम घुघुली के घर रहे। तीन-चार पुस्त से। बाकिर हम ओइजा असमरथ रहनी। तीर लेखा बात जबान से निकलि गइल रहे। हम एहि लोलारक में अझुरांइल रहनी कि ओइजा के वाकेया एक बा एक अचके में बदलि गइल। हम बड़ा फेरा में परि गइनी । विजय ठाकुर जोर से चिचिअइलें,

“बाप रे बाप, जान गइल रे दादा! बिच्छी मारि देलसि....।” एक हाथ से दोसर हाथ धइले काने लगलें। ना जाने कइसे ऊ आन्हारे में जानि गइलें कि बिच्छी मारि देलस। उनकर चिचिआइल सुनि हम घबड़ा गइनी । हमरा काठ मारि देलसि। बुझा कि हम गाई मारि देले होखीं। बुझात ना रहे कि का करिं आ का ना। कुकुरझोंझ में मन अझुरा गइल। उभ- चुभ में हिया हिलकोरा मारे लागल । अपना के सम्हरनी आं मन कड़ा कऽ के टार्च जरवनी। एक ठूंठ के बिच्छी। अलकातरा लेखा करिआ आ मोट-झोंट। ओकरा पीठ पऽ के रोंआ अंजोरा में चमकल। ओकर फूलल पेट देखि हम तजबिजनी- ई मेदिन हऽ । एकर दिन चढ़ल बा। लगलाहे खेला होखे जोग बुझाइल। जहर उगिल के जान बचावे खातिर दरार के जोगाड़ में टुंड ऊपर उठवले दनादन भागल जात रहे। हम ओइसन गोटाइल बिच्छी ओकरा पहिले ना देखले रहीं । सभकर मुँह बवा गइल। विजय ठाकुर तऽ दनवादूत हो गइलें। बिच्छी पऽ नजर परते हरिकिरितन के बनावल बेदी में के एगो ईंटा कबरलें। माटी के गिलवा पऽ जोरि के राजमिस्त्री लोग बेदी बनवले रहल। बड़ा आसानी से ईंटा कबरि गइल। ऊ बिच्छी के मारे के फेरा में सोगहग ईंटा हाथ में उठवले खाड़ हो गइलें। निसान सधलें। बाकिर लादू पासवान के बेटा गिरवर उनकर हाथ साफ धऽ लेलें, “मति मारऽ, एकरा के। ई परसों भी लीपे पोते के बेरा एहि जगहा पऽ निकलल रहे। बाकिर एकरा के ना मारल गइल। भइल कि ई गोरेया बाबा के गण हऽ। एह स्थान पऽ जीव हतेया ना कइल जाई । का एह एगो बिच्छी के मारि देला से संउसे बधारी के बिच्छी ओरिया जइहें सऽ...?

अतना कहि के गिरवर ओह बिच्छी के टुंड ओर से धइलें हाथ में टांगि लेलें आ गोरेया बाबा के दखिन ओरे जा के कहीं छोड़ि अइलें। बाद में लोग हमरा से बतावल, “इनका बिच्छी के मारल लहर ना चढ़े। बिच्छी के टुंड ओरे से पकड़े के तरीका ई जानऽ तारें।”

हम अचरज में परि गइनी। विजय ठाकुर हमरा गाँव के एगो छोट मोट ओझा हवें । केहु के परले-हरले

ओझाई करेलें। हम देखनीं, ऊ ओहि घरी हाथ से ईंटा फेंकलें आ गोरेया बाबा के पुरुब आके चउतरा पऽ चुतरिआ गइलें। जवना हाथ के अंगुरी में बिच्छी टुनकवले रहे ओह हाथ के बड़ा जोर से दू-तीन बेर जमीनि पऽ पटकलें। गोरेया बाबा के गोहरावे लगलें। बाकिर लहर तनिको ओनइस ना भइल। गतर से पसेना चले लागल। केहु उनका पंजरा ना गइल। तब हम अपना के रोकि ना पवनी, "इनका के धऽ के ले चलऽ लोग गाँव में। केहु से झरवावे के जोगाड़ कइल जाउ। हम देखऽतानी इनकर लहर अवरू चढ़ल जाता...।"

अपना ओझइती के पानी बचावे के जोगाड़ में विजय ठाकुर कँाखत कहलें, "ना... ना...। काका जी। रउआ चुप रहीं। तुरंते ठीक हो जाई ।"

अइसन उनका कहे में अवरू समय जाया हो गइल । लहर ताबरतोर आगा मुँहे बढ़ल जात रहे। पांखुर धऽ लेलसि। कवनो फएदा ना भइल। बाद में उहे काम भइल। गाँव में टाँगि-टाँगि के अइलें विजय ठाकुर । झार-फूँक भइल। दवा-बीरो भइल। शिवजी डाक्टर सूई देलें तब जाके कुछ शांत भइलें। बिहान भइला शिवराती रहे। हमरा गाँव के कुछ लोग हर शिवराती के शिव जी के जल चढ़ावे खातिर ब्रह्मपुर जालें । विजय ठाकुर गाँव के लोगन के साथे कंहरत-कांखत कवनो तरे ब्रह्मपुर गइलें। उनका लवटला के बाद पुछारो में हम सांझि खा उनका दुआर पऽ गइनी । ऊ बतवलें, "दरद-लहर बहुते कम बा। बाकिर हाथ अबहीं झनकऽता।" ओह बिच्छी के लहर से दू दिन तक ले विजय ठाकुर बेचैन रहलें। हम छुट्टी दूइये दिन के लेके इसकूल पऽ से आइल रहीं। पाँच दिन गाँवे रहि जाये के परल। विजय ठाकुर के पूरा ठीक भइला के बाद हम अपना इसकूल खातिर जतरा कइनी।

हमरा लइकाई में के एगो घटना इयाद परऽता। मोनरिका के बिच्छी मरले रहे। नव बिगहवा में। धान के बिआ कबारत रहन। बशिष्ठ नारायण सिंह के खेत में। पिठइँआ टाँगि-टूंगि के गाँव में अइलें। एहि बीचे उनका छरबिन्हवा हो गइल। लोग कहल, "बिच्छी टुनुका के उलटि गइल बिया। एहि से इनका छरबिन्हवा हो गइल।" गाँव से लेले जवार तक के एक से एक झरवइया अइलें। आपन-आपन मन्तर लगावे से केहू बाज ना आइल, "जिअब तऽ बाह-बाहऽ । मुअब तऽ बाह - बाहऽ ।" के जाप लोग जपत रहि गइल बाकिर ना बंचले मोनरिका । ओरिया गइलें।

हमरा ओरहन देला के बाद विजय ठाकुर के बिच्छी मरलसि तऽ हमरा मन में ओह घरी मोनरिका के मउअत साक्षात इयाद आ गइल। झरवइया लोग कवन मन्तर पढ़ि-पढ़ि के विजय ठाकुर के लहर ठंढावल, कवन सूई-दवाई उनका फएदा कइलसि, हरिकिरितन में के बांचल घीव, दीया बुता के, के ले गइल, ई तऽ हम आजुओ नइखी कहि सकत, हम ओहि घरी गोरेया बाबा से लेले जनमेजय जी, सेदहां के खेलावन बाबा सभका के गोहरावे लगनी, "हे बाबा लोग, अब हमार इज्जत रउए सभे के हाथ में बा । हमरा के एह अछरंग से बचा लीं। अगर इनका साथे कुछुओ खाता-नागा हो जाता त हम गाँव में कवन मुँह देखाइबि ? के सम्हारी इनकर बाल-बच्चा, मेहरारू के? इनकर परिवार पाला मारल खेसारी लेखा झुरा जाई। हमार पत राखि लीं भगवन...।

गीता में निसकाम भक्ति के चरचा आइल बा। बाकिर हमरा बुझाला कि असल में निसकाम भक्ति होला ना। बिना सोआरथ के परेम आ भक्ति ना होखे। केहु अइसन नइखे कइले...। अब चाहे जवना विधि विजय ठाकुर निरोग भइल होखसु ओकरा बारे में आगे चरचा कइल बाजिब नइखे बुझात बाकिर आजुओ ऊ घटना जब कबो हमरा इयाद परेला तऽ हम हमार देहिं सिहरि जाला आ हमार साठियों करोड़ रोवां तनि के खड़ा हो जाला...।

पता– महावीर स्थान के निकट, करमनटोला,
आरा-802301

किरिपा-निधान

राजगुप्त

अपना शहर में कई पुस्तन से चलल आवत एगो मूर्ति भंडार के दोकान बा। ओइजा एक से एक सुन्नर-सुन्नर संगमरमर के देवतन के मूर्ति रहली सऽ। जवन चानियों से तेज चमकत रहली स। अनमन जनाउ कि छने भर में बोलि दीहें सऽ। अइसन सुन्नर मुर्तियन के देखे वालन के करेजा जुड़ा जाऊ। अनासो हाथ जोड़ा जाऊ। मन दिल पवित्तर हो जाउ। जइसे अगवड़े असिरबाद मिल गइल होखे। कई पुस्तन से प्रचलित नामी-गिरामी दोकान आजुवो भोला बाबू चलावत रहले। पकौड़ी-समोसा-चाय के तऽ दोकान रहे ना कि गहंकी के आवा जाही रहीं। मूर्ति भंडार में चेतल लेनदार गहंकी आवे, जहाँ भगवान बेचात होखे, ओइजा फूहर-पातर गहंकी ना न दोकान में हेली? दोकान का पाछा रहे वाला घर रहे। दोकान के बगल में गलियारा रहे। वइजे से घर भीतर बाहर आवे जाये के रस्ता रहे।

भोला बाबू नामी-गिरामी साहित्यकार रहले। जिनकर खाली अपने शहर में ना, दोसरो शहर में प्रसिद्धि आ नाव गाँव रहे। उनका हरदम सभा बइठक में सम्मान के साथ बोलहटा आवत हरे। जब घर से बहरिआसु त भोला बो जेकर नाव लक्ष्मी रहे। देकान अंगोरसु। सांच पूछी त दोकान अंगोरहू के ना पड़े। खरीददार अपने हाँक लगावे। कवनो चोरी-चमारी के डर रहे ना। एह से दुनु बेकति निश्चिंत रहसु। लक्ष्मी घर के कामो देखसु आ दोकानो अंगोरसु। एह से भोला बाबू निफ्फिक्किर हो के सभा सोसाइटी में आवसु-जासु। पुरान सभ्यता संस्कृति के खोजे खातिर कहाँ-कहाँ ना चलि जासु। एह से उनकर मान-मरजाद खुबे रहे।

सावन के दिन रहे। एक दिन के बाति हऽ लक्ष्मी मंदिर गइल रहली। भोला बाबू दोकान पर उदास बइठल रहे। सड़की ओरि ताकत रहले। पीटि-पीटि पानी पड़त रहे। कई दिन हो गइल रहे। बिक्री-बण्टा ना भइल रहे। सोचत रहले। जेकरा घर में हेतना भगवान होखसु, ओकरा खइला के अकाल? जेकरा जेकरा घर में हेतना भगवान ओकरा चिन्ता के भरमार? लाचारी में मन में हजारो सवाल? बरखा जब पटाइल त लक्ष्मी लउकली। सराबोर भींजि गइल रहली। भोला बाबू के निश्चिंत बइठल देखि चहकि कहली। फजिरे के लाइन में लागल लागल अबहीं खां जल ढ़ारे के मिलल हऽ। पुलिस वाला डण्डा भांजत बाड़े स। नीक से जल-फूल चढ़ावे नइखन स देत। सरधा से चढ़ावल जल-फूल भूइंया गिरि जाता। केकरा गोड़-मुड़ी आ देहि पर जल गिर जाता, धक्का-मुक्की में बुझाते नइखे। सभके हाबुर-ताबुर भइल बा। सरधा-सबुर केहुके नइखे। पहिले हम तऽ पहिले हम। एक अनार, सई बेमार, मरद-मेहरारून के ओतने बढ़ि-चढ़ि के मांग बा। केहू औलाद मांगता त केहू घर, केहू कार-गाड़ी मांगता तऽ केहू मोकदिमा में आपन जीत? केहू सोना-चांदी मांगता त केहू कर्जा उतारे के धन-दउलत?

लक्ष्मी के बात सुनि भोला बाबू कहले। जेकरा घर में देवतन कऽ बास बा, ऊ मन्दिर-मंदिर घूमऽ ता। नाभि में अछइत कस्तूरी मृगा बन-बन खोजेला? दुनिया के नउवा आसचर्ज? भोला बाबू के बाति काटत लक्ष्मी कहली। कानों से गोड़ सनाइल अब्बे धो धा के लूगा बदलि के आवतानी। तब बतिआवल जाई। बरखा बूनी में समय कटावल जाई।

लक्ष्मी लवटि के अइली त भोला बाबू से खुश होके कहली। इयाद करी ऊ

दिन जहिया रउरा आपना साली के शादी में बांसडीह गइल रहलीं। ससुरारि बहुत दिन बाद गइल रहली। सार-सरहजि लाड़-पेयार में हफ्तन राखि लेले रहली। केतना सेवा सत्कार भइल रहे। जवन आजुवो ना भुलाला। जब घरे लवटि के आइल रहली जा। रउरा इयाद पड़त होई। जब फजिरे रउरा दोकान खोलले रहली त चिहा के चिल्लाइल रहली। आवऽ दउड़ि के आवऽ। हई भगवान के करिश्मा देखऽ। जगहे-जगह मूर्तियन पर फल-फूल जइसे चढ़ावल गइल होखे। ईसर के किरिपा देखि हमनी के कटले खून ना। आजुवो ऊ अंगऊ फूल, गहना-गुरिया लेखा सहेजी के नूं रखले बानी। एह से बढ़ि के भवागन के आसिरबाद अउरी का चाहीं?

आजु सावन के सोमारी रहल ह। दू-दू जाना पंडित हाबुर-हाबुर चढ़ावा वाला पइसा बटोरता लोग। भगवान खाली मन्दिरे में ना, हमनियों के कबो देले बाड़े न। ओह किरिपा के का हमनी के कबहीं भुलइली जा ना। जेतना में बानी जा ओतना में सबुर कई के रहल जाऊ। सबुर से बढ़ि के कवनो धन ना होला। मंदिर के दुआरि के लगे मेहरारून के बड़ी भीड़ि रहुवे। ओइजा एगो पगलेट लतर की तरे लटकल जटा नीयर बार, चिद्दी-चिद्दी गतरे-गतर फाटल कपड़ा मइल कुचइट पहिरले पकपकात रहुवे कि तोहरा जल चढ़वला से का होई कि शीश चढ़ा के रावन आपन "लंका" ना बचा पवलिस तऽ दूध चढ़ावे वाला कवना गली के बाड़े? भला सोना में आगि लागेला जी?

का झूठहूँ के पकपकात बाड़ू। भोला बाबू लक्ष्मी के बरिजत कहुवें। लोढ़ा से बर परिछल जाला। सहवलिया के कपार ना घवाही कइल जाला। इयाद आवत होई। बसगाँवा के बाबू साहेब आइल रहले। शिवजी के बढ़िया मूर्ति ले जा के अपना गाँव में विधि-विधान से पूजा-पाठ करा के स्थापित कइले रहले। भजन-कीर्तन भंडारा भइल रहे, जवन हवन-यज्ञ भइल रहे कि मंदिर पर मेला झूठ भइल रहे। आजु बाबा के नांव अवार-जवार में डंका बजा दिहले। ओह मूर्ति पर जल फूल छोड़, धन दउलति बूनी-बरखा लेखा बरिसेला। मंदिर के पंडी जी एलानियां कहेले कि बाबा के सरन में आके जे भी जवन मन्नत माँगी, ओकर सज्जी मुराद पूरा होला। ओह मूर्ति के बनावे वाला अउरियो मूर्ति बनवले होई। बाकिर ओकर बनावल सज्जी मूर्ति में ऊ तेज ना आइल।

कहाउत हऽ दस कोस पर पानी बदले, बीस कोस पर बानी। कहंवा केकर किस्मत बदल जाई कुछऊ ना भांखल जा सकेला। जवहिरा पांच हजार के नोकरी करत रहे। नोकरी छोड़ि गुमटी में पान बेचे लागल। कुछुवे साल में तीन तल्ला पक्का मकान पिटवा लिहलसि बेचारा।

"एगो बाति कहीं?"

"कहऽ"

देखली न बाबूधन मामा के हालि। शहर में खुशी-खुशी जमीन किनले। खुशी-खुशी लड़िका खातिर सुन्नर मकान बनवले। बैण्ड-बाजा, ढोल-तासा बजववले। कीर्तन-भजन करा के गृह प्रवेश के दिन सुन्नर सवदगर खाना बनवा के टोला मुहल्ला के खिअवले। केतना बड़ाई भइल। लड़िका पढ़ि-लिखि के विदेश में नोकरी क लिहलसि। बोलहटा पर कहेला कि पापा हम एइजा बहुते खुश बानीं। लाड़ पेयार में पोसल-पालल, पढ़ावल-लिखावल बबुआ अपना माता-पिता आ जन्मभूमि के भुला गइले। देश आवे के नावे नइखे लेत। हारि-पाछि नया मकान किराया पर देबे के पड़ल। बेमार जो पड़ि जाई लोग त अस्पताले ले जाये खातिर पड़ोसिहा के चिरउरी करे के पड़ी। सासु, नाती-पोता देखे के ललसा लेके मउराइल जा ताड़ी?"

छोड़िं रोटी के चिन्ता, जाहि विधि रखिहें राम, वाहि विधि रहल जाई। कहिहे विधाता त नून रोटी खाइल जाई। सावन के दिन बा, चली हरिद्वारे घूमि-फिरि आवल जाई। एक हाली अउरी भगवान के करिश्मा अजमावल जाई।

छोड़ फालतू बाति। काल्हु करे सो आजु कर। आजु करे सो अब। जा तूं चउका में रस्ता खातिर कुछ बनाव छानऽ? हम कपड़ा लत्ता सरिहावत बानी।

गाड़ी में दू घण्टा के देरी बा। चलऽ लागि जाइल जा।

हफ्ता दिन बाद भोला बाबू आ लक्ष्मी तिरिथ क के लवटल लोग। होत फजीरे भोला बाबू जल-फूल ले के दोकान खोलले। दोकान के दशा देखि चकरिया गइले। हाथ जोड़ि भूइंया मूड़ी पटकि दीहले। ठेहुनिया के लक्ष्मी के हांक लगवले। जल्दी आवऽ हो ई‍ई दोकान के दशा आ देवतन के करिश्मा देखऽ। देवतन के मूर्तियन पर ठाँवा ठाँही पइसा लउकल। मने मन भोला बाबू सोचले। लागता भुखाइल मूर्तियन के कवना आ गइल होखे। मन्दिर में चढ़ावा चढ़ल होई बुझला ओइजे से बांट बखरा के पइसा भगवत किरिपा से एइजा आ गइल होखी। आंखि से देखि के इहे न कहल जा सकेला कि केहू ना केहू से वरदान के चमत्कार बा। आखिर के चढ़वले होई सोचत-सोचत माथा चकरिया गइल।

हम तऽ इ मानीलां कि भगवान पर जवन आदमी कबो कृपा कइले होखे तऽ भगवानो कवनो ना कवनो विधि ओकरी पर कृपा करिहें। ई चोरी ना हऽ, काहे से कि आजु तकले कवनो पुलिस, सी०आई०डी० भगवत कृपा के चोरी के पता ना लगा पवले। भगवान आपरूपी अपना भक्त खातिर आपन "बक्सा" ओकरा खातिर खोलि देले।

जय हो! किरिपा निधान, राउर किरिपा अपरमपार बा?

राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया, मोबा. : 7985409070

समकालीन भोजपुरी कविता में 'गोहार' के जरिये कवि चंद्रेश्वर के दमगर पइसार

डॉ0 सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी में गद्य से शुरुआत करिके पद्य के दुनियाँ में उतरे वाला हिन्दी-भोजपुरी के सुप्रतिष्ठित साहित्यकार चंद्रेश्वर जी के पहिला भोजपुरी कविता-संग्रह 'गोहार' के पढ़े से पहिले हम 'कवि का ओर से दूर गो बात' के पढ़े लगनीं। अपना एह आत्मकथ्य में कवि कविता के लेके कुछ साफ-साफ बतकही कइले बाड़न।उनकर कहनाम बा -

1- 'कविता सच्चाइयन से जोड़ के मनुष्य-जीवन के एगो गति प्रदान करेले। सभ्यता-संस्कृति के रचे-गढ़े में मय संसार में ओकर योगदान विशेष रहल बा। ऊ प्रेम आ प्रतिरोध साथ लेके आपन जय-जतरा प निकलेले।'

2- 'कविता से मनुष्य के आत्मा के अंदर के टेढ़ापन दूर हो जाला । ऊ संस्कारित हो जाला । कविता अच्छाई आ बुराई में फर्क करे के पाठ पढ़ावेले । ऊ सच आ झूठ के हिगरावल जानेले । ऊ समाज में फइलल अन्हार के सबसे पहिले चीन्ह लेबे ले । ऊ विवेक आ तर्क के जरिये अँजोर के ओर ले जाले ।'

3- 'कविता खालिस सोहर ना हऽ। ऊ मिरतू-राग भी हऽ । मर्सिया भी हऽ। कविता के बारे में इहो कहल जा सकेला कि ऊ दूधारी तलवार लेखाँ होले ।'

कविता के बारे में कवि के एह नजरिया से ई बात त साफे हो जात बा कि चंद्रेश्वर जी अपना कवितन के जरिये समय आ समाज के सच्चाइयन उकेरे के हरसंभव कोशिश कइले बाड़न। साथही इहो बात ऊ सँकरले बाड़न कि कविता प्रेम आ प्रतिरोध दूनू के साथे लेके आगे बढ़ेले । ऊ कविता के जनम के बेरा गावल जायेवाला सोहर के साथे-साथे ओकरा के मरन-रागो मान के चलल बाड़न-दू धारी तलवार मतिन । कवि के ई समझदारियो वाजिब बा कि कविता के लगे अइसनका विवेक जरूर रहेला कि ऊ नीमन आ बाऊर के ठीक तरे पहचान-परख सके। कविता नीमन आ अच्छाई के पक्ष में बराबर ठाड़ रहेले जबकि कवनों तरे के विसंगति आ बाऊरपन के खिलाफ ओकर स्वर प्रतिकार के रहेला । चंद्रेश्वर जी के कविता में विचार पक्ष जेतना मजबूती के साथ उभरेला ओकरा में संवेदना के तरलता आ अनुभूतियन के मौलिकतो ओतने भरपूर रूप में रहेला । एही बात का ओर इशारा करत ऊ खुदो लिखले बाड़ें अपना आत्मकथ्य में -'कविता पढ़ि भा लिख के हम अपना भीतर तरी आ तरावट के अनुभव करीला । हमार ग्यान कबो सूखे ना, ऊ संवेदना से जुड़ल रहेला । ई बात आज समकालीन कविता के कवि चंद्रेश्वर जी कहत बाड़ें त एह में कुछऊ अजूबा भा नयापन नइखे । मध्यकालीन भक्तिकाल के महाकवि तुलसीदासो जी के त अइसनके मान्यता रहे-'जौं बरषइ बरु बारि बिचारू । होहिं कवित मुकुतामनि चारू।' श्रेष्ठ विचारन के सजलता से कविता मुकुतामनि के चारुता आ सौन्दर्य गहि लेले । कहे में कवनों संकोच नइखे कि चंद्रेश्वर जी के कविता भाव आ विचार आउर सोच आ संवेदना-दूनू के पूरा संतुलन बना के चलल बिया।

(२)

भोजपुरी में चंद्रेश्वर जी के कविता संग्रह आवे के पहिले उनकर दू गो कथेतर गद्य के महत्वपूर्ण किताब आइल बाड़ी सँ- 'हमार गाँव' (2020) आ 'आपन आरा' (2023) । एह दूनू किताब के भोजपुरी साहित्य जगत में पूरा सम्मान मिलल बा इहे कारण बा कि पहिलकी के त दूसरका संस्करण प्रकाशक का निकाले के पड़ल बा।पहिलकी किताब हमहूँ बढ़िया तरे पढ़ले बानीं।बहुते रोचक आ गाँव-जवार के कथा, बोली-बात, आचार-व्यवहार, परम्परा-संस्कृति, कुरीति -कमजोरी, गीत-गवनई, प्रकृति से लगाव, आपसी प्रेम आ मनमुटाव, प्रगति आ ठहराव-सबके फोटोग्राफिक डिस्क्रीप्शन के साथे -साथे ओजवा हो रहल बदलाव के सकारात्मक आ नुकसानदायी दूनू तरह के परिणामो के झलकावत लेखक अपना कृति में चलल बा। एह सुललित गद्य के भाषा में एतना प्रवाह आ व्यंजना बा कि ई पूरा कृति एके बइठकिये पढ़ जाये लायेक बिया । किताब में गाँव के प्रति अतीत-राग (Nostalgia) के भाव के साथे-साथे बहुत कुछ अइसनका बा जवना से जवना से वर्तमान भारतीय गाँवन के ऊ छवि उभरि के सामने आ जात बिया जवना से ई बात साफ हो जात बिया कि तमाम तरे के गड़बड़ियन आ चकरचाली के बावजूद भारतीय गाँव आजो आपन सुघरता आ सम्मोहन बरकरार राखे में कामयाब बाड़ें सँ। चंद्रेश्वर जी के 'हमार गाँव' उनका कवितो में चित्रित भइल बा । एह गाँव में 'खेती-बारी' बा, 'अन्नदाता' बाड़ें, उनका पधोराई खातिर 'सतुआ' बाटे, 'माई रहे से माइये रहे' बाड़ी, 'केवना डाढ़ी प कोइलरि' बइठल बाड़ी, त कवनों दुआरी 'बबुआ के लोरी' गावल जा रहल बा। अपना एह ग्राम्यबोध के चंद्रेश्वर जी अपना एगो कविता में अभिव्यंजित करत कहत बाड़ें -

"तोहरा बतकही में आ जाला/कबो-कबो देस/ दुअरा के धवरा बैल/बाबा के बड़का पितरिया लोटा/लहरात टीकासन भरि के सोटा/ई सब देखि-सुनि के/ अचरज होत बा।" (तोहरा कविता में),

गाँवन के चित्रित करे के दौरान कुछ खतरा होला जवना ओर इशारा करत डॉ.बलभद्र जी एह किताब के अपना भूमिका में लिखलें बाड़न- "लोक आ लोक संस्कृति पर बात करत अतीत के माया-मोह में लपेटाये के जादे जोखिम होला।" चंद्रेश्वर जी ई जोखिम उठवले बाड़ें बाकिर पूरा सावधानीपूर्वक। ऊ बात बनऊवल भा अझुरऊवल ले जादे उचित समझलें बाड़ें सही तस्वीर सामने खड़ा कर दिहल। ऊ किसान के 'अन्नदाता' भर बताइये के उनकरा के सिकहरा चढ़ा दिहल उचित

नइखन मानत । ऊ साँच के परत -दर- परत उटकेर देबे के चाहत बाड़न । उनकर साफ कहनाम बा कि 'अन्नदाता' कहिके आ पलखत पावते मुड़ी उतार देबे वाली छली मानसिकता के समुझे के जरूरत बा । ना केवल समुझे के बलुक जमके एकर प्रतिरोध आ विरोध करे के जरूरत बा।कवि के शब्दन में ओकर खफाई खुल के सामने आइल बा-

1-'नेयाय आ हक माँगे खातिर/जब उतरबऽ लोगन/राजधानी के राजमारग पऽ/तऽ छछनावहूँ जानेलन/ उन्हिका जिनिगी के एगुड़े/मकसद हऽ/रोआइ रोआइ मारल/ पदा-पदा रोआवल/तोहरा अस लोगन के/ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध तऽ/देश के दरोही बतावेलन/जुझारू लोगन के।' (अन्नदाता),

2-'अब किसान राजा ना रंक के कतार में शामिल होई/जमीन से मिलल मुआवजा ओकरा/बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई/ऊ सरकारी इमदाद से ना/ओकरा खैरात पऽ जीही लोग/बाकिर ऊहो आखिर कब तक?' (खेती-बारी),

विकास के नाम पर फोरलेन के जाल, औने-पौने भाव पर खेतीबारी लायेक जमीनो के बिस्कुट आ साइकिल कंपनियन खातिर हड़प वाली मानसिकता ई बतावत बिया कि 'अन्नदाता' साथे कइसनका परपंच हो रहल बा। महँगा खाद-बीज आ मजदूरन के घरे भ्रष्टाचार सिखावत ओह लोग में खैराती बाँट के कामचोर बना दीहल-ई एगो अइसनका समस्या बा जवना चलते किसान आज एकदम लाचारी के हालत में आ गइल बा। चंद्रेश्वर जी के कविता एह सगरी सच्चाइयन के उघार के सोझा रख देत बिया। ऊ किसान भा मजदूर के जाँगरचोर बना के उनकरा आगे खेयाली पोलाव परोसे के गलत मानत बाड़ें आ ओह लोग के वास्तविक समस्यन, यथा -फसलन खातिर कम दाम पर खाद-बीया -पटवन आदि के सुविधा मुहैया करावे आ वाजिब बाजार मूल्य उपलब्ध करावे आदि -के निबटारा चाहत बाड़ें। चंद्रेश्वर जी के कविता किसानी जीवन के हलकानि, ओकर पीड़ा आ संघर्ष के बहुत नजदीक से निरेखत भोजपुरी समकालीन कविता के ताकतवर बनावे के भरपूर कोशिश करत बिया।

(३)

चंद्रेश्वर जी लगातार हिन्दी कविता लिखत आ रहल बानीं।अन्य भारतीय भाषा आ विश्व साहित्य के प्रगतियो से उहाँ के साबका बनल रहल बा।इहे कारण बा कि उहाँ के भोजपुरी कवितो के कथ्य में विषय के विविधता बनल रहल बा।आम तौर पर भोजपुरी कविता जवना के बारे में ई धारणा रहल बा कि उहाँ खाली गीते-गजल भा छंदबद्धे रचना सराहना बिटोर सकेली सँ, भा जवना कवितन में लयकारी कम -से-कम जरूर रही ताकि ऊ गावल-रेघावल जा सके ओजवे 'बाकिर' (शारदानंद प्रसाद), 'ई हरनाकुस मन' (पांडेय सुरेन्द्र), 'जोत कुहासा के' (प्रो.ब्रजकिशोर), 'टटात परछाईं' (विश्वरंजन), 'लेके ई लुकार हाथन में (डॉ.स्वर्णकिरण), 'एगो मेहरारू' (महेन्द्र गोस्वामी), 'कुछ खास किसिम के आवाज' (शशिभूषण लाल), 'औरत जात' (मलयार्जुन) आदि दर्जनन महत्वपूर्ण कविता संग्रहनो के भोजपुरी के समकालीन कविता के समृद्ध करे में प्रमुख योगदान रहल बा। तैयब हुसैन पीड़ित, भगवती प्रसाद द्विवेदी, ब्रजभूषण मिश्र, प्रकाश उदय, बलभद्र, जितेन्द्र कुमार, चंद्रदेव यादव, सदानंद शाही, लक्ष्मीकांत मुकुल आदि कवियन के परम्परा में चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी समकालीन कविता में प्रवेश एगो अइसन परिघटना मानल जाई जेकरा जरिये हिन्दी के आउरो बहुते कवि भोजपुरी में अपना कवितन के संग्रह सौंपे के सोचिहें।

हिन्दी समकालीन कविता में देशज बिम्बन-प्रतीकन के प्रयोग, लोक-संस्कृति, लोकाचार आ लोककथा आदि के छटा आ भाव-भंगिमा के उपयोग के जवन प्रवृति हिन्दी में नागार्जुन, त्रिलोचन, अरुणकमल, अष्टभुजा शुक्ल आदि से लेके आज रूपम मिश्र आ प्रभात जी तक ले देखे के मिलत बा ऊ सब त भोजपुरिया कवियन खातिर अपना घर के थाती रहल बा । अपना भूमिका में चंद्रेश्वर जी के 'गोहार' के कवितन पर अपन बात राखत डॉ.बलभद्र जी कुछ बहुत सार्थक चर्चा कइले बाड़न। ऊ कहत बाड़ें-

'सत्ता से सवाल आ असहमति चंद्रेश्वर के कविता के एगो आपन स्वर बा।आज के अस्सी प्रतिशत से अधिक भोजपुरी साहित्य सत्ता से इयारी के साहित्य ह।भोजपुरी के मंच पर सत्ता के दखल बा आ कवि-लेखक लोग सत्ता के चाकर । चंद्रेश्वर के लेखन एह से अलग बा।'

भोजपुरी साहित्य के लेके बलभद्र जी के ई टिप्पणी बहुत गंभीर बा । बलभद्र जी अपना टिप्पणी में एक ओर अगर अधिकतर भोजपुरी साहित्य के 'सत्ता से इयारी के साहित्य' कह रहल बानीं त दोसरा ओर भोजपुरी मंच पर सत्ता के 'दखल के गैरवाजिब बता रहल बानीं। भोजपुरी मंचन पर सत्ता के दखल खूब बढ़ल बा एमें कवनों दू राय नइखे बाकिर आज के भोजपुरी साहित्य के अस्सी प्रतिशत के सत्ता से इयारी के साहित्य बता दिहल उनकद निजी आक्रोश आ नाराजगी लेखाँ जादे लागत बा। सत्ता के मंचन पर दखल के त हमरा कबो-कबो बुझाला कि भोजपुरी में शुरुए से पाग-पगड़ी, चादर-माला के जवन लकम लाग गइल ऊ आज महामारी के रूप ले लेले बा । अब त मानपत्र मढ़वा के खूबसूरत मोमेंटो के साथे दिआये लागल बा। सिकहरा चढ़ाके गैर साहित्यिक संस्कार वाला साहित्यकारन के भोजपुरी मठाधीश लोग अपना विरोधी के खिलाफ लोहकारे आ गारागारी में भिड़ा देत बा। ई मठाधीश लोग के आँवक में भोजपुरी मंच अझुरा के रह गइल बा।जाति, धरम, क्षेत्र के आधार पर गुटबंदी से भोजपुरियो साहित्य आज अछूता नइखे रह गइल । सत्ता के ओर झुकाव के एगो आउर कारन ऊ 'आठवीं सूची' वाला कंगनवो हो गइल बा जवना के लालच में भोजपुरिहा अब ठगाते ना हताइलो शुरु हो गइल बा। हमरा समझ से ई नवरतनी कंगना मिलबो करी त ओह लेखाँ जइसे हारल-थाकल मन के कवनों जीवन-अनुदान मिलल होखे,तड़कल खेतन के कवनों घटा के दूई बूँद फुहार मिलल होखे, सेराइल सपनन के झूठा दिलासा मिलल होखे। बलभद्र जी बिलकुल ठीक कहले बानीं मंचन पर सत्ता के दखल वाली बात। सत्ता के गोदी में बइठके ओकर मुखालफत ना हो सकी। आरती उतारत ढेर दिन हो गइल। गिरोहबंदी आ आपन छोट-छोट मन-मुटाव छाड़ि के भोजपुरिया एकवट के जब आपन बिगुल बजा दीहें त सत्ता के कान खड़ा होखे लागी। जबले आपन नोकसान ना बुझाय, सत्ता ना चेतेले। तथ्य आ तर्क सब भोजपुरी के हक में बा, बस घाती बाड़ें अपने कुछ पोंछडोलावन महाप्रभु सभे, जे जिनिगी के आखिरी दिनो में सभ चढ़ावन अपने माथे सहोटे खातिर आतुर हो उठल बाड़ें। सत्ता के विरोध के साथे-साथे भोजपुरी का अपना भीतरी भस्मासुरो लोग से जान बचावे के बा।

(४)

समकालीन भोजपुरी कविता के कवियन के अनेक अइसन कविता मिल जइहें सँ जवनन में कवि कविता भा कवि के लेके कुछ बात कहले होई भा अपना काव्य-दृष्टि के स्पष्ट कइले होई। 'गोहार' के कवियो अपना कुछ कवितन

में कविता के लेके आपन कुछ बात रखले बाड़न जवनन के जरिये उनकरा काव्य-दृष्टि के परिचय मिलत बा। कहल जाला कि कविता आ कवि-व्यक्तित्व के फरिया-फरिया के देखल कठिन होला। कविता में कवि के व्यक्तित्व के साफ झलक देखे के मिलेला। काव्य-शैलियो पर कवि-व्यक्तित्व के भरपूर प्रभाव पड़ेला। अपना कविता संग्रह 'परिमल' के 'भूमिका' में निराला जी के कहनाम रहे कि मनुष्य के मुक्ति के तरे कवितो के मुक्ति के होले।मनुष्य के मुक्ति कर्म के बंधन से अलग हो गइल हटे आ कविता के मुक्ति के मायने छंदन आ काव्य- रुढ़ियन के बंधन से कविता के स्वतंत्र हो गइल मानल जाला। भोजपुरी के समकालीन कविता के अधिकतर कवियन मतिन चंद्रेश्वर जी के काव्य-शैलियो पर उनका निर्बन्ध, सर्वतंत्र- स्वतंत्र व्यक्तित्व के भरपूर प्रभाव पड़ल बा। फ्रांसिसी चिंतक आ विचारक बफन के मान्यता बा कि -"Style is the man himself- " माने कि जीवन -शैली मनुष्य के व्यक्तित्व के सीधे तौर पर अनुगामिनी होले ।मनुष्य एकरे जरिए अपना के अभिव्यक्त करेला। चंद्रेश्वर जी के कविता आ उनकरा काव्य- शैली पर उनकरा स्वतंत्रता आ समानता- कामी कवि -व्यक्तित्व के स्पष्ट छाप देखे के मिलत बा।अपना एगो कविता में ऊ कहत बाड़न-

"ई एगो अइसन समय रहे/जेवना में कई -कई गो कवि गन/ थोरिके असुविधा में पड़ते/चुपाई मार जात रहे/भा पूँछ हिलावे-डोलावे लागत रहे/जादा होखे त मोका पर बोलहीं के बेर/पगुराये लागत रहे/भोरहरिए से साँझ ले ।"(हरि गुन)

-कविता में पगुरइनी साँचो बड़ बाऊर बेमारी हऽ। समकालीन कवि पर समय के अइसनका दबाव बा कि ऊ कविता में 'पगुरइनीं' देखावत अपना कवि- धरम के ठीक से नइखे निबाह सकत। चंद्रेश्वर जी एक जगे एह 'पगुरइनीं' आ 'ठकुरसोहाती' बात बोले के हेय मानत खुल के कह रहल बाड़न -

"झूठे आवत बा आँकड़ा/टीवी न्यूज चौनलन प/अखबारो से सच अबध्दूर परा गइल/कवितो के हाल बेहाल बा बहुत/मैराथन में पाँव ओकर/साचहूँ लड़खड़ा गइल। ध्गोली चलल बहुते एनकाउंटर में/माफिया के मकान प/देखते देखत केस रेप के /बढ़िया गइल /गजबे ई आइल बा बखत/बखत प आपन तनिके में/चीन्हा गइल।" (गजबे ई आइल बा बखत)

-एह रचना में कवि एकसाथे कई-कई बातन पर से भरम आ छल के छिलका नोचत-हटावत ई साफ कह रहल बा कि विभिन्न संचार-माध्यमन के जरिए समाचार आ सूचनन के जवन ढेह लागल दिख रहल बा ओमें कवनों सच्चाई नइखे। ऊ सब झूठ के पोलिंदा बाड़े सँ। ओइसहीं धकाधक बिना गंभीर सोच आ संवेदना के जवन कविता लिखा रहल बाड़ी सँ आ कवि सब मैराथन में शामिल बाड़े ओकरा चलते कवितो के हाल बेहाल होत जा रहल बा। भोजपुरी समकालीन कवितो में जवन एकतरहीपन देखे के मिल रहल बा ओकर कारण छंदमुक्ति के नाजाइज फायदा उठावत अँवाट-बँवाट कुछऊ परोस के कइसहूँ लोकप्रसिद्ध हो जाये के विकल मनोकामना बा। कवि के एह 'मैराथन दौड़' के एगो कारण आज के समय में हो रहल लगातार सूचना के विष्फोटो हो सकत बा।सूचना के ई विस्फोट लगातार एतना तेजी से हो रहल बा कि ओकर सम्यक आ सघन प्रभाव कवि-मन पर पड़ल कठिन हो जात बा। विश्व के कवनों कोना में घटे वाली घटनन के जानकारी पल भर में सभका मिल जा रहल बा। एक जगह के कवनों घटना पर मनई जब ले कुछ गंभीरता से सोचो-समझो ताले ऊहू ले जादे हैरान करे वाली कवनों घटना दुआरे हाजिर हो जात बा। सूचना के एह रेलारेलियो के ई नतीजा बा कि कवि गंभीर सोच आ विचार के साथे अपना रचनन में उपस्थित नइखे हो पावत। चंद्रेश्वर जी आज के दौर के एह मजबूरी के बूझत-समुझत अपना रचनन में पर्याप्त विषय-वैविध्य ले आवे के प्रयास में बाड़न। ऊ अपना कविता के मामूली से मामूली बातन आ चीजन से जोड़ के चलल बाड़ें आ अपना अड़ोस-पड़ोस के लोग -बाग, देस-दुनिया, पशु-पक्षी, बेवहार, बेवस्था -सभके निरखत-परखत चलल बाड़ें। उनकर कहनाम बा-

"तोहार कविता में आवत बा/ बार-बार देस/ तोहरा चिंता में समाइल बा देस/ई पढ़ि-सुनि के अचरज होत बा.... तोहार बतकही में आ जाला/कबो-कबो देस/दुआर के धवरा बएल/बाबा के बड़का पितरिया लोटा/ लहरात टीकासन भरि के सोटा/ई सब देखि-सुनि के अचरज होत बा।' (तोहार कविता में)

- एजवा 'बाबा के पितरिया थरिया' आ 'दुआर के धवरा बएल' जइसनका प्रतीक लोक जीवन में सभ्यता-विमर्श के अइसनका सवाल खड़ा कर रहल बाड़े सँ जवना में परम्परागत जीवन -मूल्यन आ विरासत के संगिरहा के एगो बहुते सार्थक बहस भोजपुरी कविता में छिड़त दिख रहल बा।

जवना दौर में केहू आपनो तनिके में आपन स्वारथ लेके प्रकट हो जात बा आ जुरते लखा जात बा ओह

दौर में निराशा के धुँधुलका छाँटे खातिर कवि के सजगता काबिले गौर बा ।ओकर गोहार बा -

'कवि साँचो/शब्दन के संगत से/अब बनि जा पहरुआ/हो जा सावधान/एह समय के बहुते/ जरूरत बा/तोहार..।' (शिकायत पेटी)

कवि अपना एह गोहार के पहिले अपना एही रचना में एक जगहा सावधान करत कहले बा -'चूमत चाहे लऽ हाथ ऊहे/जवन सनाइल बा खून से/तोहार शब्द डूबल रहत बा/एहघरी चमचई के/गाढ़ चासनी में।' (शिकायत पेटी)

'शिकायत पेटी' कविता के अंत जवना तरे गोहार के रूप में भइल बा- ऊ आज के कविता के शिल्प आ कहन के तौर -तरीका के दिसाँई तनिका निराश करे वाला जरूर बा बाकिर कवि के मंगल कामना के ईमानदारी पर अचिको शंका नइखे कइल जा सकत। कविता के शुरुआती पंक्ति बाड़ी सँ- 'कवि, तोहार दिमाग/ खलिसा शिकायत पेटी तऽ/ ना हो सके।' स्पष्ट बा कि कविता के नकारात्मक चिंतन आ वर्णन से भरि के कवि खाली इहे नइखे बतावे के चाहत कि एह दुनिया में जवन कुछ बा -सब बाऊरे बा। ई सही बा कि हमनीं के जनतंत्रो आज जाति, धरम, संप्रदाय, नसल आदि में बुरा तरे बझल-फँसल दिख रहल बा। नेता अपना हिसाब से एह जनतंत्र के परिभाषा गढ़त जा रहल बाड़ें। समाज के बाँट के राखल आज अपना सत्ता के बरकरार राखे खातिर जरूरी समझल जाये लागल बा। हैरत वाली बात बा कि सत्ता के मायाजाल के समझला के बावजूदो आम जन ओकरा से टकराये खातिर तइयार नइखे। बाकिर कविता लगातार एह कोशिश में बिया कि प्रतिरोध आ संघर्ष के ऊ तेवर ओकर बनल रहे ताकि जेतने आ जवन कुछ नीमन आ जीवन के सुघर आ सुन्दर बनावे खातिर बाचल रह गइल बा ओकरा के कम- से- कम जरूर बचा लिआव। बाचल नीक के बचा लेबे के कोशिश में चंद्रेश्वर के कवितो खूब तत्पर दिखत बिया।

(५)

चंद्रेश्वर जी के कविता के कैनवास बहुत लमहर बा। एमें गाँव-जिरात, पशु-पक्षी, अन्न-पिसान, खेती-बारी,किसान-

मजदूर, सामाजिक कुपरंपरा, भ्रष्टाचार, विकास के नाम पर जमीन-हड़प, दारू के नशा में बिलात आ भटकत समाज, शहरी जीवन के दिखावा-आडम्बर, बाजारवाद आ कॉरपोरेटी कल्चर के चलते फइल रहल भौतिकतावादी संस्कृति, धार्मिक सहिष्णुता आ सामाजिक सद्भावना के तहस-नहस करेवाली ताकतन के लगातार मिल रहल समर्थन आदि एमें मजिगर ढंग से चित्रित भइल बा। बाकिर एह कविता-विरोधी समयो में जीवन में रचल -बसल कुछ राग, कुछ आग, कुछ मस्ती, कुछ संवेदना, कुछ संघर्ष आ कुछ स्पंदनो के चंद्रेश्वर जी अपना कविता में बखूबी उतरे आ जगह बनावे देले बाड़ें।

एह संग्रह के शीर्षक- कविता 'गोहार' एह संग्रह के सायिद सबसे लमहर कविता बिया। कवि एह दौर के सगरी विसंगतियन आ विडम्बना के झलकावत ई स्पष्ट करे के चाहत बा कि थोरिके भरोसा आ उम्मीद अभियो कविते के प्रति बाँचल बा काहे कि ई प्रतिरोध के स्वर बनला के साथे-साथ जीवन जीये के सलीके सिखावत लउक रहल बिया। एह कविता के कुछ पंक्ति विचारे जोग बाड़ी सँ -

"ऊ एगो कायर समय रहे/जेवना घरी/केवनो गुंडा के गुंडा कहे से/बचत रहे/शरीफ लोग/....झूठ के डंका बाजत रहे/देश-दुनिया में.....दागदार होखे से/ना डरत रहे केहू/अब ईहे सब तऽ/अलंकरन बाँचल रहे/सभ्य कहाये वाल/लोगन खातिर/नयकी सभ्यता में।' (गोहार)

-दागदार हो जाये के भय जहाँ ना रह गइल होखे, आदिमिये आदिमी के काट खाये खातिर बेताब हो गइल होखे, जिनगी में इयारी ना खाली बैर -भावने के बोलबाला बन गइल होखे, कायर समय में गुंडा के गुंडा कहे में लोग कतरात होखे, विचारवाने के जहाँ चऊपट-चपाट मान लेबे के मानसिकता मुनासिब बनल जात होखे, साँच सकुचाइल कोना में कतहूँ ठाढ़ होखे आ झूठे के चारू ओर डंका बाजत होखे- अइसनका अनैतिक आ अमानवीय समय में कविते पर सगरी आश टिकल बा- 'भरोसा आ उम्मीद जइसन/सुन्नर शब्द बाँचल रहि गइल रहन सँ /खलिसा कवियन के कविते में।'(गोहार)

-कविता के प्रति इहे भरोसा आ विश्वास कवि चंद्रेश्वर के एगो जिंदादिल आ दूरदर्शी कवि साबित कर रहल बा। कविता के प्रति कवि के ई भरोसा मनुष्यता के प्रति ओकरा अखंड आस्था के परिचायक बा। ऊ मनुष्य मनुष्य के बीच हर रिश्ता -नाता के जगवले-जोगवले रहे के चाहत बा। ऊ माई, बाप, भाई, मामा सभके संबोधित आपन नन्हबीतनी छोट-छोट बाकिर सुबुक-सुबुक कविता लिखले बा जवनन में संवेदना के धार देखे लायेक बा-

'ए माई ! दे किछु खाईं'/का दीं, लऽ ना खा हमार कपार।' (ए माई)

बस दू लाइन के एह कविता के पढ़िके माई के स्नेह-भरल खीझ तऽ प्रकट होइये जात बा साथही ई कपार खाये वाला मुहावरा आ जुमलो साकार हो जात बा जवन झालमूढ़ी खाये के दौरान कवनों महामानव ओह मूढ़ीवाला के संबोधित करत कहत बाड़ें। एजवा कपार खाये वाला काम ना ऊ मतारिये करत बिया ना ऊ मूढ़िये वाला करत बा। अचरज ई होत बा कि दिनरात बकबक करि के जे सभकर माथा खा रहल बा ,चाट रहल बा, ऊहे कहत बा कि 'कपार खाये के थोड़े माँगत बानी!'

'बाप रे बाप', ए भाई', 'ए मामा', 'ए हो', 'दोबरी दुख, 'जीए के ढब ना आइल' आदि अइसन कविता बाड़ी सँ जवन अपना लघुता में काफी मार्मिक आ मारको बने में सफल हो गइल बाड़ी सँ। चंद्रेश्वर जी के एगो संवादधरमी रचना बिया -'ए मामा'। छौ पाँति के ई कविता अपना सहजता आ अभिधात्मकते में अइसन एगो 'कम्प्लीट कविता' बिया जवना से गृहस्थ जीवन के जिम्मेवारी भरल बंधन के सौंदर्य मुखरित हो गइल बा-

'ए मामा!'/'का हो भगिना गामा !' काहे सूतल बाड़ऽ घामा ?'/बड़बड़ो मत तोरो बुझाई/जब पहिनेबे बियाह के ध्जोड़ा जामा।' (ए मामा)

-एह कविता में भोजपुरी अंचल में बियाह के लेके जवन सोच देखे-सुने के मिलेला, ओह से अलगा कवि के विचार नइखे। बिगड़ैल आ मनबढ़ू लइका लोग के 'नाथे' खातिर बियाह एगो कारगर तरीका भोजपुरी अंचल में मानल जाला जवना के जरिये लड़िका लोग सीधे बिना बहकले 'हराई' में बहे लागेलें।

चंद्रेश्वर जी के एह कवितन पर कविता के कुछ गंभीर आस्वादक सभे चुटकुलाबाजी के आरोप लगा सकत बा बाकिर हमरा तऽ एकनीं के खिलंदड़ापने में एगो खास तरे के जीवन-रस से भरल अनुभूतियन के जथारथ से जुड़ल अभिव्यक्ति साफ-साफ नजर आ रहल बिया ।

चंद्रेश्वर जी के कविता में गाँव-जवार, खेत-खरिहान, खेती-बारी आ किसानी जीवन के समस्यन के वास्तविक पहचान करि के ओह कारननो के बतावल गइल बा जवनन के चलते एकनीं पर संकट के बदरी घिरल जा रहल बा। कवि किसान के लगातार मटियामेट होत जा रहल जिनिगी के लेके बहुत चिंतित बा -

'अब किसान राजा ना/रंक के कतार में शामिल होई/जमीन से मिलल मुआवजा ओकरा/बेटा-बेटियन के शादी में खर्च होई/ऊ सरकारी इमदाद से ना/ओकरा खैरात पऽ जीही लोग/बाकिर ऊहो आखिर कब तक?' 'ऊहो आखिर कब तक के सवाल' - अइसन बा जवन एक ओरि स्थितियन के गंभीरता झलकावत बा तऽ दूसर ओरि ओह चुनौतियन से जूझे खातिर आगाहो करत बा।

सत्ता के पूंजीवादियन से गँठजोर किसानी जीवन में हलकानि ले आ देलेबा। बाजारवाद चसका-चसका अलगे जान मार रहल बा-

'भइया हो काढऽ काढ़ऽ काढ़ऽ करजा/मनावऽ रोज दिवाली/जरावऽ दियरी घीव के/अब नइखे जरूरत कि बचा के/पाई -पाई जमा करऽ बैंक में।' (ठाढ़ बा माथ के बल) दिखावा आ आडम्बर के पीछे संगिरहा के मानसिकता पर 'बाजारवाद' आपन आसन जमा लेले बा।

किसान के राजनीति आ पूंजीवाद के इयारी के कुफल एतना ले भोगे के पड़त बा कि कवि का कहे के पड़ल बा -

'उन्हुका जिनिगी के एगुड़े/मकसद हऽ/रोआइ -रोआइ मारल/ पदा-पदा रोआवल/तोहरा अस लोगन के/ढेर बढ़ि जाला प्रतिरोध तऽ/देशै के दरोही बतावेलन/ जुझारू लोगन के।' (अन्नदाता)

दिन-रात देह ठेठवला के बावजूदो किसान-मजदूर के ना माली हालत सुधर पावत बा ना सामाजिके न्याय मिल पावत बा।ई सब देखि के कवि कहीं -कहीं घोर निराशा में डूब जात बा -

'एह दुनिया में काम बा/जबूनके के/नीमनका के ना...आगे के छीनल थरिया/लूट लिहल गरीब के/छज्जा के/खपड़ो आ नरिया ऊ लोग से ना होखे/हमरा अब ई बुझाला कि/सच्चाई प ना/झूठे के थूनी प/टिकल बिया/ई सोगहग दुनिया।' (झूठ के थूनी प टिकल दुनिया)

चंद्रेश्वर जी के कविता के एह नकारात्मकतो में एगो सकारात्मक ध्वनि उभर के सामने आ रहल बा। बुझात बा जइसे कवनों रोगी आजिज आके आपन पाकल घाव के जुरते चिरवा लेबे खातिर तइयार हो गइल होखे।

(६)

अपना पहिलके भोजपुरी कविता संग्रह के जरिए चंद्रेश्वर जी भोजपुरी कविता के ओह दिशा के ओरि मोड़े के कोशिश कइले बाड़ें जवना चलते ऊ वैश्विक समस्यन से अपना आँखिन के चार करे लागत बिया।

पूरा विश्व आज तीसरका विश्वयुद्ध के मुहाना पर ढाढ़ बा। शासकन के अहंकार से भरल अगंभीर ढुरमुल आचरण से ई खतरा आउरो खतरनाक आ गंभीर बनल जा रहल बा। कवि एह खतरा से पूरा तरे वाकिफ बा। ओकर चिन्ता 'जइसे यूक्रेन अकेल बा','दहशतगर्द' आ 'बुद्ध बनल कठिन' -जइसन कवितन में खुलि के सामने आइल बा- जहवाँ युद्ध से मानवता के खतरा के दिसाँई सावधान करत बुद्ध के शांति आ अहिंसा के शिक्षा के विश्व मानवता खातिर संजीवनी बतावल गइल बा-

'जुद्ध कइल आसान बा/बुद्ध बनल कठिन। मरल मारल आसान बा जियल जिनगी कठिन।/.... ए घरी चुपाइल आसान बा ध्बोलल त बहुते कठिन ।'
(बुद्ध बनल कठिन)

- एजवा चंद्रेश्वर जी जवना 'चुप्पी' के बात कर रहल बाड़न ऊ तथाकथित भद्रजन लोग के अपना सुविधा-सुख-शांति में खलल ना पड़े देबे के लालसा के परिणाम बा। ऊ लोग कुछ बोल के कवनों झंझट मोल लेबे के नइखे चाहत। एही वर्ग में भारतीय बुद्धिजीवियो शामिल बाड़ें। दोसरका ओरि, विश्व स्तर पर विभिन्न देश के रहनुमाई करेवाला लोग के बकबकइनीं रोगो से पूरा दुनिया के कान अब पाक गइल बा।

एह संग्रह में चंद्रेश्वर जी के एगो कविता बिया जवना के शीर्षक बा -'बबुआ के लोरी'।ई लोरी खाली लोरी भर नइखे। बबुआ के हर तरे के बात बतावत दुनियादारी सिखावे वाली रचना बिया। एकर पाँतियन के देखल जा सकत बा -

'एकदम हलुवा मत बनऽ...../नरम चारा/ मत बनऽ/कि दलदल में ठाढ़/कंगन वाला बूढ़ा शेर के/ तराना कि फसाना/ मत सुनऽ।'

बबुआ के एतना बतावत-समुझावत कवि आउरो तनिका गझिन बात के ओरि इशारा कर देत बा - 'नदियने में नइखे भरल/खाली गाद/इंसानी दिलो में/भर गइल बा/गादे-गाद।' कवि आउरो बहुत कुछ सीख देत बा एह कवितामें बबुआ के, जवना बूते शहर गइला के बादो ऊ ठीक से आपन जिनगी गुजार सकस। इंसानी दिल में बइठल गादो (काल के प्रवाह में बटोराइल भावनात्मक गंदगी के ढेर) के सफाई एक दिन के काम नइखे। धीरे-धीरे मनई एह से मुक्ति पा सकत बा। लोरी के जरिए दिहल सीख बबुआ लोग का साथे-साथे आम मनइयो खातिर ओतने प्रेरणादायी बा।

एह संग्रह के एगो निठाह राजनीतिक कविता 'मोरे राजा' सामयिक व्यंग्य कविता के जबरदस्त नमूना बिया। एकरा पाँतिन के देखल जा सकत बा -

'एगो घेरलस महामारी/ई लाचार दुनिया सारी/ऊपर से जनि करऽ /बमबारी मोरे राजा हो/दिमाग फाटेला.....अबकी फाटल ढोल ना मँढ़ाई/लोगवा जानि गइल बा सच्चाई/मोरे राजा हो कि पह फाटेला/पूरब के आसमान से/अँजोर लउकेला/चरम प बा मँहगाई/चरमे प रोजगार के छीनाई/देशवा डूबल जात बा/साँचो डूबल जात बा/रसातल में/हे हो मोरे राजा जी !'

चंद्रेश्वर जी के भोजपुरी कवितन में कोरोनाकाल के मानवीय तबाही, व्यथा आ संघर्षो के पुरहर स्वर मिलल बा। ऊ प्रेम, दाम्पत्य, जीवन-मृत्यु आदि पर भी भोजपुरी में बहुते मार्मिक रचना कइले बाड़ें। एजवा अनुभूतियन के भावनात्मक आ वैचारिक आग्रह के बीच संतुलन बइठावे के भरपूर प्रयास भइल बा-

'प्यार हमरा खातिर/गुलामी ना रहे/आउर जरूरत से जादे आजादियो ना रहे.....हर मउसम के कइनीं जा मुकाबला/साथे लड़नी जा/साथे हँसनी -रोअनी जा/हर मोरचन पर।'(पियार)

-ऊपर के कविता में पियार के बारे में बतावत कवि जवना संतुलन के कायम रखे के कोशिश कइले बा ओही तरे के वैचारिकता ओकरा 'कतो एगो खिलल फूल' शीर्षक कवितो में देखे के मिलत बा। नारी -विमर्श के लेके भोजपुरियो में कइगो बहुचर्चित कविता- संग्रह आइल बाड़े सँ जवना के केन्द्र में नारी-जीवन बा। एजवा भोजपुरी में नारी-विमर्श के लिहाजन समकालीन भोजपेरी कविता के पोढ़पन के झलकावे वाली कृति- 'एगो मेहरारू' (महेन्द्र गोसाई) आ 'औरत जात' (मलयार्जुन) के उल्लेख कइल बहुत जरूरी बुझात बा। एह दूनू कविता- संग्रहन के कवितन में भोजपुरिहा क्षेत्र के नारी-जीवन के समस्या, पुरुष वर्चस्व वाला समाज से मुक्ति खातिर ओकर जारी संघर्ष आ धीरे-धीरे परिस्थितियन में आ रहल बदलाव के साफ तौर पर परखल-निरेखल जा सकत बा। चंद्रेश्वर जी के कविता में नारी -विमर्श के बात भोजपुरिहा समाज के हिसाब से बहुते स्वाभाविक रूप में आइल बा। ऊ जानत बाड़ें कि भोजपुरिहा समाज के नारी पुरुष से एगो सीमे तक आजादी चाहेली आ पुरुष के संघर्ष में डेग में डेग मिलावत चलेली। महिला आरक्षण आ आउरो केतना सरकारी योजना आ प्रयासनो के चलते नारियन में आर्थिक

स्वावलंबन आइल बा आ ओह लोग के सामाजिक प्रतिष्ठो बढ़ल बा। चंद्रेश्वर जी भोजपुरिहा नारी -जीवन के दुविध ाग्रस्त मानसिकता के उकेरत इहे बतावे के कोशिश कइले बाड़न कि भोजपुरिहा नारी दुविधो में अपना पति के साथ निभावे के भरपूर प्रयास करेली -

'जब से भइल बा तोहार संग/ना जिअते बानीं/ना मुअते बानीं/ना हँसते बानीं/ना रोअते बानीं/ना तोहरा के छोड़ते बनत बा/ना तोहरा संग रहते बनत बा/ तोहार किरिए/बियाहे के बाद जनलींधकि का होला तिरिया-जनम !' (कतो एगो खिलल फूल)

'बियाहे के बाद जनलीं/कि का होला तिरिया -जनम!'- एह बात में पूरा सच्चाई नइखे। साँच पूछीं तऽ आम भारतीय नारी आज जनमते विभेद, पीड़ा आ प्रताड़ना में जीये खातिर मजबूर हो जात बाड़ी। बियाह जिनिगी में एगो नया जतरा के शुरुआत जरूर होला औरत खातिर, बाकिर पुरुष प्रधान भोजपुरिहा समाज में मेहरारुन के दुरदसा के कहानी जनमते शुरु हो जाला। शिक्षा के प्रसार के साथे-साथे हालांकि रोजी-रोजगार आ घर के बहरी दुनिया में बड़हन सामाजिक बदलाव देखे के मिल रहल बा तबो औरत के आजादी आ बराबरी के सपना पूरा होखे में अभी देरी बा।सामाजिक बराबरी के चाह में नारी वर्ग के उग्रता कहीं-कहीं नया ढंग के समस्यो पैदा कर रहल बा तबो एह बदलाव के स्वागत होखे के चाहीं, काहे कि जुगन से पीड़ित नारी समाज के स्थितियन में आ रहल बदलाव समाज के आउरो गतिशील बनावे में कवनों-ना-कवनों रूप में सहायके बा।

(७)

हम पहिलहीं कह चुकल बानीं कि चंद्रेश्वर जी के कविता के पाट बहुत फइलल बा। हर तरे के संवेदना आ भावधारा के रचनन के जरिये कवि अपना पहिलके संग्रह से भोजपुरी समकालीन कविता के समृद्ध करे के हर संभव प्रयास कइले बाड़न। चंद्रेश्वर जी भोजपुरी कविता में हाथ-आजमाइश के पहिले भोजपुरी कथेतर गद्य -लेखन में आपन कमाल दिखा चुकल बाड़न। ओही से प्रेरित होके भोजपुरी कविता के दिसाँई उनकर जवन सृजनशीलता शुरू भइल बिया ओकर सराहना करत हम ईहो जोड़े के चाहब कि चंद्रेश्वर जी का भोजपुरी कविता लिखे के बेरा अपना सोच आ संवेदना के पूरा तरे भोजपुरिहा लोक समाज, लोक संस्कृति आउर लोक के आचरण आ बेवहार से जोड़ले रहे के चाहीं। अपना कविता 'सतुआ', 'केवना डाढ़ प कोइलर' आ 'झूठ के थूनी प टिकल दुनिया','अमरफल' आदि में कवि जहाँ लोक से अपना गहिर लगाव के परिचय देले बा ओजवा ओकर कविता भोजपुरिहा मन-मिजाज के जादे करीब बिया। हिन्दी में सोचल-समुझल अनुभूतियन आ भाव-विचारन के अभिव्यक्त करत बेरा अतिरिक्त सावधानी के जरूरत ओह हर कवियन खातिर बा जे हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में समानान्तर रूप से सक्रिय बा। एजवा हम इहो रेखांकित करे के चाहब कि लोक से लगाव के साथे-साथ भोजपुरी कविता का बीच-बीच में शहरी जीवनो का ओरि आपन नजर दउड़ावत रहे के पड़ी । आज ई एगो सच्चाई बा कि गाँव आ शहर के दूरी अब काफी कम गइल बा । गाँव आ शहर एक दोसरा में घुसिया के आपन-आपन असर एक दोसरा पर खूब छोड़ले बा। बाकिर तबो हम कहबि कि लाख विकास के बादो अभी बहुत कुछ अइसनका बा जवना के चलते गाँव अभियो गाँव बा आ शहर-शहर।

देश-दुनिया के गतिविधियन आ दोसर भारतीय भाषा में रचल जा रहल कवितन के देखत-पढ़त रहला से भोजपुरी कविता में विषयगत आ शिल्पगत आऊरी पोढ़पन आ ताजगिये आई-एमें दू राय नइखे। बाकिर सही रही कि लोक के आलोक में भोजपुरी कविता इतर भारतीय भाषा में हो रहल प्रयोगन आ सोच-विचार के स्तर पर पावल जायेवाला खुलापन के अपनावत लगातार डेगारे बढ़त चले । चंद्रेश्वर जी के कविता संग्रह 'गोहार' के एह दिशा में एगो महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखत हम उनकरा भोजपुरी कवि के खुशी के साथ स्वागत कर रहल बानीं। चंद्रेश्वर जी अपना एगो कविता 'अमरफल' में कुछ एही तरे के विचार रखले बाड़न कि लोक के पीड़ा, पुलक आ मरम से गँठजोर करिये के कवनों कवि श्रेष्ठ सिरिजना परोस सकत बा -

'दुनिया के बड़हन -बड़हन/कवियन के कविता में/ समाइल बा जेवन जादू ई एकरे त कमाल हऽ/चाहे भाव होखे भा भाषा/भा कहन के अंदाज/सबमें ईहे छवले रहेला/ अमरफल के मिठास बनि के।' हमरा भरोसा बा- चंद्रेश्वर जी के आगे आवे वाली कवितन में भोजपुरी लोकजीवन के ई 'अमरफल' मिठास के साथे-साथे ओकरा धड़कन आ स्पंदनो के स्वर देत, हर तरे के सवाद आ सौन्दर्य से परिपूरन करत भोजपुरी कविता के घर-अँगना के गुलजार राखी।

कृष्णानन्द कृष्ण के कहानीः लीखि से अलगा चले के कोशिश

✍ अशोक द्विवेदी

समकालीन भोजपुरी कहानी बदलत समय का साथे- बदलल परिवेश, व्यवस्था आ बदलल सोच के कहानी हऽ। आजादी का चालीस साल बाद के मोहभंग, आदमी के खंडित आस्था, क्षोभ आ खीसि से भरल ओकर कुहुँरल आ ओकरा भीतरी-बाहरी लड़ाई के, ओकरा सरोकारन का साथे कभी प्रतिबद्ध होके आ कभी संवेदना का स्तर पर उकेरे आ उरेहे में भोजपुरी कहानीकार दोसरा भषन के कहानीकारन ले ओनइस नइखन। समाज के निचिला तवका आ विशेष रूप से मध्यवर्ग के निचिला तबका के अंदरूनी हालत, तल्खी, घुटन, अवसाद, संघर्ष आ पीर के ओकरा मय हालात-खेयलात के साथे चित्रित कइल समकालीन भोजपुरी कथाकार के खासियत बा।

समकालीन कहानी के साहित्यिक रूप में ऊँचाई पर ले जाए वाला लोगन में जवन नाँव शुमार होइहें स, ओम्में कृष्णानन्द कृष्ण के नाँव खुरूचलो पर मेटकावे जोग नइखे। अपना पहिल कहानी संग्रह "एह देस में" (1975) का जरिये भोजपुरी कथा-जगत में आपन्न पहिचान बनावे वाला एह कहानीकार के समकालीन भोजपुरी के प्रतिनिधि कथाकार मानल जाई। इनकर दोसर कहानी-संग्रह "रावन अबहीं मरल नइखे" (1988) में छपल, बाकि अपना कथालेखन का एह दस साला सफर में, भोजपुरी कहानी के बीने बरावे, सरियावे आ अपना सिरजन क्षमता से ओके समरथ करे में कृष्णानंद कृष्ण के जीवट आ रचनात्मक देन इयाद कइल जाई।

"एह देस में" कथा-संग्रह पढ़े जोग बा। समाजिक असुरक्षा, अन्हार भविष्य आ खोंखर-खदविदार वर्तमान के भीतर ले अनुभव करत आदमी के - चिन्ता-फिकिर, बेचैनी, आक्रोश आ घृणा के उजागर करे में एह कथाकार के महारत हासिल बा। देश-काल का मोताबिक परिवेश के जियतार चित्र खींचे में, ऊ कहीं बिचिला वर्गं के निचला तबका के मनोदशा आ सोच के उद्घाटित करत बा, कहीं घोर निराशा का गर्त में डूबल इंसान का आँखी आस के किरिन झलकावत बा, कहीं जनवादी तेवर के प्रवक्ता हो जात वा। आजादी आ लोकतंत्र का विद्रूप असलियत के खोलत हतास, आरत, दुखी आ पगलाइल आदमी का साथ, जुलुम आ शोषण के प्रतिकार करत आदमी के जथानुरूप तस्वीर पेश करत कृष्णानंद कृष्ण केहू ना केहू तरे भोजपुरी कहानी के नया रूप, नया अंदाज देबे के कोसिस कइले बाड़न। दरसल हिन्दी के "नई कहानी" का साथे भोजपुरी कहानी के खाड़ करे के लगन आ चिन्ता उनका के नया थीम आ नया चरित्र गढ़े के प्रेरित कइलस।

मझिला वर्ग के खोंखरपन, स्वारथ, हिरिस आ मोहभंग का पीरा के गहिरे उभारे में कृष्णानन्द कृष्ण अधिका सफल भइल बाड़न बाकिर जहाँ ऊ जनवादी तेवर में कहानी लिखे के कोसिस कइले बड़न ओइजा उनकर कहानीकार सिद्धांत, भाषन आ रोमैण्टिक विद्रोह के अझुरा में अझुरा जाता। सोद्देश्य कहानी लिखला में एकाध जगह कहानी उनका पकड़ से छुटला लेखा लाग तिया। बेरोजगारी, ईमानदारी, कामचोरई, नेतागिरी, महंगाई, भ्रष्टाचार आ प्रबंध वर्ग के साजिश आ छल-परपंच कूल्हि के बेपर्द करत लेखक का रूप में उभरला का अलावे परिवार के अंदरूनी असलियत आ विद्रूप पीड़ा के गहिर मर्म स्पर्शी उरेह उनका कहानी के ऊँचाई पर ले जाता।

"राहत का तलाश में" कहानी के फइलाव (कनवास) आफिस से लेके फटेहाल

दुर्दशाग्रस्त घर ले बा। एकरा बिच्चे एगो असन्तुष्ट आ असहाय ईमानदार क्लर्क के टुटही साइकिल बिया - जेवत पूरा समाजिक दायरा के समेटत, खस्ताहाल परिवार के दमघोंटू अन्हार में ढुकि जा तिया । बेवस्था, तंगहाली आ बेमारी से जूझत कम वेतन वाला बाबू राहते खोजत रहि जाता । डेली रोटीन के सपाट वर्णन में 'डायरी शैली' के प्रयोग से कहानीकार कहानी सोझा ले आवत बा । 'एह देस में' शीर्षक कहानी बेरोजगारी आ घर का डोमघउँच से तंग एगो नवहा के भटकाव के कहानी बा। रुपया का लालच में जरायमपेशा अख्तियार करे वाला एह युवक का भीतर एगो अंतः संघर्ष छिड़त बा बाकि आदर्शवादी खोंखरपन के असलियत से पस्त ऊ अपना बुरे राह के सही ठहरावे के कोसिस करत बा । ओकर कहनाम बा 'भला एह सैतानन का झुंड में एक अदद आदमी के का होई अच्छा बा कि शैताने बनि के जीयल जाव।' एसे आजादी का बाद के अवमूल्यन के विसंगति सोझा आ जात बिया । 'सुदिन का इंतजारी में' कहानी कारखाना के वातावरण से सुरू होत बिया । घर में बेमार बिलखत मेहर आ लरिकन के छोड़ि के, बेक्स्था आ दोगला यूनियन लीडरन क खीसि दारू में डुबावे के कोसिस करे वाला मजूर सुदिन के काल्पनिक लोक में इंतजार करत बा । एह वर्णनात्मक कहानी में ट्रेडयूनियन आ नेतागिरी पर विद्रूप व्यंग उभारे के कोसिस जरूर बा भषो जानदार आ चरित्रन के मोताबिक बा बाकिर इ कहानी विशेष छाप नइखे छोड़त ।

'गेट का बाहर' एगो आदर्श, भावना प्रधान कहानी बा । एमें सामंती मिजाज के खोंखर बड़प्पन, ठसक आ गरुर का साथे बालसुभाव के मनोवैज्ञानिक उरेह बा । भावना का ताना-बाना में गूँथल एकरा संवादन में, एकोर ऊँच आ उदात्त मानवी रूप बा त दोसरा ओरी झुठिहा गरब, अईंठन आ अमानवी व्यवहार बा । एह कहानी के अंत नाटकीय आ सार्थक बा- ओसे मानवी स्वाभिमान आ ममत्व के मिलल-जुलल करूणामय संवेदना उपजति वा । 'पह फाटे का पहिले' कहानी में नाटकीयता, प्रतीक आ फ्लैशबैक के सुधर संयोजन वा । रचाव का दिसाई इ मजबूत बा । एमे बेमारी में जीवन-मृत्यु का बीचे झूलत एगो सूदखोर बाप के हृदयहीन अमानवी रूप के 'फ्लैशबैक' (स्मृति-चित्र) का जरिये उभारल जाता । ओकरा कारुणिक असहाय अंत के कथाकार प्रतीकात्मक ढंग से देखावे के कोशिश कइले बा । "कायर" पलायन से वापस लवटत एगो हताश युवक के के कहानी बिया, जवन एकाग्र चिन्तन में स्वपन-कथा लेखा बखुद कहल जा रहल बा । आत्महत्या के कोशिश में जेल का भीतर आइल, एह युवक के मानसिक हताशा से उबारत (सबेरे) एगो रोशनी के गोला उभरत बा, जवन कहानी के संभावना मूलक बना देत बा । शिल्प का दिसाई ई दुनो कहानी नया बाड़ी सन ।

कृष्णानन्द कृष्ण के कहानियन में मानवता के दिनोंदिन गिरत स्तर, नकली मूल्य आ जिनगी के कड़ुवा खुरदुरा सचाइयन से जूझत टूटत-बिखरत चरित्रन के सिरजन भइल बा । थोथा आदर्श आ स्वार्थी राजनीति से जनता के मोहभंग, ओकर दुख भरल असहाय स्थिति आ गुरमुसाइल खीसि के जियत जागत तस्वीर एह कहानियन के मूलभूत विशेषता बा । "रावन अबहीं मरल नइखे" में सामन्ती

अत्याचार से पीड़ित, दाबल लतियावल लोगन का सोच में विद्रोही बदलाव के चिन्हा बा । कहानी का कथ में उहे मसाला बा-परबतिया का जवान सुधराई पर लार टपकावत ठाकुर आ ओकरा भाई मुनेसरा के मुखर विरोध । हिन्दी-भोजपुरी के कईकहानी आ नया पुराना कई गो फिल्मन में ई 'थीम' मिल जाई बाकि 'थीम' में रावन के जरवला के प्रतीक जोरि के कहानिकार नया दिशा देवे के कोशिश कइले बा- सामंती शोषण, लूट खसोट आ जोर जुलुम के अनेकन खिस्सा कहल जा रहल बा बाकि कृष्णानन्द के अंदाज आ बयान में, भाषा के सोभाव सहज, मौलिक आ मुहावरन के चमक से लैस बा । यथार्थ के खोलिके, विसंगतियन के कारनन के सोझा लिया दिल आ कथ के दिशा दे दिहल कहानीकार के मूलश खासियत बा । 'कीरतन' कहानी लगभग एही 'थीम' पर रचल गइल बा । धरम का वालन के कब्जा कइला ओकरा नेतृत्व में कइल आड़ में लूटखसोट आ जनता का जमीन पर सामंती मिजाज का खिलाफ, सुरुजा के जनजागरण आ निचिला वर्ग के, विरोध, जनवादी दर्शन के मोताबिक बा । बाकि "इन्तजारी में सामंती परिवेश के घिनौना कामुक चेहरा, जोम आ कुकर्म के बेपरद करत खा कथाकार रोचक नाटकीयता आ किस्सागोई के सहारा लेले बा । ओमे एक साथ कई गो चरित्रन के मौलिक रूप में उरेहे के प्रयास बा । अपना गझिन बुनावट में ई कहानी रूखर आ तिक्खर यथार्थ का चोट से, दिमागी संतुलन बिगड़ला के एगो तस्वोर नगीना का रूप में पेश करत बात-धनवृद्धि, अधिकार आ पद का बढ़न्ती से दोसरका मानसिक संतुलन बिगड़ला के तस्वीर मंगल सिंह का रूप में चित्रित करत बा। शुरू में ई दुनो चरित्र एक दुसरा के पूरक बाड़न स । एगो के खेत बारी वा आ दोसरा के ईमानदार मेहनत । ठकुराइन के नेह-सहानुभूति आ सहजोग मेहनतकश का प्रति बा । नतीजतन मंगलसिंह का घरे लक्ष्मी गोड़ तुरि के बइठ जात बाड़ी फेर परधान के पदो मिल जाता । अइसना में,

गलत लोग, बदमाश, चापलुस आ हाकिम हुक्काम से घेराइल मंगल सिंह धनबल का जोम में दिमागी संतुलन गँवा देत वा । ऊ वासना के घिनौना हिरिस में आपन - आन ले नइखे चीन्हत आ आखिर अपने बिरादरी का लोगन से मरा जात बा । नगीना जनता के एगो बर्ग के प्रतिनिधि बा, मंगलसिंह का प्रति ओकर खंडित आस्था, बेवस्था से ओकर मोहभंग आ अपनन का विश्वासघात कइला आ ओकर प्रतिकार ना क पवला से ऊ पागल हो जाता । एह पागलपन में मलकिनिया का प्रति ओकर सहानुभूति नइखे जात ।

ऊ बहशी आ क्रूर नइखे बनत, बलुक घर में कैद बेवस आ असहाय मालकिन के दुर्दशा से मर्माहत होत बा । भाषिक रचाव, नाटकीयता आ संश्लिष्ट संवेदना से भरल एह भावप्रधान मरम छवे वाली कहानी के अंतो व्यंगात्मक कथन (आइरानिकल स्टेटमेन्ट) से होत बा - 'पता ना कब मालिक चुपे लवटस आ ऊना देख पावे कि समाजवाद कइसन होला ।' ई कथन वर्गीय खाई आ परस्पर विरोध के एकदमे उजागर क देता ।

'षडयंत्र' मिल मजदूरन क एगो अइसन जोरदार कहानी बा जवन 'सुदिन का इंतजारी में' के कमी पूरा करत बिया । परिवेश के सही आ सोभाविक चित्र उरेहत कथाकार कारखानन का भितर फइलल चापलूसी, अराजकता, कामचोरई का बीचे एगो कर्मठ आ ईमानदार मजदूर के क्षोभ आ आत्मसंघर्ष देखावल बा । मजदूर वर्ग के लड़ाई आ प्रबंध तंत्र के छल परपंच आ कुटिल कतरब्योंत से ऊ निष्ठावान मजदूर त बहरियावले जाता -सही मजदूरन के छिन्न- भिन्न कइल जाता । एह कहानी में जनवादी भाषणबाजी आ ओढ़ल क्रांतिकारिता नइखे, बलुक एगो प्रतिबद्ध क्रियात्मकता देखे के मिलत बा । ई कहानी दिल-दिमाग में खलल पैदा करऽतिया

"दरकत देवाल" एकालाप का ताना-बाना में बुनल, निम्न मध्य वर्गी परिवार के स्वार्थी चरित्र आ ओकरा अवसादपूर्ण असहायता के कहानी बा । संख्या नियर पढल लिखल लड़की, नियति का पंजा मानसी उदवेग आ आक्रोश के मुखर नइखे क पावत । घर का खस्ताहाल आ बूढ़ मतारी के असहाय स्थिति से ऊ मजबूर बिया । एगो बात खटकता। एह कहानी के रचाव कथ के सहजे संप्रेषण नइखे क पावत; 'कथ' अझुरा के रहि जाता । "सवाल" अजनबियन आ निजीपन से घेराइल अदिमी के असुरक्षित आ बाजिब सवालन से आँखि चोरावत ओकर। बेचैन असहाय स्थिति के उजागर करे वाली कहानी बिया। शहरी हो गइल गँवई शहरी हो गइल गँवई युवक खातिर गाँव परदेश हो गइल बा आ गाँवन के नया जमाना के राहु गरस लेले बा । आपसी मेल-मुहब्बत आ खुलापन खतम बा आ बोह माहौल में रिटायर बूढ़ बाप सेयान लड़की के बियाह आ छोट लइका के पढ़ाई का फिकिरी दुखी वा । कमासुत पूत, अपना निजी दायरा में सिकुरल गाँव-घर- आई-वहिन समका खातिर पराया हो गइल बा । ओकरा भीतर परिवार के लेके टीस त उमरल वा बाकि के कुछ कड़ना पवला के अवसाद ढो रहल बा ।

'बड़की चाची' सझिया (साझ) परिवार के भीतरी समस्या आ सचाइयन के जियतार रूप में उभारत बा। परिवारिक यथार्थ आ पीड़ा के ई एगो सशक्त कहानी बिया। अइसन लागऽता जइसे 'नैरेटर' कथाकार खुद ए कहानी के जियले बा। ऊ अपना बीतल जिनगी के परत दर परत उघरले चलत जात बा आ

पाठक के जिज्ञासु सहानभूति ओकरा बयान के साथे जोराइल चलल जात बा । बड़की चाची के रेखाचित्र घींचत खा अनासो, माई- बाबू, बड़ भाई भउजाई के चरित्र चित्रण होत चलि गइल बा । संबाद के मोका कम आइल बा बाकि जहाँ आइल बा - बहुत सजीव आ मरमभेदी बा । कमासुत पूत से गँवई परिवार के रिश्ता खाली रुपये ले बा । एह औपचारिक अलगाव बाला संवेदना के महसूस करे वाला पात्र के; नाटकीय रूप में 'बड़की चाची' के 'गंगा-लाभ' के खबर भीतर ले हिला देत बा । मानवी करूणा आ अवसाद के एम्मे सफल अभिव्यक्ति भइल बा ।

समस्या आ जरत सवालन के- ओकरा विसंगतियन आ व्यंग (आइरनी) सहित उभारे में कृष्णानन्द के पात्र सफल बाड़न सऽ । कई जगह मुख्य पात्र खुद कथाकारे बा। 'हम' के ई नया शैली, नई कहानी के हऽ। आवृत्ति दोष, संरचना के बिखराव आ बनावटी थीम देके कसल गइल फालतू आदर्श भा नकली पक्षधरता के भाषण वाली कहानियन के संख्या बहुत कम बा। अधिकतर कहानी सामयिक सार्थक आ प्रभाव पैदा करे वाली बाड़ी सन। उन्हनी में भाषा के वाजिब इस्तेमाल बा- जरूरत का मोताबिक बनाव-सिंगार आ प्रभाव खातिर, मुहावरन आ प्रतीकन के प्रयोग का साथे चित्रात्मकता बा । भाषा के कहानी का माँग का मोताबिक उरेहला में कृष्णानन्द कबो शहरी भोजपुरी, कवो गँवई भोजपुरी कबो अभिजात वर्ग आ कबो मजूरन के भाषा प्रयोग करत बाड़न । अनेक स्तर पर अपना तेवर आ मिजाज के बदलत एह भाषा के कहीं काव्यात्मक आ कहीं चिन्तन प्रधान गद्य का भाषा के रूप में देखल जा सकेला । साँच पूँछी त कृष्णानन्द में लीखि से अलगा लिखे आ कहे के कोशिश बा, जवन उनका के समकालीन कथाकारन से, अलग दरजा में स्थापित करत बा । अलग दरजा में स्थापित करत बा ।

अशोक द्विवेदी

(एक)

कुछ कहल ना त कुछ सुनल हमसे
रंज बा उनका आजकल हमसे

कुछ कहल उनका जतना बा मुश्किल
ओसे अधिका बा चुप रहल हमसे

सच कहस कइसे भरल महफिल में
राह उनका नया, मिलल हमसे

आपुसी बात ना देखउवल ना
राह रून्हल रहे खुलल हमसे

बा जमाना का शिकाइत हमसे
ना बनल पाछा चुप चलल हमसे

बाद हमरा बुला चरचा होई
शायरी अउर कुछ निखरल हमसे

(दू)

छोट घर-बार में हमहन क, अब समाव कहाँ
नेह ऊ बा कहाँ अपनन में, ऊ लगाव कहाँ

जीउ टेघरे लगे गैरन के लोर चुवला पर
अब भला गाँव के लैनू नियर सुभाव कहाँ

बा खनक दाम के, अइँठन बा कुछ कमइला के
यार पहिले नियर उ भाव आ अभाव कहाँ

अपना छाँहाँ में बसा लेव जे दुखियारन के
अब का छुदुरन में भला दिल के ऊ दरियाव कहाँ

उ धधाइल, धइल आ जोग-छेम पूछ लिहल
हो गइल कहनी, सुने वालन में उ चाव कहाँ!

(तीन)

नइखे हमरा में बहुते कुछ, नाहीं पुरहर तोहरा में।
मिल के आवऽ घुल जाईं जा हमनी का एकदुसरा में।

रहे सलामत सबकर खोंता, चिरइन से चहके बगिया
कहल करे सब आपन आपन मत अझुराईं पचरा में।

गुरमुसाइ के भितरे भीतर उसिनइला से का पाइब
भुलवाईं अमनष, इरिखा उड़िया दीं कल्मस कचरा में।

बँटला से ना कबो बँटाई माई-बाबू के ममता
मुश्किल बाँटल नेह-नात तब, का बा बाँट-बटखरा में।

नइखे केहू पूरा पूरा, हमहूँ त अधजल गगरी
नरम मिजाज रखब त हमहूँ आइब रउरे बखरा में।

- बी.1/906, त्रिदेव अपार्टमेन्ठ सामनेघाट, वाराणसी-5

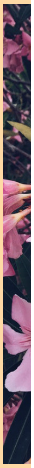

(चार)

चढावत समय बा गिरावत समय बा।
इहाँ रोज सबके नचावत समय बा।

बहाना बा हमके फँसावे के कतहूँ
धसोरत बा केहू बचावत समय बा।

हँसे के भले ना रहे कौनो कारन
हँसत बा जमाना, हँसावत समय बा।

हवेली कहीं भा चउतरा मकबरा
बनवले बा केहू मिटावत समय बा।

समय के पछाड़े में भुइयाँ गिरल बा।
मुरुख आदमी के रिगावत समय बा।

चलन्ती में ऊ देश दुनिया चरवलें
भइल बाड़े लुगरी बतावत समय बा।

नीरज सिंह

सावन आवे द

बहुत गरम बा का बतिआईं सावन आवे द
बेमतलब कतना घबराईं सावन आवे द ।।

तपत दुपहरी घर में उखम सकदम प्राण भइल
गूंज रहल सगरी अमराई सावन आवे द ।।

कबहूँ एने कबहूँ ओने भटकेला बदरा
असहीं कहिया ले तरसाई? सावन आवे द ।।

गड़ही सूखल पोखरो सूखल कुइओं सूख गइल
जे-जे सूखल सब सरसाई सावन आवे द ।।

मौसम बदले के असरा में जिनगी ठहरल बा
पता न कब पटरी पर आई सावन आवे द ।।

महमह महकल महुआ पहिले लीची आम अभी
मातल जगती कजरी गाई सावन आवे द ।।

चढ़त असाढ़े बरखा बरखी धरती चहक उठी
खेतिहर के मनवा हरिआई सावन आवे द।।

बहुत गरम बा का बतियाईं सावन आवे द
बेमतलब कतना घबराईं सावन आवे द ।।

-वीर कुंवर सिंह नगर, कतिरा, आरा,
बिहार - 802301- मो. 9431685639

कबित-समय

शिलीमुख

(एक) नवजुग के बुधिगर

उबिछल हो जइसे गड़हिया क पानी
हम त चिहाइ गइनी
सुनि ओछ बानी।

ढेर दूर गाँव नइखे राउर
इहाँ से
छीछिल बिचार-बोल
सिखलीं कहाँ से
गँउवो जवरवा के
का नासऽ तानी।

भेद भाव अतना कि
मन गुरमुसा जाव
भितरी के मइला
सड़क पर ले आ जाव
बुधिगर होइयो के
का करत बानी।

पोंछिटा खुलल बाकि
छाती उतान बा
देखि राउर छरकल
जमाना हरान बा
जोम भरल उमगल ई
कइसन जवानी।

पीढ़ा दे ऊँच हम
आपन बनवनी
रउआ त हमरे के
हेठा देखवनी
चिन्हलीं ना गिरगिट के
हमरे नदानी।

रउरो के समय कबो
नीचे धसोरी
रउरा के, रउरे मन
भितरे खँखोरी
कहियो तऽ लोग
बदी-नेकी के जानी।

(दू) हम का बानी

राउर बोली राउर बानी
रोज बनेले चटक कहानी
रउआ आगा
हम का बानी।

गजरघँइंठ अस अइंठ कड़ा बा
पइठ गहिर आ पहुँच बड़ा बा
नँउवें राउर सोनजड़ा बा
बुधि बल बेंवत अछइत हम त
मुँहदुब्बर जस किकुरल बानी।
हम का बानी।

हिन्दी में ढकचीं अँगरेजी
चीनी में पगुराईं
उर्दू के फ्लेवर डालीं आ
भोजपुरी चभुलाईं
जेतना उप्पर छउँकत बानी
दुगुना नीचा लुढुकत बानी।
रउरा आगा हम का बानी।।

सब ढकेलाई हेठा, खाला
आई गर में रउरे माला
रउरे तसला डभकी चाउर
मंचासीन ऊँच पर राउर
घाघ नियर घड़ियार पटाइल
पानी के सबले बड़ ग्यानी।
रउरा आगा हम का बानी।।

कबित-समय

शिलीमुख

(तीन) दोहा लेखा कुछ

तुलसी ना बन्हले कबों आपन कवनो गोल
कहले कहाँ कबीर, तूँ पीटऽ फुटहा ढोल।

ब्यर्थ ठकुरई, मान, जस, ब्यर्थ हाड़ आ चाम
भल होखे भाखा-भनिति, भल हो सभकर काम।

भरल रहे सन्तोख धन, रहें सहायक राम
लगल रहे मन कर्म में, अतने में सुखधाम।

जाति बरग में बाँटि के, कुटिल करी जब राज
केहू के कल्यान ना बाँटी सकल समाज।

सकल देश में बैद बनि, बँटलस पियरी रोग
तप के ताप रुचे कहाँ, शठ भावे हठजोग।

इरिखा डाह भरल हिया, कुटिल शकुनि के चाल
खेदि हंस दुनिया लखे काग गरे जयमाल।

कुमति कुराग कुसंग के उपटल कइसन राग
बेसहि रार, हुलुकाइ के घरे लगावे आग।

सन्त भेख करनी उलट मरिच मृगा के चाल
उड़ी धरा से अमिय जल, सूखी सरवर ताल।

सोना के लंका जरल, छिटा गइल धन धाम
रार बेसहले राम से, बद करनी बद नाम।

फूटी घइली पाप के, जुरी क कतहूँ ठाँव
उड़ि जाई सब छार बनि, लिही न केहू नाँव।

(चार) कुपदी

हम सिधवा अनगढ़पुर बासी।
जवन मिले ओही में तिरपित
टटका ना, भलहीं हो बासी।

ऊ महराज बिकट बैपारी
खन कीनें खन बेचें
हम अँजोर के मुँह ना देखीं
खाली उनका पेंचे
गेंडुली मरले छेंकले रहिहें ऊ अँजोर-धनरासी।

सुखला सावन भरला भादों
जवनो चना-चबेना
माया से उनका सरेहि में
कुछऊ कहीं बचे ना
माथ काट के बार क चिन्ता
उनकर बनल चिन्हासी।

उगिलें ऊ दिन रात प्रवंचन
सभे बइठि के घोखे
बिजुली बत्ती, ए सी, हीटर
सरद-गरम ना होखे
देखि छहन्तर नट-नौटंकी
आवे हमरा हाँसी।

खोजि-खोजि के रोज बहेंतुआ
कोल्हुवड़-गूर खियावें
सिखा-पढ़ा, चूरन चटाइ के
उनहन के सहकावें
ना जानसु, ऊहे एकदिन बनिहें सऽ
गर के फाँसी।

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 111-12 अगस्त 2026

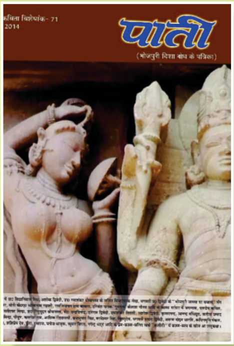

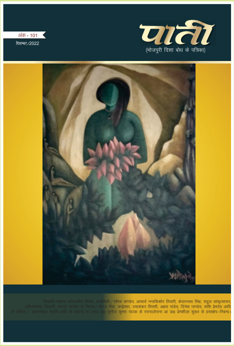

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।